लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–8

चौदह सौ कौड़ियाँ

अबायोमी फूजा

1962

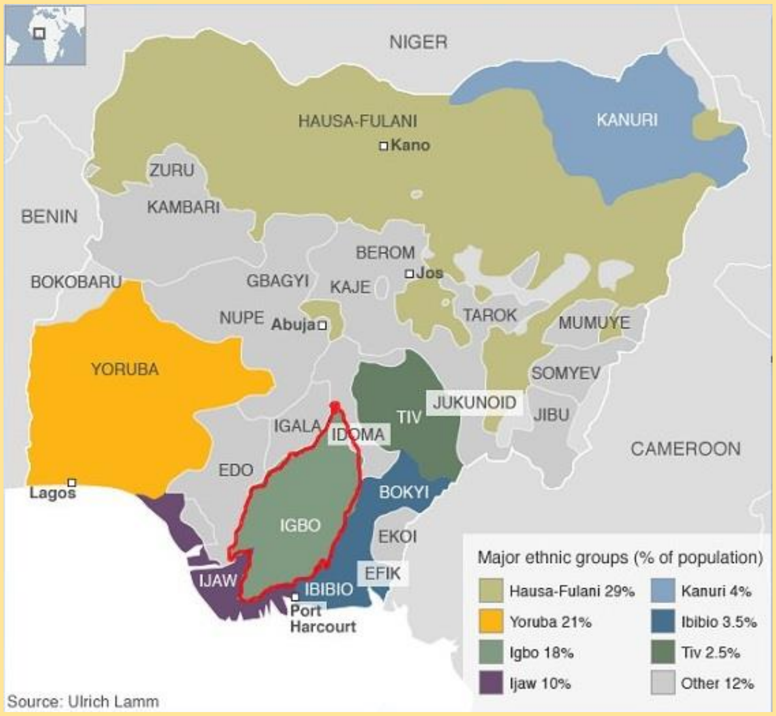
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustken Series–8
Book Title: Chaudah Sau Kaudiyan (Fourteen Hundred Cowries)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Nigeria



विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

चौदह सौ कौड़ियॉ 7

1 चौदह सौ कौड़ियॉ 9

2 कछुए और बिल्ले की कुश्ती 11

3 चीता और साही 16

4 एक सुन्दर लड़की और मछली 20

5 एक टैडपोल की दुखभरी कहानी 27

6 एक लड़का और याम का टुकड़ा 31

7 ओनी और एक बड़ी चिड़िया 36

8 हयीना की मॉ का दफ़न 47

9 बलि को स्वर्ग भेजना 51

10 घोंघा और चीता 54

11 कछुए की बलि क्यों दी जाती है 59

12 मोटिनू और बन्दर 67

13 जुड़वॉ बच्चे 76

14 मुर्गी और बाज़ 103

15 ईगा चिड़िया और उसके बच्चे 106

16 हाथी और मुर्गा 110

17 एक शिकारी और एक हिरनी 115

18 ओनीयेये और राजा ओलूडोटुन की बेटी 122

19 किन किन और बिल्ला 129

20 जंगल के राजा का दफ़न 136

21 अहोरो और उसकी पत्नी ऐटीपा 143

22 एक बेसहारा लड़का और उसकी जादुई डंडियॉ 144

23 टिनटिन्यिन और भूतों की दुनियॉ का राजा 170

24 अक्लमन्द कुत्ता 176

25 एक लकड़ी का चमचा और एक कोड़ा 185

26 बाज़ कभी चोरी क्यों नहीं करता 192
27 एक बैल और मक्खी 199
28 ओलूसेग्वे 202
29 अजनबी और यात्री 221
30 शिकारी और उसकी करामाती बाँसुरी 227
31 ओलोबुन की भेंट 235

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

चौदह सौ कौड़ियाँ

एशिया के बाद अफ्रीका ही संसार में दूसरे नम्बर का महाद्वीप है जनसंख्या में भी और क्षेत्रफल में भी। नाइजीरिया अफ्रीका के पश्चिमी तट पर दक्षिण की ओर स्थित है। यह अफ्रीका का सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है। इसकी जनसंख्या इस समय लगभग 200 मिलियन है। इसकी जनता भी बहुत भिन्न प्रकार की है।

अफ्रीका में केवल 2–4 देशों का ही साहित्य प्रकाशित रूप में मिलता है जैसे नाइजीरिया, मिश्र, दक्षिण अफ्रीका, तनज़ानिया आदि इसलिये जहाँ भी हमें अफ्रीका की लोक कथाऐं दिखायी देती हैं हम उनका हिन्दी अनुवाद कर लेते हैं। इससे पहले हमने अफ्रीका के तनज़ानिया देश के ज़ंज़ीबार द्वीप की लोक कथाओं की एक पुस्तक प्रकाशित की थी।[2] उसके बाद हमने अफ्रीका की लोक कथाओं की एक और पुस्तक प्रकाशित की थी जो दक्षिण अफ्रीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति नेलसन मन्डेला की सम्पादित की हुई थी।[3] आशा है दोनों पुस्तकें आप सबको बहुत पसन्द आयी होगी। उन दोनों पुस्तकों ने आपको कम से कम थोड़ा सा तो यह सोचने पर विवश किया होगा कि वहाँ के लोग आपस में किस तरह की कथाऐं कहते सुनते हैं।

अफ्रीका की अब यह तीसरी पुस्तक आपके हाथों में प्रस्तुत है नाइजीरिया की योरुबा लोक कथाओं की फूजा अबायोमी की लिखी हुई "चौदह सौ कौड़ियाँ... ।"[4] इस पुस्तक में नाइजीरिया की योरुबा जनजाति की 31 लोक कथाऐं दी गयी हैं पर यहाँ केवल 29 कथाऐं ही दी जा रही है।

आशा है कि ये भूली बिसरी लोक कथाओं की पुस्तक आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये नाइजीरिया के योरुबा लोगों की ये पुरानी लोक कथाऐं अब हिन्दी में। यह भी इस पुस्तक का पहला हिन्दी अनुवाद है।

---

[2] Bateman, George W. "Folktales of Zanzibar". Chicago: AC McClurg. 1901. 10 tales.

[3] Mandela, Nelson. "Nelson Mandela's African Favorite Folktales". WW Norton Company. 2002. 32 tales.

[4] Fuja, Abayomi. "Fourteen Hundred Cowries: traditional stories of the Yoruba". Ibadan: OUP. 1962. 31 tales.
Fuja, Abayomi. "Fourteen Hundred Cowries and Other African Tales." NY: Lothrop, Lee and Shepard. 1971. 1st American edition.

1 चौदह सौ कौड़ियाँ

2 कछुए और बिल्ले की कुश्ती[5]



जानवरों के देश में एक बिल्ले की बड़ी इज़्ज़त थी क्योंकि सभी जानवरों में सबसे अच्छी कुश्ती उसी को आती थी और इसका सबूत यह था कि वह अब तक कई जानवरों को पछाड़ चुका था।

जाहिर है कि सभी जानवर उससे दोस्ती करने के लिये लालायित रहते थे और वह अपने देश में सभी का प्रिय बन चुका था।



अब एक कछुआ भी उससे दोस्ती करना चाहता था। सो एक दिन वह कछुआ उस बिल्ले के घर गया और उसको अपने घर आने का बुलावा दिया।

बिल्ले को जानवरों ने पहले ही बता रखा था कि यह कछुआ बहुत ही चालाक है इसलिये बिल्ले ने उसके घर आने में कुछ आनाकानी की। क्योंकि कछुआ बेचारा कुछ समझ नहीं पा रहा था कि बिल्ला उसके घर आने से क्यों कतरा रहा था तो इसलिये वह उससे आने के लिये जिद करता रहा। आखिर बिल्ला मान गया।

[5] The Wrestling Contest Between the Cat and the Tortoise (Tale No 2) – a Yoruba folktale from Nigeria, Africa

जब बिल्ला कछुए के घर पहुँचा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसने तो एक अच्छी खासी दावत की तैयारी कर रखी थी।



बहुत बढ़िया किस्म की मछली और बहुत सारी कच्ची ताड़ी[6] और उसके ऊपर से कोला नट[7] सभी कुछ तो वहाँ था। यह सब देख कर बिल्ले के मुँह में पानी भर आया। वह कछुए के साथ बैठ गया और खूब मजे से दावत का आनन्द लिया।

पेट भर खा चुकने के बाद वह केले की बड़ी बड़ी हरी मुलायम पत्तियों को ओढ़ कर लेट गया और सोचने लगा कि लोग बेकार ही कछुए की बुराई करते हैं। वह इतना बुरा नहीं है जितना बुरा उसे समझा जाता है।

इस घटना के बाद तो दोनों की दोस्ती बढ़ती ही चली गयी। अब वे अक्सर ही केले के पेड़ के साये में बैठे गप मारते दिखायी देते।

यकायक एक दिन कछुए ने बिल्ले से पूछा — "बिल्ले भाई, तुमको कुश्ती कैसे आयी? और तुम कैसे अपने से अधिक ताकतवर जानवरों को हरा देते हो?"

---

[6] Translated for the words "Palm Wine"

[7] Kola Nut is a kind of nut of fruit which is eaten in Nigeria like Indian betel nut. It is offered to people when they meet people for its auspiciousness. See its picture above.

बिल्ला बोला — "मेरे पास एक बहुत ही ताकतवर जू जू[8] है जिसे मैं कुश्ती लड़ते समय इस्तेमाल करता हूँ और इस प्रकार सबको हरा देता हूँ।"

कछुआ बोला — "दोस्त, मुझे भी बताओ न। तुम्हारे पास ऐसे कितने जू जू हैं और ये किस तरीके के हैं। हालाँकि मैं तुमसे कुछ ज़रा ज़्यादा ही पूछ रहा हूँ पर मैं तुम्हारा दोस्त हूँ और मुझे तुम्हारी ताकत पर पूरा विश्वास है।"

बिल्ला बोला — "यह तो बहुत ही आसान है मैं तुमको बताये देता हूँ। मेरे पास दो जू जू हैं जो मैं इस्तेमाल करता हूँ।" और बिल्ले ने कछुए को सब कुछ बता दिया।

पर बिल्ला भी बहुत चालाक था और इतना सीधा नहीं था जितना कि कछुआ उसको समझता था। क्योंकि असल में वह तीन जू जू का इस्तेमाल करता था और तीसरे जू जू के बारे में उसने कछुए को कुछ भी नहीं बताया था।

कुछ दिनों बाद बिल्ले ने देखा कि कछुआ भी कुश्ती में हिस्सा लेने लगा। पहले तो जानवरों को आश्चर्य हुआ, फिर हँसे, लेकिन जब वह कई कुश्तियाँ जीत गया तो सभी उसकी बड़ी तारीफ करने लगे।

इस बीच बिल्ला केवल तमाशा देखता रहा मगर बोला कुछ नहीं। उधर कछुआ हर जानवर को कुश्ती में हरा कर जीतता चला

---

[8] Ju Ju is like a magic, or Black Magic. It is like Tonaa Totakaa of India.

जा रहा था और इससे उसको अपने ऊपर विश्वास बढ़ता जा रहा था। आखिर वह दिन भी आ गया जिसका बिल्ले को इन्तजार था।

एक दिन कछुए के साथी बोले — "तुम इतनी अच्छी कुश्ती लड़ते हो तो तुम बिल्ले के साथ कुश्ती क्यों नहीं लड़ते। अब तो तुम कुश्ती में खूब होशियार हो गये हो और बिल्ले को भी हमने बहुत दिनों से कुश्ती लड़ते नहीं देखा। अबकी बार तुम बिल्ले को कुश्ती में हरा कर कुश्ती के चैम्पियन बन जाओ।"

कछुआ तो यह चाहता ही था। वह बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। अबकी बार मैं बिल्ले से ही कुश्ती लड़ूँगा और उसको बता दूँगा कि इस देश में वह अकेला ही कुश्ती लड़ने वाला नहीं है। जाओ, और जा कर उससे कह दो कि कुश्ती के लिये वह कोई दिन पक्का कर ले। बस फिर हम उससे उस दिन कुश्ती लड़ेंगे।"

अब क्या था बिल्ले और कछुए की कुश्ती का दिन पक्का हो गया। कुश्ती वाले दिन जानवरों की भीड़ जमा थी। इस कुश्ती को देखने के लिये जानवर दूर दूर से आये थे क्योंकि इन दोनों ही को कुश्ती में अब तक किसी ने नहीं हराया था।

पहली बार में दोनों ने अपने पहले जू जू का प्रयोग किया और मैच ड्रौ हो गया। दूसरी बार में दोनों ने अपने दूसरे जूजू का प्रयोग किया और यह मैच भी ड्रौ हो गया।

अब कछुए को पसीना आ गया। सभी ने उसे सलाह दी कि चैम्पियनशिप बाँट लेनी चाहिये मगर कुछ शौकीन मिजाज जानवर बोले कि नहीं तीसरा मैच भी होना चाहिये।

अब कछुए के पास कोई और जू जू तो था नहीं सो उसने पहले और दूसरे जूजू को मिला कर प्रयोग किया परन्तु बिल्ले ने अपना तीसरा जू जू प्रयोग किया और कछुए को पछाड़ दिया।

उस दिन के बाद से कछुए ने बिल्ले और कुश्ती के मैदान दोनों से तौबा कर ली।

यह कहानी हमको यह शिक्षा देती है कि अपने दोस्त के भेदों को जानते हुए भी कभी उससे लड़ना नहीं चाहिये।



3 चीता और साही[9]




बहुत पुरानी बात है कि जानवरों के देश में एक साही[10] रहता था। उसकी उस देश के एक चीते[11] से बड़ी अच्छी दोस्ती थी।

वह छोटी मोटी परेशानियों में चीते की अक्सर सहायता भी किया करता था और चीते को भी जब कोई परेशानी होती तो वह भी साही को ही याद करता था।

साही एक भरोसे का जानवर था और वह अपनी और अपने परिवार की ठीक से देखभाल करता था।

साही और चीता दोनों एक दूसरे से काफी दूर रहते थे। चीता जंगल में रहता था और साही खेतों के पास वाले घास के मैदान में रहता था फिर भी वे अक्सर ही मिलते रहते थे।

साही तो कभी जंगल जाता नहीं था परन्तु चीता अक्सर ही खेतों के पास वाले घास के मैदान के आस पास घूमता दिखायी दे जाता।

---

[9] The Leopard and the Hedgehog (Tale No 3) – a Yoruba folktale from Nigeria, West Africa

[10] Translated for the word "Hedgehog". It is a small animal like a rabbit – see his picture above. It has long soft and non-poisonous quills

[11] Translated for the word "Leopard" – see his picture above.

एक दिन हरमाटान के मौसम[12] में जब किसान लोग अपनी खेती के लिये अपनी अपनी जमीन तैयार कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि उनको अपनी खेती के लिये कुछ नयी जमीन की जरूरत है तो उन्होंने अपने अपने खेतों के पास में लगी घास काटनी शुरू कर दी।

घास काट कर उन्होंने घास जलाने के लिये उसमें आग लगा दी जिससे वह आग काफी बड़े हिस्से में फैल गयी।

क्योंकि साही भी वहीं पास में रहता था इसलिये उसका घर भी उस आग के लपेटे में आ गया। बेचारा साही किसी तरह अपने आपको और अपने परिवार को बचाने में तो कामयाब हो गया परन्तु अपना घर नहीं बचा सका। वह तुरन्त ही जल गया।

बेघर साही अपने परिवार के साथ शरण के लिये जंगल की तरफ चल दिया। जहाँ उसको थोड़ी सी भी घास मिलती वह वहाँ आराम कर लेता।

इसी समय साही को अपने दोस्त चीते का ध्यान आया। उसने सोचा कि उसने चीते की कितनी बार सहायता की है। आज उससे वह केवल इतनी सहायता चाहता था कि वह उसे अपने साथ केवल तब तक के लिये रख ले जब तक वह अपना नया घर बनाता है।

---

[12] In Nigeria, fine dust comes from Sahara desert through sky and spreads throughout the country and stays there for three months – November, December and January. Often the Sun does not come out the whole day for days together. Visibility becomes very low. It is called Harmattan there. Of course its intensity is more in Northern side in comparison to Southern side.

उसने अपने सबसे बड़े बेटे को बुलाया और अपनी परेशानी के बारे में चीते को बताने के लिये कहा और यह भी कहा कि वह जा कर उससे पूछे कि क्या वह कुछ समय के लिये उनको खाना और सुरक्षा दे सकता था।

बेटा साही चीते के पास पहुँचा और उसको अपने घर के नुकसान की कहानी सुनायी और उससे खाने और सुरक्षा की प्रार्थना की। परन्तु चीता तो बड़ा ही खतरनाक और खराब जानवर था।

साही से उसकी दोस्ती तो केवल एक बहाना थी उसका अपना काम निकालने के लिये। अब उसे लगा कि साही से तो उसको कोई फायदा होगा नहीं सो उसने बेटा साही से कहा कि वे लोग उसके पास हमेशा के लिये आ कर रह सकते हैं, खाना खा भी सकते हैं और खाये भी जा सकते हैं।

बेटा साही से यह कुटिल बात सुन कर पिता साही ने सोचा कि यह चीता तो बड़ा ही बेवफा जानवर निकला। आगे से केवल उसे ही नहीं बल्कि और दूसरे साहियों को भी उससे होशियार रहना पड़ेगा।

चीते को यह तो मालूम ही था कि साही परिवार उसके घर में खाये जाने के लिये नहीं आयेगा सो चीता बेटा साही के पीछे पीछे चलता हुआ उसके रहने की जगह देखने आया।

अपने बेटे के मुँह से चीते का सन्देश सुन कर पिता साही अपने परिवार को ले कर किसी और सुरक्षित जगह पर चल दिया।

चीता तो पीछे ही था। साही को कहीं और जाते देख कर चीते ने एक ज़ोर की छलाँग लगायी। साही परिवार के बचने की कोई उम्मीद नहीं थी क्योंकि चीते ने तो उन सबको दबोच ही लेना था।

परन्तु खुशकिस्मती से साही को पास ही चींटियों का एक बड़ा सा घर दिखायी दे गया। उसने तुरन्त ही अपने परिवार को धक्का दे कर उस घर के अन्दर कर दिया और खुद भी उसी में छिप गया।

इस तरह चीते ने छलाँग तो लगायी पर वह साही के परिवार को मार न सका।

उस समय के बाद से चीते और साही की कभी नहीं बनती और साही चीते से छिपने के लिये जमीन के नीचे या चींटियों के घर में रहते हैं और चीते उनको इधर उधर ढूँढते रहते हैं।



4 एक सुन्दर लड़की और मछली[13]

बहुत पुरानी बात है जब नाइजीरिया में हर जगह जादू का बोलबाला था। वहाँ के एक गाँव में एक बहुत सुन्दर लड़की रहती थी।

उस गाँव के बहुत सारे लड़के उससे शादी करना चाहते थे परन्तु उसने सारे लड़कों को मना कर दिया था। उसका कहना था कि उसका पति तो बहुत ही ज़्यादा सुन्दर होना चाहिये।

एक दिन जब वह बाजार में घूम रही थी तो उसने सचमुच में एक बहुत ही सुन्दर लड़का देखा और तुरन्त ही उसको उस लड़के से प्रेम हो गया।

वह उस लड़के के पास गयी और उसको बताया कि किस तरह वह उसकी सुन्दरता पर रीझ गयी थी और अब उससे शादी करना चाहती थी।

उस अजनबी ने जवाब दिया — "मैं तुमसे शादी करके बहुत ही खुश होता परन्तु बदकिस्मती से मैं इन्सान नहीं हूँ और तुम लोगों में से एक भी नहीं हूँ।

मैं एक मछली हूँ और मैं इडुनमायबो[14] में जो नदी है उसमें रहता हूँ। देवताओं ने मुझे एक ऐसी ताकत दे रखी है जिससे मैं जब चाहूँ

[13] The Beautiful Girl and the Fish (Tale No 4) – a folktale of Yoruba Tribe from Nigeria, Africa
[14] Idunmaibo – name of a place

अपने आपको एक आदमी के रूप में बदल सकता हूँ पर मेरा घर तो नदी ही है और मैं फिर वहीं वापस चला जाऊँगा।”

यह सुन कर लड़की बोली — “कोई बात नहीं, चाहे तुम मछली हो या आदमी पर मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। अगर तुम समय समय पर पानी से निकल कर इसी रूप में मेरे पास आने का वायदा करो तो मैं तुमसे खुशी खुशी शादी कर लूँगी।”

मछली आदमी बोला — “हाँ ऐसा तो हो सकता है। ठीक है फिर ऐसा ही होगा।”

और ऐसा कह कर वह उस लड़की को इडुनमायबो की तरफ ले चला। वहाँ पहुँच कर वह एक नदी के पास एक जगह पर रुका और बोला — “यही मेरा घर है। तुम जब भी मुझे बुलाना चाहो तो मैं तुमको जादू का एक गीत बता देता हूँ, उसे गाना तो मैं तुम्हारे पास इसी रूप में चला आऊँगा। वह गीत है —

ओ नदी की सुन्दर मछली क्या मैं इस बहते पानी में से देख सकती हूँ
नदी की सतह से मैं तुम्हें देखूँगी ओ प्यारी नदी जो चाँदी और रत्न जैसी लगती है
जिसके नीचे महल है जो आदमियों के महल से भी ज़्यादा सुन्दर है।

यह कह कर वह मछली आदमी नदी में कूद पड़ा और गायब हो गया। लड़की भी वहाँ से चली गयी।

बाद में वह लड़की अपने प्रेमी के लिये रोज कुछ मिठाई बनाती और इडुनमायबो ले जाती। वहाँ जा कर वह जादू भरा गीत गाती और मछली पानी की सतह पर दिखायी देने लगती।

फिर वह मछली अपने आपको आदमी के रूप में बदल कर किनारे पर आ जाती। तब दोनों कुछ समय साथ में गुजारते।

जब वह आदमी नदी में से बाहर आता तो बहुत तरीके के मूँगे और रत्न ले कर आता और अपनी पत्नी को भेंट करता। वे लोग आपस में बहुत खुश थे और एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

जब लड़की के माता पिता ने देखा कि लड़की बड़ी होती जा रही है और वह किसी से शादी नहीं कर रही है तो उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसकी निगाह में कोई ऐसा आदमी था जिससे वह शादी करना चाह रही हो।

तो लड़की ने जवाब दिया कि एक आदमी उसका पति था तो पर वह अभी उसके बारे में उनको बता नहीं सकती थी।

इस जवाब से वे बड़े परेशान हुए। वे उसको देखते रहते कि वह अपने पति के लिये खाना बनाती और उसे ले जाती।

उसके छोटे भाई ने उससे कई बार कहा कि वह उसके साथ चलेगा परन्तु लड़की ने कहा कि नहीं, यह काम वह अकेले ही करेगी और कोई उसके पीछे भी नहीं आये।

पर इस जवाब ने उस लड़के की उत्सुकता और जगा दी और एक दिन उसने तय कर लिया कि वह उसके पीछे पीछे जायेगा और देखेगा कि वह कहाँ जाती है और उस खाने का क्या करती है।

जादू से उसने अपने आपको एक मक्खी के रूप में बदला और अपनी बहिन के पीछे पीछे उड़ चला।

उसने देखा कि उसकी बहिन इडुनमायबो की तरफ गयी और वहॉ जा कर नदी के पास पहुॅच कर उसने जादू का एक गीत गाया।

फिर एक मछली नदी की सतह पर आयी और वह एक सुन्दर नौजवान बन कर नदी के किनारे पर आ गयी। दोनों ने मिल कर खाना खाया, कुछ देर बातें कीं और फिर वह सुन्दर नौजवान नदी में कूद कर गायब हो गया।

लड़के ने उस जादुई गीत के बोल याद कर लिये और तुरन्त ही घर की तरफ उड़ चला। घर आ कर उसने अपने आपको फिर से लड़के के रूप में बदला और भागा भागा सीधा अपने माता पिता के पास गया।

उसने नदी के किनारे जो कुछ देखा था उसका पूरा हाल उनको सुना दिया और कहा कि उनकी बेटी ने तो एक मछली से शादी कर रखी है।

माता पिता यह सब सुन कर गुस्सा भी हुए और मन ही मन दुखी भी हुए। उन्होंने तय किया कि वे अपनी बेटी को अभी कुछ नहीं कहेंगे। वे अपनी बेटी को उसके बाबा के घर भेज देंगे और उसके जाने के बाद सोचेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिये।

सो उस लड़की को उसके बाबा के घर भेज दिया गया। उसके बाबा का घर वहॉ से काफी दूर था और वहॉ से वह इतनी दूर आ कर अपने पति से नहीं मिल सकती थी।

जब लड़की चली गयी तब उन्होंने अपने बेटे से कहा कि वह उनको उस नदी के किनारे ले चले और वहाँ जा कर वह जादुई गीत गाये। बेटे ने ऐसा ही किया। वे सब नदी के किनारे पहुँचे और लड़के ने अपनी बहिन की आवाज में वह जादुई गीत गाया।

गीत सुन कर वह मछली पानी के ऊपर आयी और एक सुन्दर नौजवान का रूप रख कर नदी के किनारे पर कूद गयी। पिता एक झाड़ी के पीछे खड़ा था।

जैसे ही मछली नौजवान के रूप में नदी के किनारे पर कूदी पिता ने अपने हँसिये से उसे मार डाला और उसे पानी में वापस फेंक दिया। आश्चर्य, वह नौजवान पानी में गिरने के बाद धीरे धीरे फिर से मछली के रूप में आ गया।

पिता यह देख कर चिल्लाया — "मैं अपनी बेटी को इस बुरे काम की सजा जरूर दूँगा।"

उसने अपने बेटे को वह मरी हुई मछली पानी से बाहर निकाल कर घर ले चलने के लिये कहा। घर जा कर उन्होंने उस मछली को सुखाया और लड़की के वापस आने तक रख दिया।

दो दिन बाद लड़की खुशी खुशी घर वापस लौटी कि अब वह नदी के पास जा कर अपने पति से फिर से मिल सकेगी।

वह घर आते ही नदी पर जाने के लिये तैयार हुई तो उसके पिता ने कहा — "पहले कुछ खा लो। तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिये बहुत ही स्वाद मछली पकायी है।"

लड़की बोली — "पिता जी मुझे भूख भी नहीं है और मैं मछली भी नहीं खाना चाहती।"

पिता ने उसको डाँटा — "जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। चलो बैठो और पहले खाना खाओ।"

लड़की बेचारी दुखी सी चुपचाप बैठ गयी और मछली खाने लगी। जैसे ही वह मछली खाने लगी कि उसने अपने भाई को गुनगुनाते हुए सुना।

उसका गाना सुन कर तो वह हक्का बक्का रह गयी। उसके हाथों से खाने का कटोरा गिर गया और वह उसको भौंचक्की सी देखती रह गयी। उसके भाई ने अपना गीत फिर दोहराया —

कितनी बुरी बात है स्त्रियों के लिये अपने पति का माँस खाना
जबकि वे अपने पति को बहुत प्यार करती हैं
क्योंकि उनके पीछे उनके पति नदी में से निकाल लिये गये हैं
मछली के रूप में परिवार के खाने के लिये

लड़की यह गीत सुन कर तुरन्त नदी की तरफ दौड़ी गयी और उसने अपना जादुई गीत गाया पर उसका पति नदी से बाहर नहीं आया। फिर उसने एक और गीत गाया —

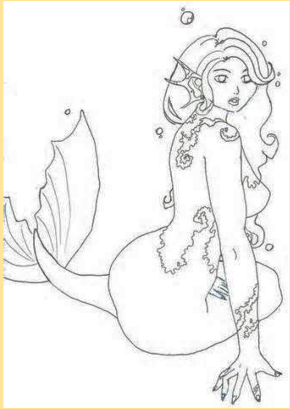
ओलूवेरी[15] ओलूवेरी ओ नदी देवी
मैं अपनी चाँदी जैसी आँखें और सितारों जैसे बाल लिये लौटी हूँ
अगर मेरा पति मर गया है तो नदी की पानी की सतह लाल हो जाये
और अगर मेरा पति ज़िन्दा है तो वह बाहर आये

[15] Oluweri – the goddess of the Rivers

और आ कर अपनी प्रेमिका को देखे
जिसको कठोरता के साथ इतनी दूर भेज दिया गया था

उसी समय नदी का पानी लाल हो गया और लड़की जान गयी कि उसके पिता ने उसके पति को मार डाला है। वह तुरन्त नदी में कूद गयी। पर वह डूबी नहीं बल्कि नीचे बैठती चली गयी और मत्स्यांगना बन गयी।

लोगों का कहना है कि आज भी कभी कभी एक मत्स्यांगना नदी में गुनगुनाती सुनायी पड़ती है।



5 एक टैडपोल की दुखभरी कहानी[16]

एक बार मेंढकों का राजा मर गया। उसके अन्तिम संस्कार के बाद सवाल यह उठा कि अब राजा किसे बनाया जाये। मेंढकों के खास खास परिवार तो इकट्ठे हुए ही और राजा बनने के लिये और बहुत सारे उम्मीदवार भी खड़े हुए।

विरोधी दलों के मेंढकों में कुछ कहा सुनी, लड़ाई झगड़ा और गाली गलौज भी हुई। बहुत देर तक यह सब कुछ करने के बाद भी मेंढक जनता जब किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सकी तो फिर यह तय हुआ कि किसी जू जू आदमी[17] को बुला कर उससे राय ली जाये।



सो एक जू जू आदमी को बुलाया गया और उससे इस बारे में राय ली गयी। उसने कुछ सोच कर राय दी कि एक बच्चा टैडपोल[18] को मेंढकों को राजा बना दिया जाये।

इस खबर को सुन कर जितनी ज़्यादा खुशी और ताज्जुब बच्चा टैडपोल को हुआ उतना शायद किसी को भी नहीं हुआ।

मीटिंग खत्म करने से पहले सभी मेंढकों ने तय किया कि वे सात दिन के अन्दर अन्दर बच्चा टैडपोल का राजा बनाने की रस्म

---

[16] The Sad Story of a Tadpole (Tale No 5) – a folktae of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[17] Translated for the word "Ju Ju man". He is like Tonaa Totakaa man called Ojhaa in India.

[18] Tadpole is the state of the body of a frog before becoming the frog – see its picture above.

पूरी कर देंगे। इस अचानक सफलता ने बच्चा टैडपोल का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ा दिया।

पहले बहुत सारे मेंढक जो उसकी तरफ कभी ऑख उठा कर भी नहीं देखते थे वे अब उसके चारों तरफ चक्कर काटने लगे और उसकी चापलूसी करने लगे।

बच्चा टैडपोल इस सबसे इतना खुश हुआ कि उसने अपने राजा बनने की रस्म से पहले वाले सात दिन के अन्दर अन्दर एक शानदार दावत का इन्तजाम किया।

उसके सारे नये दोस्तों को बुलावा भेजा गया। सबसे अच्छे गवैये, संगीत के साज़ बजाने वाले और नाचने वाले बुलाये गये। दावत के लिये बढ़िया बढ़िया खाने तैयार किये गये।

बड़े बड़े बर्तनों में ताड़ी[19] भर कर इधर उधर चारों तरफ रख दी गयी। यहॉ तक कि गलियों और बाजारों में भी रखवा दी गयी ताकि किसी को पीने की कोई कमी न हो।

उस दिन सभी मेंढक दावत खाने और खुशी मनाने में में लगे रहे और उस दिन मेंढकों के देश में कोई काम भी नहीं हुआ।

रीति रिवाजों के अनुसार शाम को सारे मेंढक सड़कों पर खूब नाचे और छठे दिन बच्चा टैडपोल जो अब तक नशे में धुत हो चुका था मेंढकों के उस जुलूस के पीछे पीछे चला।

[19] Translated for the word “Palm Wine”. It is very common drink in Nigeria.

वह चाहता था कि सारी भीड़ उसको देखे सो उसने घोषणा की कि वह उन सारे नाचने वालों से कहीं ज़्यादा अच्छा नाच सकता था जो उस समय वहाँ पर मौजूद थे और उस टैडपोल ने सड़क पर ही नाचना और कूदना शुरू कर दिया।

क्योंकि हर मेंढक ने उसके नाच की तारीफ की और क्योंकि वह बहुत ज़्यादा नशे में था इसलिये उसने सोचा कि उसका नाच वाकई सभी को बहुत पसन्द आ रहा था जबकि उससे न तो कूदा ही जा रहा था और न ही नाचा जा रहा था।

वह बेचारा बार बार दूसरे मेंढकों के ऊपर लुढ़क जाता था। कभी कभी वह नाली में भी गिर पड़ता था।

एक चौराहे के पास कूड़े का एक बहुत बड़ा ढेर पड़ा था। यहाँ उस टैडपोल की किस्मत कुछ ज़्यादा ही खराब थी। उस ढेर को वह कूद कर पार करना चाह रहा था सो जब वह कूद रहा था तो एक गड्ढे में गिर गया और अपनी एक छोटी सी मुलायम सी टाँग तोड़ बैठा।

दूसरे मेंढकों ने उसे वहाँ से उठाया और एक तख्ते पर बिठा कर उसे उसके घर ले चले। घर जा कर उस टूटी हुई टाँग के दर्द में कराहता सा वह अपने मुलायम बिछौने पर लेट गया। उसको पता ही नहीं चला कि उसकी कौन सी टाँग ज़्यादा दर्द कर रही थी।

अब इन मेंढकों के देश में एक कानून यह भी था कि वे किसी ऐसे मेंढक को राजा नहीं बनाते थे जिसके शरीर का कोई भी हिस्सा टूटा हुआ हो।

सो अगले दिन जब सारे मेंढक इकट्ठा हुए तो उनको लगा कि सभी मेंढक ओझे की उस राय से राजी नहीं थे जो उसने सात दिन पहले दी थी। उन्होंने यह तय किया कि वे किसी टूटी टॉग वाले को अपना राजा नहीं बना सकते।

और इस तरह वह बच्चा टैडपोल राजा नहीं बना और उसकी जगह एक बूढ़े मेंढक को राजा बना दिया गया।

बच्चों इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अगर कोई अच्छी चीज़ या खुशी अचानक ही मिल जाये तो हमें इतना ज़्यादा खुश नहीं हो जाना चाहिये कि हम अपनी देखभाल भी ठीक से न कर सकें और उस खुशी को ही न सह सकें। बल्कि हमें उसके लायक बनने की कोशिश करनी चाहिये।



6 एक लड़का और याम का टुकड़ा[20]



एक बार एक योरुबा लड़का जब पैदा हुआ तो उसकी मुट्ठी में याम[21] का एक छोटा सा टुकड़ा था। वह याम इतना छोटा सा था कि उसकी छोटी सी मुट्ठी में ठीक से आ रहा था।

धीरे धीरे वह लड़का बड़ा होने लगा पर उसकी मुट्ठी का याम उसी छोटे से रूप में ही उसकी मुट्ठी में ही रहा। वह उस तरीके से नहीं बढ़ा जैसे कि बच्चा बढ़ रहा था।

वह याम जादू का था और वह लड़का हमेशा उसे अपने पास ही रखता था। वह याम हमेशा ताजा ही रहा और कभी सड़ा भी नहीं जैसे और सब्जियाँ सड़ जाती हैं।

एक दिन उसके माता पिता ने उसको आग जलाने के लिये जंगल से लकड़ियाँ काटने के लिये भेजा। लड़के ने जंगल में जा कर लकड़ियाँ काटीं और घर लाने के लिये उनको बाँधने लगा।

जब वह लकड़ियाँ बाँध रहा था तो आसानी के लिये उसने अपने हाथ का याम पास में पड़े एक लकड़ी के टुकड़े पर रख दिया। उधर उस जंगल के जानवरों को पता था कि वह लड़का अपने हाथ में एक जादू का याम लिये पैदा हुआ था।

---

[20] The Boy and the Piece of Yam (Tale No 6) – **a** folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[21] Yam is a tuber vegetable – a staple food of Nigeria. It sometimes weighs 5-10 pounds each – see its picture above.

जब वह लड़का जंगल में लकड़ी काट रहा था तो वे जानवर जंगल में इधर उधर छिपे हुए थे। उन्होंने उस लड़के को अपना याम उस लकड़ी के टुकड़े पर रखते देख लिया।

लड़का अपना याम उस लकड़ी के टुकड़े पर रख कर भूल गया और अपनी लकड़ियाँ ले कर घर चला गया। लड़के के जाने के बाद सारे जानवर अपनी अपनी छिपी जगहों से निकल आये और उस याम को उत्सुकता से देखने लगे।

चीता बोला — "इस याम में कोई बहुत ही ताकतवर जू जू[22] होना चाहिये इसलिये इसको अपने पास रखना अच्छा है।"

यह सुन कर सभी जानवर उसको उठाने के लिये बढ़े तो सबमें आपस में झगड़ा होने लगा कि कौन उस याम को अपने पास रखे।

उधर घर पहुँचने से पहले ही उस लड़के को ध्यान आया कि वह अपना याम तो जंगल में ही छोड़ आया है। उसने तुरन्त ही अपना लकड़ी का गट्ठर सड़क के किनारे रख दिया और तेज़ी से जंगल की तरफ भाग लिया।

वहाँ पहुँच कर वह क्या देखता है कि बहुत सारे जंगली जानवर उस लकड़ी के टुकड़े को घेरे खड़े हैं जिस पर उसने अपना याम रखा था। उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ और वह सोचने लगा कि वह अब क्या करे।

[22] Ju Ju means magic or Black Magic. In India it is called Jaadoo Tonaa. It may be for good or bad.

उसे एक तरकीब सूझी। उसने जानवरों का ध्यान याम से हटाने के लिये एक गीत गाना शुरू किया —

मेरे छोटे याम ओ मेरे छोटे याम, मैं तुमको जंगल में छोड़ गया था
मेरी मॉ ने कहा था कि मैं तुमको कहीं न छोड़ूँ
मेरे पिता ने कहा था कि मैं तुमको अपने हाथ में ही रखूँ
फिर भी मैं भूल गया और याम के बिना ही चला गया
मेरे छोटे याम ओ मेरे छोटे याम

लड़के की मीठी आवाज में यह गीत सुन कर सारे जानवर तो उसके गीत में इतने खो गये कि उन्होंने उसको यह गीत बार बार गाने के लिये कहा।

जब उसने दोबारा यह गाना गाया तो कुछ जानवरों ने ढोल बजाना शुरू कर दिया और बाकी जानवर नाचने लगे। वे अपने इस नाच गाने में याम को बिल्कुल ही भूल गये।

लड़का धीरे धीरे उस लकड़ी के टुकड़े की तरफ बढ़ा और उसने चुपके से वह याम उठा कर अपने कपड़ों में छिपा लिया। जानवर अपने नाच में अभी भी मस्त थे सो वह चुपचाप वहॉ से अपना याम ले कर खिसक लिया।

कुछ देर बाद चीते को उस याम का ध्यान आया तो वह नाचते नाचते रुक गया और बोला — "अरे वह लड़का कहॉ है? और मेरा वह जादू का याम कौन ले गया।"

यह सुन कर सभी जानवर नाचते नाचते रुक गये और सबने उस लकड़ी के टुकड़े की तरफ देखा तो वहाँ तो याम सचमुच में ही नहीं था।

यह देख कर चीते ने गरज कर फिर पूछा — "मैं पूछता हूँ मेरा वह जादू का याम किसने लिया? और वह गाने वाला लड़का कहाँ चला गया?"

इसका जवाब हाथी ने दिया — "हम सभी बेवकूफ हैं। लगता है हमारी नजर बचा कर वही लड़का वह याम यहाँ से उठा कर ले गया।"

चीता बोला — "उसको घर पहुँचने से पहले ही रोको। हमें उससे वह याम लेना है। हाथी, तुम उसके पीछे दौड़ो और उसे पकड़ कर लाओ।"

हाथी बोला — "मैं ऐसे काम नहीं करता। यह तुमने सुझाया है तुम ही उसको वापस लाओ।"

चीता जल्दी जल्दी बोला — "ठीक है ठीक है, मैं खुद ही जाता हूँ और उसको ले कर आता हूँ। पर अगर वह याम मैं ले कर आया तो फिर वह जादू का याम मेरा हो जायेगा।" और किसी के कुछ बोलने से पहले ही वह लड़के के घर के रास्ते की तरफ दौड़ गया।

लड़का भी तेज़ी से अपने घर की तरफ भागा जा रहा था। अब उसे रास्ते में पड़ी अपनी लकड़ियों की भी कोई फिकर नहीं

थी। घर जा कर अपनी माँ को उसने जानवरों के नाच और उनकी उसके जादू के याम को लेने के बारे में सारी कहानी बतायी।

इस लडके की माँ दूसरी योरुबा स्त्रियों की तरह कपड़े रंग कर अपना और अपने बेटे का पालन पोषण करती थी।

जब उसने अपने बेटे से उसकी यह कहानी सुनी तो वह डर गयी कि शायद वे जानवर उसके घर आ कर भी उसके बेटे को कुछ नुकसान पहुँचायें। सो उसने अपने नौकरों को बुलाया और उनके हाथ में नीले रंग से रंगे डंडे दे कर अपने घर के चारों तरफ खड़ा कर दिया।

लड़के की माँ का सोचना ठीक ही था। थोड़ी ही देर में चीता वहाँ आ पहुँचा और उस लड़के के घर की चहारदीवारी में घुसा। पर घर के कम्पाउंड में घुसते ही उसको लगा कि वह तो जेल में आ गया क्योंकि उसके चारों तरफ तो भयानक और डरावने लोग खड़े थे।

एक आदमी ने पीछे से दरवाजा बन्द कर दिया और फिर वहाँ खड़े सभी आदमियों ने उसे अपने डंडों से मार मार कर नीला कर दिया। किसी तरह वह जान बचा कर जंगल की तरफ भाग पाया।

उस दिन के बाद से हर चीते के शरीर पर धारियाँ होती हैं। बस समय के साथ साथ वे नीले रंग की बजाय अब काली पड़ गयी हैं। और अब वह कभी भी जादू के याम के लिये बस्ती की तरफ नहीं भागता। जंगल में ही रहता है।



7 ओनी और एक बड़ी चिड़िया[23]

एक बार योरुबा लोगों के एक गाँव में एक अजीब लड़का पैदा हुआ। वह जब पैदा हुआ था तो उसके पैरों में जूते थे। उस लड़के का नाम रखा गया ओनी[24]।

जैसे जैसे ओनी बड़ा होता गया वैसे वैसे उसके जूते भी बढ़ते गये। जब वह अठारह साल का था तो उसके गाँव की एक दूसरे गाँव से लड़ाई छिड़ गयी।

इसी लड़ाई के बीच उसको अपनी एक दूसरी खासियत का पता चला जिसने उसको उसके साथियों से अलग कर दिया।

उसकी यह दूसरी खासियत थी कि दुश्मनों के तीर उसके शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहे थे। इस लड़ाई में उसको कई ऐसे तीर लगे जो उसको मार भी सकते थे पर वह उन तीरों से बिना किसी घाव के निकल आया और वह क्योंकि मर नहीं सकता था तो वे उससे डरने लगे और उसके पास जाने से भी कतराने लगे।

जब वह उस लड़ाई से लौट आया तो बहुत सारे लोगों ने उसको मारने की कोशिश की परन्तु सब बेकार। तो उसको गाँव से निकालने का बहाना ढूँढा गया।

---

[23] Oni and the Great Bird (Tale No 7) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa.
Available on the Web Site too :
http://images.pcmac.org/sisfiles/schools/al/autaugacounty/marburymiddle/uploads/forms/hreader.pdf

[24] Oni – name of the boy who was born with shoes on his feet

उसको एक घर में आग लगाने के जुर्म में गाँव निकाला दे दिया गया। हालाँकि ओनी का उस घर या उस घर की आग से कोई सम्बन्ध नहीं था परन्तु फिर भी उसको गाँव से निकल जाना पड़ा।

ओनी गाँव छोड़ कर बहुत दिनों तक पैदल ही मारा मारा फिरता रहा। एक दिन वह एक बड़ी नदी के किनारे पर आ पहुँचा। वह पैदल चलते चलते बहुत थक गया था। वहाँ उसको एक खाली नाव दिखायी दी तो वह उस नाव में बैठ कर नदी के नीचे की तरफ चल दिया।

शाम के समय जब थोड़ा सा अँधेरा हो आया तो ओनी एक शहर के पास पहुँचा। उसने वह रात उसी शहर में बिताने का निश्चय किया और वह नाव से उतर कर उस शहर में चल दिया। उसने देखा कि उस शहर में बहुत सारे घन्टे बज रहे थे और लोग जल्दी जल्दी इधर उधर आ जा रहे थे।

उसने एक बूढ़े आदमी को रोक कर कहा — "मेरा नाम ओनी है। मैं आपके शहर में एक अजनबी हूँ। किसी को जानता नहीं जहाँ रात बिता सकूँ। क्या मैं आपके घर रात बिता सकता हूँ?"

बूढ़ा आदमी बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आओ मेरे साथ आओ। पर ज़रा जल्दी जल्दी चलना क्योंकि ये घंटे बज रहे हैं और रात होने वाली है।"

ओनी ने पूछा — "आपके शहर का नाम क्या है और आपके शहर में अँधेरा होने पर ये लोग घंटे क्यों बजा रहे हैं?"

बूढ़ा बोला — "इस जगह का नाम अजो[25] है। पर तुम ज़रा जल्दी जल्दी चलो। हमको जल्दी ही घर के अन्दर पहुँच जाना चाहिये। घर पहुँच कर मैं तुमको सब बता दूँगा।"

कुछ ही देर में वे उस बूढ़े आदमी के घर पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर ओनी ने महसूस किया कि उस बूढ़े आदमी के घर वाले बड़ी बेसब्री से उसका इन्तजार कर रहे थे।

अब तक वे घंटे बजने बन्द हो गये थे। उन लोगों के घर में घुसते ही दूसरे लोगों ने घर का दरवाजा कस कर बन्द कर दिया।

बूढ़ा बोला — "आओ बैठो और हमारे साथ खाना खाओ। मैं तुमको सब कुछ बताता हूँ।"



खाना खाते खाते बूढ़े ने कहना शुरू किया — "कई सालों से हम अजो शहर के लोग रात को एक बहुत बड़े गरुड़ चिड़े के आने से परेशान रहते हैं। हम लोग उसको अनोडो[26] कहते हैं।

वह गरुड़ यहाँ रोज आता है और सुबह होने तक यहीं रहता है। जो भी उस समय में घर के बाहर रह जाता है वह बदकिस्मती से मारा जाता है। तुम किस्मत वाले थे जो अजो शाम होने से पहले ही पहुँच गये।

[25] Ajo – a village in Nigeria

[26] Anodo – name of the eagle

हमारे राजा ने घंटे बजा कर रात होने से पहले घर में घुसने के लिये कहा है। हम लोगों में से कोई नहीं जानता कि वह गरुड़ कहाँ से आता है और सुबह होते ही कहाँ चला जाता है।

हम लोगों के ऊपर यह एक शाप सा है और इसने हमारे बहुत सारे लोगों को मार दिया है।"

बूढ़े ने अभी अपनी बात खत्म ही की थी कि ओनी ने किसी बड़ी चिड़िया के पंखों के फड़फड़ाने की आवाज सुनी। जब वह आवाज उनके अपने घर के ऊपर से आयी तो घर के दरवाजे खिड़कियाँ सभी कुछ हिल गया।

ओनी ने यह देख कर कहा — "इसकी आवाज से ऐसा लग रहा है कि यह चिड़िया तो सचमुच ही बहुत बड़ी होनी चाहिये।"

जब ओनी खाना खा चुका तो बूढ़े ने बिछाने के लिये उसको एक चटाई दी और एक चादर ओढ़ने के लिये दी। ओनी वहीं कमरे के एक कोने में वह चटाई बिछा कर और वह चादर ओढ़ कर लेट गया। चिड़िया के उड़ने की आवाज की वजह से उसको सारी रात नींद नहीं आयी।

सुबह उठ कर ओनी ने बूढ़े को धन्यवाद दिया। गरुड़ वहाँ से जा चुका था। ओनी भी उस बूढ़े के घर से चल दिया। वहाँ से वह सीधा राजा के महल में गया और राजा से मिलने की इच्छा प्रगट की। राजा ने ओनी को बुलाया।

ओनी बोला — "मेरा नाम ओनी है। मैं आपके शहर में एक अजनबी हूँ। मैं आपके शहर को इस अनोडो गरुड़ से छुटकारा दिलाने की इजाज़त चाहता हूँ।"

राजा ने आश्चर्य से पूछा — "सभी लोग इस काम में अभी तक नाकामयाब रहे हैं। तुम ऐसा कैसे सोचते हो कि तुम यह काम कर पाओगे?"

ओनी बोला — "महाराज, मेरे पास कुछ खास ताकतें हैं और जू जू[27] हैं जिनसे मैं यह सोचता हूँ कि मैं यह काम कर पाऊँगा।"

राजा बोला — "ओनी, ऐसा तो औरों के पास भी था पर वे सब शिकारी एक एक कर के या तो मारे गये या अनोडो उनको उठा कर ले गया। हमारे यहाँ बाहर से भी कुछ अजनबी लोग इस काम को करने के लिये यहाँ आये पर वे बेचारे भी मारे गये।

हाँ अब काफी समय से अनोडो को मारने की कोशिश किसी ने नहीं की है और मैंने अब अपने शिकारियों को ऐसी कोई कोशिश करने से भी मना कर दिया है क्योंकि इस काम में काफी जानें जा चुकी हैं। तुम सोच लो।"

इस पर ओनी ने पूछा — "क्या कभी आपने उस आदमी को इनाम देने की भी घोषणा की है जो उस चिड़िया को मारेगा?"

[27] Ju Ju means magic or Black Magic. In India it is called Jaadoo Tonaa. It may be for good or bad.

राजा बोला — "हॉ, काफी समय पहले एक बार मैंने घोषणा की थी कि जो भी इस गरुड़ को मारेगा मैं उसको अपना आधा राज्य दूँगा।"

ओनी बोला — "तो आज की रात मैं उसको मारने की कोशिश करूँगा।" कह कर उसने सिर झुकाया और वहॉ से चला गया।

ओनी वापस उस बूढ़े के घर आया और उसको राजा से हुई बातों और अपने इरादों के बारे में बताया। बूढ़ा यह सुन कर बहुत डरा और उसको यह काम न करने के लिये कहा क्योंकि यह काम उसके लिये ही नहीं बल्कि बूढ़े के अपने परिवार के लिये भी खतरनाक था और उन सबको मार सकता था।

परन्तु ओनी को कोई डर नहीं था। उसने अपना तीर कमान उठाया, चाकू देखे भाले और उनको ठीक से देखने भालने के बाद रख दिया।

ओनी को अगला दिन एक पहाड़ की तरह लगा। उसको अपनी ज़िन्दगी का कोई भी दिन इतना लम्बा नहीं लगा था जितना कि यह दिन। जैसे तैसे शाम हुई और फिर रात आयी और उसके साथ आयी घंटियों के बजने की आवाज।

बूढ़ा और उसके परिवार वाले यह आवाज सुन कर दुखी हो उठे और डर के मारे कॉपने लगे।

पर ओनी बिल्कुल निडर था। बूढ़े ने तुरन्त अपने घर के दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर दिये और ओनी को उसने चटाई बिछा कर लेट जाने के लिये कहा।

इतने में ही उस बड़े गरुड़ के पंखों की फड़फड़ाहट सुनायी दी। जब वह गरुड़ उनके घर के ऊपर आया तो ओनी ने गाना शुरू किया —

आज ओनी अनोडो के मुकाबले पर है, उस गरुड़ के जिसकी चोंच चाकू से भी तेज़ है
सो आज प्रकृति के चाकुओं का मुकाबला आदमी से है
ओनी को कोई नहीं जीत सकता उसके चाकू बहुत तेज़ हैं

घर के ऊपर से उड़ते हुए अनोडो ने ओनी का यह गीत सुना तो वह फिर लौटा और उस बूढ़े के घर के ऊपर आ कर गाया —

ओह आज मुझे मेरा शिकार मिला है, बहुत दिन हो गये मुझे कोई शिकार किये
क्या यह गवैया बाहर आयेगा मेरे पंजों की मार सहने के लिये
और मेरी चोंच की मार सहने के लिये
मैं एक पल में उसको मार दूँगा, आ तू बाहर तो आ।

यह सुन कर तो घर के सारे लोग थर थर काँपने लगे। उन्होंने ओनी को उठा कर घर के बाहर फेंक दिया। जैसे ही ओनी सड़क पर गिरा कि गरुड़ ने उसे अपने पंजों में उठाया और ऊपर उड़ चला।

ओनी ने अपने चाकू से गरुड़ की छाती में चीरा मारा। इससे दर्द से कराहते हुए गरुड़ ने ओनी को छोड़ दिया। ओनी धम्म से नीचे जमीन पर आ गिरा।

अनोडो दोबारा ओनी के ऊपर झपटा। इतनी देर में ओनी ने अपना तीर कमान निकाला और एक तीर अनोडो के ऊपर चलाया पर अनोडो ने ओनी को अपनी चोंच और पंजों से बुरी तरह से घायल कर दिया।

फिर भी ओनी ने हिम्मत करके गरुड़ की छाती में दो बार अपना चाकू मारा। गरुड़ कराहता हुआ फिर ऊपर उड़ चला। वह फिर एक बार नीचे की ओर आया और ओनी की तरफ बढ़ा। इतनी देर में ओनी काफी सँभल चुका था।

गरुड़ को फिर से आता देख कर ओनी ने उस पर अपने तीर पर तीर चलाने शुरू कर दिये। फिर भी वह गरुड़ ओनी की तरफ बढ़ता ही चला आया और उसको अपने पंजों से ज़ोर से मारा।

ओनी एक तरफ को लुढ़क गया और उसकी आँखों के सामने तारे नाचने लगे। वह बेहोश हो कर गिर पड़ा। पर वह यह नहीं देख पाया कि गरुड़ तो उसके मारने से पहले ही मर चुका था।

गरुड़ पास के कपास के एक पेड़ के पास पड़ा था।उधर ओनी को जब होश आया तो उसको बहुत कमजोरी महसूस हुई।

गरुड़ के पंखों की पकड़ से बाहर निकलने में उसके पैर का जादू का एक जूता निकल गया और उस चिड़िया के नीचे दबा रह

गया। बड़ी मुश्किल से वह नदी के पास पहुँचा कि फिर बेहोश हो गया।

सुबह होने पर लोगों ने देखा कि अनोडो कपास के टूटे पेड़ के नीचे मरा पड़ा है। उसको मरा देख कर लोगों में खुशी की लहर दौड़ गयी। उन्होंने ढोल पीटना शुरू कर दिया।

ढोल की आवाज सुन कर राजा भी बाहर आया और गरुड़ को मरा देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने पूछा — "वह कौन है जिसने अनोडो को मारा है?"

राजा के शिकारियों में से एक शिकारी बाहर आया और राजा को झुक कर प्रणाम करके बोला — "महाराज, यह काम आपके इस गुलाम का है।"

राजा बोला — "अगर यह काम तुम्हारा है तो तुमको बहुत बड़ा इनाम मिलेगा। मैंने अनोडो को मारने वाले को अपना आधा राज्य देने का वायदा किया है और अगर अनोडो को तुमने मारा है तो वह आधा राज्य तुम्हारा है।"

लोगों ने इस समाचार को सुन कर बहुत खुशियाँ मनायीं और वे उस शिकारी को राजा के घर ले गये और उसको बहुत बढ़िया खाना खिलाया।

उसी समय एक कमजोर और थका हुआ सा आदमी अन्दर आया। उसके कपड़े फटे हुए थे और उसके पैर का एक जूता गायब था।

राजा उसके देखते ही बोला — "ओह यही तो वह अजनबी है जिसने अपना नाम ओनी बताया था और इस गरुड़ को मारने की इच्छा प्रगट की थी। पर दोस्त, तुमको बहुत देर हो गयी।"

ओनी बोला — "राजा साहब, अनोडो को मैंने मारा है। यह आदमी झूठ बोलता है।"

यह सुन कर राजा और उसके सरदारों में कानाफूसी होने लगी।

अन्त में राजा बोला — "अनोडो को तुमने मारा है इसका तुम्हारे पास क्या सबूत है?"

ओनी बोला — "पहली बात तो यह कि आप मेरी हालत देख रहे हैं। दूसरे अगर आप केवल इससे सन्तुष्ट नहीं हैं तो आप अपने आदमियों को वह जगह साफ करने लिये भेजें जहाँ वह मरा हुआ गरुड़ पड़ा है और टूटा हुआ कपास का पेड़ पड़ा है। वहाँ आपको मेरे पैर का एक जूता मिल जायेगा।"

राजा ने तुरन्त ही अपने कुछ आदमी उस जूते को ढूँढने के लिये भेजे। कुछ ही देर में वे ओनी का जादू का दूसरा जूता ढूँढ कर ले आये और बोले इस जूते को हमने मरे हुए बाज़ के पंख के नीचे पाया है।

ओनी बोला — "अगर आपको अभी भी विश्वास न हो रहा हो तो आप उसे अपने किसी भी आदमी को पहना कर देख लीजिये अगर यह उसके पैर में आ जाये तो।"

राजा ने सभी से वह जूता पहन कर देखने को कहा पर आश्चर्य, साधारण और सामान्य सा दिखायी देने वाला वह जूता किसी के भी पैर में नहीं आया।

जूता राजा के सामने रख दिया गया। ओनी ने दूर से ही जूते से कहा — "ओ जादू के जूते, अपने स्वामी के पैर में आ जाओ।" और सब लोगों ने देखा कि जूता चल कर ओनी के पास पहुँचा और जा कर उसके पैर में फँस गया।

ओनी के सच बोलने से राजा बहुत खुश हुआ और उसको अपने आधे राज्य का मालिक बनाया। शिकारी को मौत की सजा दे दी गयी।

उस रात बहुत दिनों बाद अजो शहर में घंटे नहीं बजे और लोग रात गये तक खुशियाँ मनाते टहलते रहे।



8 हयीना की माँ का दफ़न[28]

आज तो सारे जंगली जानवर एक दूसरे से डरते हैं पर हमेशा से ही ऐसा नहीं था। सभी आपस में मिलते जुलते थे, आपस में बात करते थे, एक दूसरे के सुख दुख में शामिल होते थे और इसी तरह एक दूसरे से बर्ताव भी करते थे जैसे आजकल के आदमी लोग करते हैं।

यह बदलाव तो बस अचानक ही आ गया है और वह भी तबसे जबसे कि हयीना की माँ मरी। तो लो सुनो कहानी जानवरों में आपस में एक दूसरे से नफरत और डर पैदा होने की।



पुराने समय में जानवरों के कई समूह थे। उनके कई सरदार थे जो उन पर राज करते थे। इन समूहों में एक समूह था माँस खाने वाले जानवरों का जिनका राजा था हयीना[29]।

वह बहुत ताकतवर था और अपनी ताकत का उसको घमंड भी बहुत था। उसको केवल अपने पर ही नहीं बल्कि अपने परिवार, अपने नाम और अपने रीति रिवाज सभी पर बहुत घमंड था।

[28] The Funeral of the Hyena's Mother (Tale No 8) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[29] Hyena – pronounced as Hayeenaa. Hyena is tiger like animal. See his picture above

सरदार हयीना का पिता तो बेटे हयीना की छोटी उम्र में ही मर गया था इसलिये हयीना की माँ ने ही उसको पाल पोस कर बड़ा किया था।

उसने उसको शिकार करना सिखाया खतरों से बचना सिखाया, इसलिये यह सरदार हयीना अपनी माँ को बहुत प्यार करता था और उसकी बहुत इज़्ज़त करता था।

एक दिन हयीना की माँ चल बसी। सरदार हयीना आपनी माँ की मौत से बहुत परेशान हुआ पर उसने तय किया कि वह अपनी माँ को इतने शानदार ढंग से दफ़नायेगा कि जैसा अब तक जानवरों के देश में किसी भी जानवर का दफ़न नहीं हुआ होगा।

उसने सब जानवरों को बुलाया और कहा कि वे उसकी माँ के लिये एक शानदार दफ़न की तैयारी करें।

सो पहले हयीना की माँ का एक शानदार दफ़न होना था और फिर बाद में बढ़िया दावत होनी थी और उसके बाद नाच गाने का प्रोग्राम था। इस नाच को भी कई दिन तक चलना था।

यह सब प्रोग्राम बनाने के लिये जानवरों की एक कमेटी काम कर रही थी। परन्तु हयीना को लगा कि इस खास काम को करने के लिये कोई खास जानवर ही होना चाहिये।

इसलिये उसने अपने दो दोस्तों चीता और शेर को बुलाया कि वे उसकी माँ के दफ़न की सारी रस्मों को पूरा करें और आखीर में 10 जानवरों की बलि दे कर इन रस्मों को खत्म करें।

ऐसा करने से उनको अच्छा खाना भी मिलेगा, देवता भी खुश होंगे और माँ की आत्मा को भी शान्ति मिलेगी। साथ में यह भी तय किया गया कि नाच गाने के बीच में तीनों, यानी हयीना, चीता और शेर उन 10 जानवरों पर कूदेंगे और उनको मार डालेंगे।

अगले दिन दफ़न की रस्मों की तैयारियाँ होने लगीं। जंगल के सारे जानवर आये। सभी जानवर नाचते गाते हयीना की माँ को दफ़नाने के लिये ले चले।

किसी भी जानवर को 10 बलियों का पता नहीं था क्योंकि यह बात गुप्त रखी गयी थी इसलिये अचानक जब हयीना, चीता और शेर अपने अपने शिकारों पर कूदे तो सभी जानवरों में भगदड़ मच गयी। हयीना ने एक भेड़ मारी, शेर ने एक चिड़िया मारी और चीते ने एक बकरा मारा।

लेकिन इतनी ही देर में सारे जानवर भाग लिये और जब ये तीन जानवर बलि के लिये मारे जा रहे थे तो दूसरे जानवरों के साथ साथ बचे हुए सात बलि वाले जानवर भी भाग गये।

जब ये तीनों जानवर मर गये तो हयीना, चीता और शेर हयीना की माँ के शरीर के साथ अकेले रह गये। सरदार हयीना यह सब देख कर बोला कि चलो अब हम लोग खुद ही बाकी की रस्में पूरी कर लेते हैं।

परन्तु शेर और चीते के मुँह में तो खून का स्वाद लग चुका था। वे बोले — "हयीना, अब यह काम तुम खुद ही कर लो हम तो अब और जानवरों की खोज में जाते हैं।"

और वे और शिकारों की खोज में चल दिये।

उस दिन से आज तक इतने सारे जानवर फिर कभी इस तरह किसी भी सामाजिक मौके पर नहीं मिले। और सभी जानवर हयीना परिवारों को नफरत से देखते हैं और जहॉ तक होता है उनसे अलग ही रहते हैं।

शेर और चीते के परिवारों को भी कोई पसन्द नहीं करता। सभी उनसे डरते हैं क्योंकि वे अभी भी हयीना की मॉ को दफनाने के लिये बाकी बचे हुए शिकारों की तलाश में घूम रहे हैं ताकि वे उनकी बलि चढ़ा सकें।



9 बलि को स्वर्ग भेजना[30]

एक बार बहुत दिनों तक धरती पर बारिश नहीं हुई सो कोई फसल भी नहीं हुई। लोग भूखों मरने लगे। इस पर लोगों ने सोचा कि अगर वे देवताओं को बलि चढ़ायेंगे तो शायद वे खुश हो कर धरती पर बारिश भेज दें।

लोगों ने एक बकरा मारा और बलि के लिये पूरी तैयारियाँ कर लीं। उन्होंने मरे हुए बकरे को एक टोकरी में रख दिया। सारे पक्षियों को इस रस्म के लिये बुलाया गया था और फिर उसमें से एक चिड़िया को उस बलि को स्वर्ग में ले जाने के लिये चुना जाना था।

पर जब सारे पक्षी वहाँ आये तो सभी ने बलि को स्वर्ग ले जाने से मना कर दिया क्योंकि स्वर्ग बहुत दूर था और स्वर्ग जाने का मतलब था लम्बा और थकान पैदा करने वाला सफर।



इसके अलावा यह काम था भी बहुत छोटा। इस वजह से कोई इस काम को करना भी नहीं चाहता था।

आखीर में एक गिद्ध[31] ने कहा कि — "ठीक है, मैं यह बलि ले कर स्वर्ग जाऊँगा।"

---

[30] Taking a Sacrifice to Heaven (Tale No 9) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[31] Translated for the word "Vulture". See its picture above.

सभी उसको बुरी शक्ल वाला समझते थे और गन्दा भी जो हर समय गॉव के कूड़े के ढेरों में मुँह मारता फिरता था।

जब गिद्ध उस बलि को ले जाने को राजी हो गया तो लोगों ने आग जलायी और उन्होंने गिद्ध को गाते हुए सुना —

यह कैसी लड़ाई है धरती और आसमान की
कि बारिश धरती पर नहीं आती और फसल नहीं उगती
आसमान कहता है कि मैं बड़ा हूँ और धरती कहती है कि मैं बड़ी हूँ
परन्तु कोई भी बलि ले जाने के लिये तैयार नहीं है
आखीर में जब सबने मना कर दिया
तो केवल गिद्ध ही यह काम करने को तैयार हुआ

उसने बकरे की टोकरी और आग उठायी और आसमान की तरफ चल पड़ा। सभी उसको जाते देखते रहे जब तक कि वह आसमान में एक छोटी सी बिन्दी की तरह नहीं दिखायी नहीं पड़ने लगा। कुछ देर बाद वह नीले आसमान से भी गायब हो गया।

उसके कुछ देर बाद ही तेज़ हवा चली, आसमान काला हो गया और बारिश के पानी से भरे काले बादलों से भर गया।

बारिश की बूँदें टपकाने लगीं। साथ में बिजली भी चमकने लगी और बादल तो ज़ोर ज़ोर से गरज ही रहे थे। और फिर बारिश इतनी ज़्यादा हुई कि धरती पर नदियॉ बहने लगीं।

इसका मतलब यह था कि देवता ने उनकी बलि स्वीकार कर ली थी। वे सब बहुत खुश हुए।

जब गिद्ध वापस लौटा तो उसने देखा कि उस भारी बारिश ने तो उसका सारा घर ही तोड़ दिया है। सो वह एक एक करके सारे पक्षियों के पास शरण माँगने गया क्योंकि उसने उन सभी की सहायता की थी।

परन्तु सभी मतलबी थे। किसी ने भी उसको अपने घर में नहीं ठहराया। यहाँ तक कि आदमियों ने भी उसको भुला दिया और अपने घरों से बाहर निकाल दिया।

गिद्ध थकान, लम्बे सफर, बारिश में भीगने और बिना घर के होने की वजह से अब और भी ज़्यादा बुरी शक्ल का लगने लगा था। बलि की आग ने उसके सारे पंख जला दिये थे।

उस दिन से आज तक कोई पक्षी गिद्ध को अपने पास नहीं बिठाता। वह आज भी गाँव के बाजारों में, कूड़े के ढेरों पर, जंगल में लगी आग के आस पास ही घूमता रहता है और वहाँ भी वह बेचारा अकेला ही होता है।



10 घोंघा और चीता[32]



एक बार जानवरों के किसी देश में एक चीता[33] रहता था। उसके पाँच बच्चे थे। इस चीते को कोई भी पसन्द नहीं करता था क्योंकि वह बड़ा चालाक और खतरनाक चीता था।



एक दिन चीते ने कछुए नाई को बुलवाया और उससे कहा — "कछुए भाई, मेरे पाँचों बच्चों के बाल काट दो।" सुन कर कछुआ अन्दर ही अन्दर कसमसाया पर बोल कुछ नहीं सका।

इस पर चीता गरज कर बोला — "ए कछुए, यह मैंने तुम्हें कितनी इज़्ज़त दी है कि तुमको मैंने अपने बच्चों के बाल काटने के लिये बुलाया और तुम्हारे दिमाग ही नहीं मिल रहे हैं। तुम हो कि सोच ही रहे हो।

मगर उससे पहले तुम्हें मेरे बाल काटने होंगे। मैं इसके लिये तुम्हें कुछ भी नहीं दूँगा क्योंकि तुम हमारे परिवार के बाल काट रहे

[32] The Snail and the Leopard (Tale No 10) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[33] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

हो यही इज़्ज़त तुम्हारे लिये क्या कम है। देखो ठीक से बाल काटना वरना तुम्हारी खैर नहीं।"

जब कछुए ने देखा कि अब कोई बचाव का मौका नहीं है तो कछुआ बड़ी नम्रता से बोला — "सरकार, मैं बिना कुछ लिये ही आपके बाल काटने के लिये तैयार हूँ क्योंकि यह तो वाकई मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की बात है कि मैं आपके परिवार के बाल काट रहा हूँ। पर सरकार मेरी एक प्रार्थना है।"

चीते ने पूछा — "वह क्या?"

कछुआ बोला — "मैं आपके बाल आपको पेड़ की उस ऊपर वाली टहनी पर बिठा कर काटना चाहता हूँ। सभी जानवर जब आपको इस तरह उस ऊपर वाली टहनी पर बाल कटाते देखेंगे तो उनके ऊपर बहुत अच्छा असर पड़ेगा।"

चीता बोला — "वाह, यह तो बहुत ही सुन्दर विचार है।"



यह कह कर चीता पेड़ के ऊपर चढ़ा गया और उसकी ऊपर वाली टहनी पर पाँव फैला कर आराम से लेट गया। पीछे पीछे कछुए ने भी अपने कदम बढ़ाये।

चीते ने एक जँभाई ली, फिर अपनी पूँछ फटकारी और फिर अपनी आँखें बन्द करते हुए बोला — "कछुए भाई, बाल काटने में ज़्यादा देर नहीं लगाना ज़रा जल्दी काटना।"

"जी सरकार।"

कछुआ दिखावे के लिये तो चीते के बाल काटने में लगा रहा पर असल में उसने ऐसा कुछ भी नहीं किया बल्कि उसने धीरे धीरे चीते के काफी बाल उस टहनी से बाँध दिये जिस टहनी पर वह बैठा था ताकि उस टहनी से वह अच्छी तरह बँध जाये।

फिर उसने अपना चाकू जान बूझ कर नीचे गिरा दिया और उसको उठाने का बहाना बना कर और माफी माँग कर वह नीचे उतर आया।

उसने चीते के पाँचों बच्चों को उनके पिता के सुन्दर बालों को देखने के लिये बुलाया पर जब वे बच्चे अपनी गुफा से बाहर आये तो उसने उनकी खूब पिटाई की।

अपने बच्चों को पिटता देख कर चीता बड़ी ज़ोर से गरज कर उठा परन्तु तुरन्त ही उसकी यह गरज दर्द भरी चीखों में बदल गयी क्योंकि उसके बाल टहनी से बँधे होने की वजह से खिंच रहे थे और वह नीचे नहीं उतर पा रहा था।

चीते के बच्चे किसी तरह जान छुड़ा कर जंगल में भाग गये। उधर चीते की गरज सुन कर जंगल के दूसरे जानवर चीते पर हँसने लगे।

चीते ने उनसे अपने आपको उस पेड़ से छुड़ाने की बहुत प्रार्थना की परन्तु किसी ने उसकी बात नहीं सुनी और उसकी किसी भी तरह की सहायता करने से इनकार कर दिया।

इस दशा में चीता उस टहनी से पूरे दो दिन बँधा रहा और सारे जानवर उसे चिढ़ाते रहे। अब तो उसे भूख भी लग आयी थी।



दूसरे दिन शाम को चीते ने देखा कि एक घोंघा पेड़ की शाखों पर रेंगता हुआ चढ़ा चला आ रहा है। उसने उससे भी सहायता की भीख माँगी और उसकी इस सहायता के बदले में उसकी मनचाही चीज़ देने का वायदा किया।

घोंघा इस शर्त पर राजी हो गया कि छूट जाने के बाद चीता उसे खायेगा नहीं। चीता भी इस बात पर राजी हो गया कि पेड़ से छूट जाने के बाद वह घोंघे को खायेगा नहीं।

घोंघे ने धीरे धीरे चीते के सारे बाल खोल दिये और चीते को पेड़ से आजाद कर दिया।

जब चीता आजाद हो गया तो बहुत ज़ोर से गरजा और पेड़ से नीचे कूद गया और घोंघे से बोला — "दोस्त, अब मैं हर एक को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि वे ज़िन्दगी भर नहीं भूलेंगे। वे फिर कभी भी चीते परिवार का अपमान करने का साहस नहीं करेंगे।

मैंने किस तरह दो दिन तक अपने इच्छाओं को कुचला है यह तुम किसी तरह समझ ही नहीं समझ सकते। अब सबसे पहले तुम मरने के लिये तैयार हो जाओ।

घोंघा बोला — "पर चीते भाई, तुमने तो मुझे न मारने का वायदा किया था।"

चीता बोला — "चीता कभी सौदेबाजी नहीं करता। तुमने यह सबक देर से सीखा। अब मैं पेड़ के नीचे हूँ और सबसे पहले मैं तुम्हें ही मारूँगा।"

अब घोंघे के पास कोई चारा नहीं था। उसने यह सुन कर सूर्य देवता को पुकारा — "ओ ओलोजा[34], मुझे बचाओ, मैं मरा।"

ओलोजा ने उसकी पुकार सुन ली। तुरन्त ही उसने ग्रहण को भेज कर सूर्य ग्रहण लगवा दिया। इससे सारी धरती पर अँधेरा हो गया। चीते को अँधेरे में घोंघा दिखायी ही नहीं पड़ा और अँधेरे में घोंघा चुपचाप खिसक गया।

उस दिन से चीता अपने बाल नहीं कटवाता, किसी से वायदे नहीं करता और अपने अपमान का बदला लेने के लिये सदा ही जंगल में कछुए की खोज में घूमता रहता है।



[34] Oloja – name of the Nigerian god

11 कछुए की बलि क्यों दी जाती है[35]



एक बार धरती पर बड़ा भारी अकाल पड़ा क्योंकि कई सालों से वहाँ बारिश ही नहीं हुई थी। सारी धरती सूख गयी थी और उसमें दरारें पड़ गयीं थीं।

उपज हो नहीं रही थी। जमा करके रखा गया खाना भी अब सब खत्म हो चुका था और लोग सड़कों पर भूखे मर रहे थे। आदमी लोग ही नहीं इस अकाल से जानवर भी बहुत परेशान थे।

इसी परेशानी में एक दिन एक कछुआ कुछ खाने की तलाश में निकला। वह धीरे धीरे सड़क के किनारे इधर उधर देखता हुआ शहर की तरफ चला जा रहा था कि उसको बैंगन की एक डंडी पड़ी मिली जो हरी और ताजा थी।

उसको देख कर कछुआ सोचने लगा कि "ओह आज भी लोगों के पास फेंकने के लिये खाना है। ऐसा आदमी कौन है और यह डंडी कहाँ से आयी?"

तभी उसको सूखी मिट्टी में किसी आदमी के पैरों के निशान भी नजर आये।

---

[35] Why Tortoises Are Sacrificed (Tale No 11) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

एक अक्लमन्द कछुआ होने के नाते उसने उन निशानों के पीछे पीछे चलना शुरू कर दिया और चलते चलते वह शहर में एक आदमी के घर पहुँच गया।

वह उसके घर के दरवाजे पर बैठ गया और उस आदमी के बाहर निकलने का इन्तजार करने लगा। इन्तजार करते करते उसे तीन दिन बीत गये तब कहीं जा कर उसमें से एक आदमी बड़ा सा चाकू हाथ में लिये हुए बाहर निकला।

कछुए को पता चल गया कि वह आदमी एक किसान था सो उसने बिल्कुल चुपचाप उसके पीछे पीछे चलना शुरू कर दिया। चलते चलते वह किसान और कछुआ एक बड़ी नदी के किनारे पर आ गये।

उस नदी में कुछ भी नहीं था बस बड़ी बड़ी चट्टानों के बीच से थोड़ा बहुत पानी टपक रहा था। किसान उस नदी के किनारे किनारे चल कर एक ऐसी जगह आ गया जहाँ पानी किनारे के बिल्कुल पास से बह रहा था। यहीं कछुए ने देखा कि किसान ने कुछ बैंगन बो रखे थे।

किसान को कछुए के उसके पीछा करने के बारे में कुछ पता नहीं था। कछुआ वहाँ किसान को वहाँ काम करते देखता रहा। किसान ने वहाँ जमीन खोदी, पेड़ों को पानी दिया, क्यारी की सफाई की और जब उसका काम वहाँ खत्म हो गया तो उसने कुछ सब्जी तोड़ी और घर चला गया।

यह सब देख कर कछुए ने सोचा कि जब तक अकाल खत्म होता है वहा यहीं रहेगा।

तीन दिन बाद जब किसान अपने खेत पर दोबारा आया तो उसको यह देख कर बड़ा गुस्सा आया कि किसी ने उसके बैंगन चुरा किये हैं।

"कौन चुराता रहा है मेरे बैंगन?" किसान चिल्लाया।

इधर कछुए को गाना बहुत अच्छा लगता था सो तीन दिन में खाने और सोने के अलावा उसने बाँस के एक छोटे से टुकड़े से अपने लिये एक बाँसुरी बना ली थी।

जब किसान चिल्लाया तो कछुए ने कपास के पेड़ के पीछे से बाँसुरी बजा कर गाना शुरू किया —

इन बैंगनों का मालिक कौन है, ये बैंगन इतने ताजा और हरे
इस अकाल के समय में कौन है जो मुझे खाना लेने के लिये कोस रहा है
वह तो किसान है जो मालिक है बहुत सारे बैंगनों का, ताजा और हरे
उसके पास तो बहुत हैं पर देने के लिये कुछ भी नहीं जब धरती पर अकाल पड़ा है।

किसान को यह आवाज सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि उसको कहीं कोई दिखायी नहीं दे रहा था। उसको लगा कि जैसे कपास के पेड़ की जड़ गा रही थी। सो बजाय इसके कि वह यह छान बीन करता कि कौन गा रहा है वह उलटे पैरों भाग लिया और अपने घर पहुँच कर ही दम लिया।

अगले दिन उसने गाँव के सरदार को सारी बातें बतायीं। सरदार ने बिजली के देवता शैंगो[36] की पूजा की और उससे प्रार्थना की कि वह तुरन्त ही उस कपास के पेड़ पर गिर कर उस जला दे। शैंगो ने सरदार की प्रार्थना सुन ली और बिजली के रूप में उस कपास के पेड़ की तरफ चल दिया।

उधर कछुए ने देखा कि शैंगो नदी पार से चला आ रहा है। उसको लगा कि किसान फिर से आ रहा है तो उसने सोचा कि वह किसान को फिर से गीत गा कर भगा देगा। सो जब वह पास आ गया तो उसने फिर से अपनी बाँसुरी उठायी और गाना गाना शुरू किया।

शैंगो ने जब कछुए का गाना सुना तो उसे आश्चर्य भी हुआ और डर भी लगा कि कपास के पेड़ की जड़ में तो उसका कोई भाई या रिश्तेदार नहीं रहता था फिर यह गाना कौन गा रहा था?

यही सोच कर उसने अपनी वह बिजली नदी में छोड़ दी और किसान की तरह ही वहाँ से भाग खड़ा हुआ। शैंगो ने जा कर जब अपने देवता भाइयों को यह कहानी सुनायी तो किसी ने उसका विश्वास ही नहीं किया।

लोहे के देवता ओगुन[37] ने कहा — “कपास के पेड़ की जड़ में तो कोई भूत भी नहीं रहता फिर यह कौन था जो वहाँ गाना गा रहा

---

[36] Shango – the god of Lightening

[37] Ogun – the god of Iron

था।" कह कर वह खुद यह सब देखने आया पर वह क्योंकि बिना आवाज किये गया था इसलिये उसके आने पता कछुए को नहीं चल सका और कछुआ चुपचाप ही बैठा रहा।

ओगुन बोला — "मैं तो पहले ही कहता था कि यहाँ कपास के पेड़ में कोई नहीं रहता।"

उसी समय वहाँ किसान आ पहुँचा। ओगुन ने किसान से कहा — "तुम और शैंगो दोनों ही गलत हो। यहाँ इस कपास के पेड़ में कोई भूत नहीं है।"

किसान बोला — "यह भूत तब बोलता है जब मैं कुछ खास शब्द बोलता हूँ।"

ओगुन ने पूछा — "कौन से खास शब्द?"

किसान बोला — "कौन चुराता है मेरे बैंगन?"

यह आवाज सुन कर कछुए की आँख खुल गयी और वह बोला "ओह यह किसान यहाँ फिर से आ गया?"

और अलसाते हुए उसने अपनी बाँसुरी बजानी और गाना गाना शुरू कर दिया। अब क्या था ओगुन और किसान दोनों ही वहाँ से भाग खड़े हुए।

इस तरह बहुत सारे देवता इस कपास के पेड़ के अजीब भूत को देखने के लिये आये।

वे पहले किसान को बुलाते जो उनको खेत पर ले जाता और वहाँ वे उसके खास शब्दों की सहायता से भूत का गाना सुनते।

और क्योंकि उनको वहाँ कोई दिखाई नहीं देता तो वे वहाँ से भाग खड़े होते।

यह सब करते करते किसान अब थक चुका था। उधर शहर में दूसरे लोगों को भी उसके खेत का पता लग चुका था। इसके अलावा अब उसके बैंगन भी जल्दी जल्दी गायब हो रहे थे।

आखीर में दवाओं के देवता ओसाँयीं[38] ने कहा — "ठीक है मैं जा कर देखता हूँ कि यह सब क्या चक्कर है।"

उसने ओगुन से उसका लोहार उधार लिया जिसका नाम था लाडी[39]। और वह लाडी और किसान के साथ उसके खेत की तरफ चल दिया।

अबकी बार किसान बिल्कुल भी नहीं जाना चाहता था क्योंकि कपास के पेड़ के भूत ने कई देवताओं को भगा दिया था और वह उस भूत के पास रहने की बजाय अपनी सारी सब्जी खो देने के लिये तैयार था। पर उसे जाना ही पड़ा।

जब वे सब कपास के पेड़ के पास पहुँचे तो ओसाँयीं ने लाडी से आग जलाने के लिये कहा और उस आग में उसने एक कील रख दी।

---

[38] Osanyin – the god of Herbs and Medicines
[39] Ladi – the blacksmith of god Ogun, the god of Iron

कछुआ यह सब अपने छिपी जगह से देख रहा था। वह यह सब देखने में इतनी उत्सुकता से लीन हो गया कि अपना गाना गाना ही भूल गया।

जब कील गर्म हो कर लाल हो गयी तो ओसॉयीं ने किसान से वे खास शब्द बोलने के लिये कहा जो वह कछुए का गाना सुनने के लिये बोला करता था। किसान ज़ोर से बोला — "कौन चुराता है मेरे बैंगन?"

इतने में कछुए ने सोचा कि इस सबके चक्कर में मैं तो वह किसान और उसके साथियों को भगाने वाला गीत गाना ही भूल गया सो तुरन्त ही उसने अपनी बॉसुरी उठायी और गीत गाना शुरू कर दिया।

गीत सुन कर किसान बोला — "यह आखिरी बार है जब मैं इस भूत का गाना सुनने आया हूॅ।" और वहॉ से भाग लिया।

ओसॉयीं और लाडी भी भाग लिये परन्तु पूरी तौर पर नहीं भागे। वे जा कर पास की एक झाड़ी में छिप गये यह देखने के लिये कि आगे क्या होता है।

गाना गाने के बाद कछुआ मन ही मन हॅसा कि कितना अच्छा है मेरा यह जादू का गीत जो सबको भगा देता है। चल कर देखता हूॅ कि यह लाल लाल क्या है और फिर कुछ बैंगन खाता हूॅ। यह सोच कर कछुआ उस कपास के पेड़ की जड़ से बाहर निकला।

ओसॉयीं और लाडी ने उस अजीब भूत को पेड़ से निकलते हुए देखा और जब कछुआ बैंगन खा रहा था तो उन्होंने उस लाल कील को उसके पेट में चुभो दिया। इससे कछुआ तुरन्त ही मर गया।

ओसॉयीं ने कहा — "यह कछुआ तो मेरा है मैं खाऊँगा।"

तभी से दवाओं के देवता को कछुए की बलि दी जाती है।



12 मोटिनू और बन्दर[40]

एक बार योरुबालैंड के ओवो शहर[41] में एक लड़की रहती थी जिसका नाम था मोटिनू[42]। मोटिनू बहुत ही ज़्यादा सुन्दर थी इसलिये बहुत सारे लड़के उससे शादी करने की इच्छा प्रगट कर चुके थे पर न जाने क्यों मोटिनू ने सभी को मना कर दिया था।

एक दिन वह पास के कुँए से पानी भर रही थी कि कुँए के पास उसने एक बड़े सुन्दर नौजवान को बहुत अच्छे कपड़े पहने बैठे देखा।

मोटिनू उसको देख कर आश्चर्य में पड़ गयी। इसलिये नहीं कि वह बहुत बहुत सुन्दर था या फिर वह बहुत अच्छे कपड़े पहने था बल्कि इसलिये कि वह नौजवान उसके लिये बिल्कुल अजनबी था। उसको विश्वास था कि वह ओवो शहर का नहीं था।

पर फिर उसने अपना पानी भरा और अपने घर वापस लौटने लगी। जब वह अपना पानी भर कर वापस लौट रही थी तो वह नौजवान उससे बोला — "मोटिनू, क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

मोटिनू ने आश्चर्य से पूछा — "मगर तुम मेरा नाम कैसे जानते हो?"

---

[40] Motinu and the Monkey (Tale No 12) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, West Africa.

[41] Owo City of Nigeria

[42] Motinu – name of the Nigerian girl who did not want to marry anybody

वह नौजवान बोला — "जो लड़की सारे लड़कों से शादी करने से इनकार कर दे उसे कौन नहीं जानेगा? मैं यहाँ अजनबी हूँ और मैं बहुत अमीर भी हूँ। मेरे बहुत सारे दोस्त भी हैं।

हालाँकि मेरे दोस्त इस शहर के नहीं हैं परन्तु वे सब बड़े ताकतवर हैं और चारों तरफ उनका बहुत दबदबा है। मेरा घर यहाँ से बहुत ज़्यादा दूर नही है। क्या तुम मेरे घर चलोगी और मेरे घर वालों से मिल कर मेरी पत्नी बनना पसन्द करोगी?"

मोटिनू उसको पसन्द करने लगी थी सो वह उसके घर जाने के लिये राजी हो गयी। वह जल्दी जल्दी घर लौटी, उसने अपना थोड़ा सा सामान लिया और उस अजनबी के साथ चल दी।

शहर से बाहर निकल कर वे जंगल में घुस गये। वह नौजवान बड़ी तेज़ी से चल रहा था और मोटिनू उसके साथ चल नहीं पा रही थी।

काफी दूर जाने के बाद भी जब उस नौजवान का घर नहीं आया और मोटिनू चलते चलते हाँफने लगी तो वह रुक कर बोली — "कहाँ है तुम्हारा घर? हम लोग तो बहुत दूर निकल आये हैं।"

वह नौजवान जल्दी जल्दी चलते हुए बोला — "बस तुम मेरे पीछे पीछे आती रहो मोटिनू। मेरा घर अब ज़्यादा दूर नहीं है।"

आखिर मोटिनू चलते चलते जब बहुत थक गयी तो उस नौजवान ने उसे घास पर बिठा दिया। मोटिनू को यह जगह कुछ

नयी नयी सी लगी क्योंकि वह इधर पहले कभी नहीं आयी थी पर फिर भी वह उस नौजवान के साथ चलती रही।

कुछ दूर जा कर वह नौजवान बोला — "तुम यहीं बैठ कर मेरा इन्तजार करो मैं अपने परिवार वालों को यहीं बुला कर ले आता हूँ।" और यह कह कर वह भागता दौड़ता जंगल में गायब हो गया।

मोटिनू को यह सब देख कर कुछ घबराहट सी हुई और वह पछताने लगी कि वह इस अजनबी के साथ आयी ही क्यों। उसकी तेज़ चाल ढाल से उसको कुछ ज़रा ज़्यादा ही डर लग रहा था पर अब क्या हो सकता था अब तो वह उसके साथ आ ही गयी थी।



वह यही सब सोच रही थी कि वह नौजवान जहाँ गायब हुआ था उसी जगह उसको एक बहुत बड़ा बन्दर दिखायी दिया। वह कूदता फाँदता आया और आ कर मोटिनू के पास बैठ गया। मोटिनू उसकी तरफ आश्चर्य से देखने लगी।

अचानक वह बोला — "मोटिनू मैं ही तुम्हारा पति हूँ। मैं यहाँ रहता हूँ और अब तुम मेरी पत्नी की तरह यहीं रहोगी। तुमने देखा कि मेरे पास कितनी ताकत है कि मैं अपने आपको जब चाहूँ आदमी के रूप में बदल सकता हूँ और जब चाहे मैं बन्दर बन सकता हूँ। लेकिन मैं अपने दोस्तों के बीच बन्दर बन कर रहना ही ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

यह सब सुन कर मोटिनू तो बहुत ही डर गयी और रोने लगी। इस पर बन्दर ने उसे अपने अगले पंजों से थपथपाया।

मोटिनू को लगा कि अगर उसने अपनी देखभाल ठीक से नहीं की तो यह बन्दर तो उसको मार ही डालेगा इसलिये उसने तय किया कि वह अभी तो इस अजीब जानवर की हर बात मान लेगी पर बाद में उससे पीछा छुड़ाने की कुछ और तरकीब सोचेगी। उसने रोना छोड़ कर फिर ऐसा ही किया।

बन्दर तो यह देख कर खुशी के मारे किलकारी मारने लगा और कूदने लगा। उसकी किलकारी की आवाज सुन कर दूसरे बन्दरों ने भी कहीं दूर से किलकारियाँ मारीं और कुछ ही देर में तो वहाँ बहुत सारे बन्दर इकट्ठा हो गये।

सब वहीं घास पर चुपचाप शान्ति से बैठ गये। कुछ तो मोटिनू को इधर उधर से देख रहे थे, कुछ घास से खेल रहे थे और कुछ अक्लमन्दों की तरह गम्भीर बने बैठे थे।

जब वहाँ बहुत सारे बन्दर इकट्ठा हो गये तो वह बोलने वाला बन्दर यानी मोटिनू का पति एक पेड़ की ऊँची सी डाल पर जा कर बैठ गया और सब बन्दरों की तरफ मुँह करके कुछ बोला।

वह क्या बोला यह तो मोटिनू की समझ में नहीं आया परन्तु उसके हावभाव से लग रहा था वह उन बन्दरों से उसी के बारे में कुछ कह रहा था। जब वह अपनी बात कह चुका तो सभी बन्दरों ने देर तक अपनी गरदन हिलायी।

उसके बाद मोटिनू की तरफ मुँह करके उसने कहा — "मेरा परिवार इस बात पर राजी हो गया है कि तुम यहाँ मेरी पत्नी की तरह रह सकती हो। अब तुम मेरी बात ज़रा ध्यान दे कर सुनो जो मैं तुमसे कहता हूँ फिर तुम पर कोई मुसीबत नहीं आयेगी।



तुमको यहीं इन जंगलों में मेरे साथ रहना पड़ेगा और तुम कभी भी आदमी और उसके शहर की तरफ नहीं लौट पाओगी। हम लोग तुमको एक ढोल देंगे जब हम नाचेंगे तब तुम वह ढोल बजाओगी।

तुमको यहाँ कोई खास काम नहीं करना पड़ेगा क्योंकि हम लोग आदमी की तरह पका हुआ खाना नहीं खाते। हाँ तुमको हमारे लिये ताजा जंगली फल और पानी जरूर लाना पड़ेगा।"

और मोटिनू वहाँ बन्दरों के साथ रहने लगी। उन्होंने उसको एक लकड़ी का ढोल ला दिया था। रोज सुबह वह ढोल बजाती और बन्दर नाचते।



फिर वह पानी भरने और ताजा भुट्टे[43] लाने जाती। खा पी कर बन्दर जंगल में घूमने चले जाते और मोटिनू को तीसरे पहर में कुछ आराम मिल जाता।

[43] Translated for the words "Ear Corn". See its picture above.

शाम को वापस आ कर वे बन्दर मोटिनू के ढोल पर फिर से नाचते। हालाँकि वे बन्दर मोटिनू को कुछ कहते नहीं थे फिर भी मोटिनू उनसे कुछ डरी डरी सी रहती और उनको खुश रखने के लिये जो कुछ भी कर सकती थी करती रहती।

एक दिन मोटिनू जब बन्दरों के लिये भुट्टे इकट्ठा कर रही थी तो उसने एक शिकारी को पास से गुजरते हुए देखा। उसको देख कर मोटिनू बहुत ही खुश हुई। उसने धीरे से उस शिकारी को पुकारा।

उधर वह शिकारी भी इतनी सुन्दर लड़की को शहर से इतनी दूर जंगल में अकेली देख कर हैरान रह गया। मोटिनू ने उससे कहा कि वह बड़ी मुश्किल में थी और उसे उसकी सहायता चाहिये।

इस डर से कि कहीं बन्दर उसको देख न लें उसने उस शिकारी को अगले दिन तीसरे पहर के समय आने के लिये कहा।

अगले दिन वह शिकारी तीसरे पहर के समय आया। मोटिनू उस समय अकेली थी। उसने शिकारी को अपनी सारी कहानी सुनायी और कहा कि अगर वह उसको इन बन्दरों के चंगुल से छुड़ा लेगा तो वह उससे शादी भी कर लेगी।

शिकारी ने उसकी सब बातें बड़े ध्यान से सुनी और जो कुछ भी वह उसके लिये कर सकता था करने का वायदा किया। शिकारी ने मोटिनू से कहा कि वह बन्दरों के साथ ऐसे ही रहती रहे जैसे वह अब तक रह रही थी और वह उससे बाद में आ कर मिलता है।

ओवो लौटने पर शिकारी ने एक बढ़ई को बुलाया और उसको मोटिनू के बाल बनाने का ढंग बताया और चेहरे के कुछ निशान बताये। और उससे कहा कि वह मोटिनू की शक्ल की लकड़ी की आठ छोटी छोटी मूर्तियॉ बना दे।

जब वे मूर्तियॉ बन गयीं तो उनको मोटिनू जैसा रंगा गया। शिकारी उन मूर्तियों को ले कर मोटिनू के पास गया और उससे अकेले में मिला।

वहॉ से उसने मोटिनू को लिया और उसको ले कर ओवो की तरफ जल्दी जल्दी चला। हर कुछ मील के बाद वह मोटिनू की एक मूर्ति सड़क पर डालता जाता था।

उस शिकारी का नाम था ओगुनयेमी[44]। उसको यह मालूम था कि जब भी बन्दर उनका पीछा करेंगे तो ये मूर्तियॉ उनको ओवो पहुँचने में देर लगायेंगी। और शिकारी ने ठीक ही सोचा था।

कुछ देर बाद जब बन्दर शाम के नाच के लिये घर लौटे तो उन्होंने देखा कि वहॉ तो कोई भी नहीं है। ढोल भी चुपचाप एक तरफ को पड़ा है और मोटिनू का भी कहीं पता नहीं है। गुस्से में भर कर वे सब ओवो की तरफ चल दिये।

कुछ दूर जाने पर रास्ते में उनको मोटिनू की एक मूर्ति पड़ी



[44] Ogunyemi – name of a Nigerian man

मिली। उनको लगा कि वह मोटिनू थी। उन्होंने उसको उठा लिया और उसे उत्सुकता से देखना और उसके बारे में बात करना शुरू कर दिया।

एक बोला — "यह क्या है जो मोटिनू से इतनी ज़्यादा मिलती जुलती है?"

वे लोग जब उस मूर्ति को उलट पलट कर देख रहे थे तो बड़े अक्लमन्द लग रहे थे। उन्होंने उसको जमीन पर भी लुढ़काया, उससे खेले भी परन्तु उनको यह किसी तरह भी पता न चल सका कि वह चीज़ क्या थी।

जब वे उससे खेलते खेलते थक गये तो उन्होंने उसको एक झाड़ी में फेंक दिया और मोटिनू को ढूँढने आगे चले।

आगे चल कर उनको मोटिनू की दूसरी मूर्ति मिली। उसको देख कर उनमें और ज़्यादा बातें और बहस होने लगीं। कुछ बोले कि यह तो वही चीज़ है जो उन्होंने पहले देखी थी और जादू से यहाँ उनके सामने फिर से आ गयी है।

मामला सुलझाने के लिये वे लोग फिर से पहली जगह गये और उस फेंकी हुई मूर्ति को वहीं पा कर सन्तुष्ट हो कर फिर आगे बढ़े।

इस तरह आगे मिलने वाली हर मूर्ति उनके गुस्से को बढ़ाती रही। आठवीं मूर्ति तक आते आते उनका गुस्सा इतना ज़्यादा बढ़ गया कि उन्होंने उसको खूब कुचला खूब कुचला और तोड़ कर फेंक दिया।

इतनी देर में मोटिनू और ओगुनयेमी दोनों उन बन्दरों के चंगुल से निकल कर ओवो पहुँच गये। पर इतना सब करने के बाद भी वे केवल ओवो तक ही पहुँच पाये थे कि उन्होंने अपने पीछे आती हुई बन्दरों की ज़ोर की किलकारियाँ सुनी। वे बन्दर मोटिनू की आठवीं मूर्ति को तोड़ कर वहाँ आ पहुँचे थे।

जब बन्दर ओवो शहर की चहारदीवारी तक पहुँचे तो दूसरे बन्दरों की तो अन्दर जाने की हिम्मत नहीं हुई परन्तु मोटिनू का पति फिर से सुन्दर नौजवान बन कर उस शहर के अन्दर चला गया और ओगुनयेमी के घर पहुँच गया।

मोटिनू ने उसे देखा तो पहचान गयी। उसने ओगुनयेमी को बताया कि वह नौजवान कौन था।

ओगुनयेमी ने यह सब मामला अपने सरदार को बताया तो सरदार ने उस नौजवान को जंजीरों से बँधवा दिया और क्योंकि वह फिर जंगल नहीं लौट सका इसलिये वह अपने आपको फिर से बन्दर में भी नहीं बदल सका।

ज़िन्दगी के बाकी दिन उसको सरदार की सेवा में ही काट देने पड़े। उधर मोटिनू ने ओगुनयेमी से शादी कर ली और वे भी खुशी खुशी रहने लगे।



13 जुड़वाँ बच्चे[45]

एक बार योरुबालैंड में एक पति पत्नी रहते थे। उनके बहुत सारे बच्चे हुए पर दुख की बात यह थी कि सभी मर गये।

एक दिन पत्नी ने पति से प्रार्थना की कि वह इफा पुजारी[46] के पास जाये और पता लगाये कि उनको अपने बच्चे ज़िन्दा रखने के लिये क्या कीमत देनी पड़ेगी।

सो पति इफा पुजारी के पास गया और जा कर उसको अपना दुखड़ा सुनाया। इस पर पुजारी बोला — "तुम लोगों को अपनी सारी चीज़ें जो भी तुम्हारे पास हैं सब छोड़नी पड़ेंगीं। अगर तुम लोग ऐसा कर सकोगे तो देवता तुमको दो बेटे देंगे।"

पति घर लौटा और इस भारी त्याग के बारे में बताया। पत्नी बोली — "फिर हमको ऐसा ही करना चाहिये।"

और उन दोनों ने अपने पास की सारी चीज़ें छोड़ दीं।

हालाँकि यह नुकसान उनके लिये काफी था परन्तु अपने दोस्तों और रिश्तेदारों की सहायता से उन्होंने अपना घर फिर से बसाना शुरू कर दिया।

उनका इफा में यह पक्का विश्वास देख कर लोगों ने भी उन की खुले मन से सहायता की। किसी ने उनको कुत्ता दिया, किसी ने

[45] The Twins (Tale No 13) - a folktale from Yoruba tribe, Nigeria, West Africa.

[46] Ifa Priest – their traditional religious priest

उनको बिल्ली दी। इस तरह सबने उनकी किसी न किसी तरह उनकी सहायता की।

एक दिन जब पति मछली पकड़ने गया हुआ था तो उसने एक बहुत बड़ी और अजीब सी शक्ल वाली मछली पकड़ी। किनारे पर ला कर जब उसने उस मछली को काटा तो उसे मछली के अन्दर दो चाकू और दो तलवारें मिलीं।

उसको मछली के अन्दर चाकू और तलवार देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह मछली, चाकू और तलवार सभी कुछ अपनी पत्नी को दिखाने के लिये घर ले आया। उसने सोचा कि यह अच्छा शकुन था।

पर घर आ कर उसको और भी ज़्यादा आश्चर्य हुआ जब उसको पता चला कि उसके पीछे उसके घर में दो बेटे पैदा हो चुके हैं। उन्होंने उनका नाम तायवो और केहिन्डे[47] रख दिया।

उसी दिन उनकी बिल्ली के भी दो बच्चे हुए, कुत्ते के भी दो बच्चे हुए और चिड़िया ने भी दो अंडे दिये।

उसी दिन उस आदमी का भाई जंगल में शिकार के लिये गया क्योंकि उन दिनों वहाँ कुछ ऐसा रिवाज था कि उस स्त्री को भेंट दी जाती थी जिसके हाल ही में बच्चा हुआ हो। तो वह अपनी भाभी के लिये भेंट लेने गया था।

---

[47] Taiwo and Kehinde. Taiwo means who comes first and Kehinde means who comes after.

वह अभी बहुत दूर नहीं जा पाया था कि उसने एक चीता मारा जिसके भी तभी दो बच्चे हुए थे। भाई ने मन में सोचा कि यह तो बहुत ही अच्छा शकुन है सो उसने वह मरा हुआ चीता और उसके दोनों बच्चे ला कर अपनी भाभी को भेंट कर दिये।

इस तरह तायवो और केहिन्डे, कुत्ते के दो बच्चे, बिल्ली के दो बच्चे, चिड़िया के दो अंडे, और चीते के दो बच्चे सभी एक साथ बड़े होने लगे। तायवो और केहिन्डे की शक्ल सूरत एक दूसरे से काफी मिलती जुलती थी और वे आपस में हमेशा प्रेम से रहते थे।

जब वे बड़े हो गये तो उन्होंने अपने माता पिता से कहा कि अब समय आ गया था जब उनको अपना रास्ता अपने आप बनाना था। माता पिता उनके छोड़ कर जाने की बात सुन कर बहुत दुखी हुए। वे उनकी कोई बात नहीं सुनना चाहते थे।

पिता ने उनको बहुत समझाया कि वे वहीं रह कर उसके खेत पर काम करके उसकी सहायता कर सकते थे। उनको बाहर जाने की जरूरत ही क्या थी पर वे नहीं माने सो बाद में माता पिता को बच्चों की इच्छा के सामने झुकना ही पड़ा।

पिता दुखी आवाज में बोला — "मेरे बच्चो, मेरे पास तुम लोगों को देने के लिये और तो कुछ नहीं है, हॉ तुम्हारे जन्म दिन के दिन जो जो जुड़वॉ बच्चे पैदा हुए थे वे मैं तुम दोनों में बॉट देना चाहता हूँ।"

सो उसने एक एक चाकू, एक एक तलवार, एक एक कुत्ता, एक एक बिल्ली, एक एक चिड़ा और एक एक चीता दोनों को दे दिये।

दोनों अपने दूसरे जुड़वाओं के साथ अपने अपने माता पिताओं को विदा कह कर चल दिये। वे सब बहुत दिनों तक चलते रहे। इस बीच उन्होंने कई बड़े शहरों को पार किया।

आखीर में वे एक ऐसी जगह आ गये जहाँ से सड़क दो तरफ जाती थी और वहीं कपास का एक पेड़ था। यहाँ आ कर दोनों ने अलग होने का फैसला किया। तायवो ने बाँयी तरफ की सड़क ली और केहिन्डे ने दाँयी तरफ की।

जब वे एक दूसरे को विदा कहने लगे तो तायवो बोला — "आओ भाई, बिछड़ने से पहले हम लोग एक वायदा करें कि हम लोग ठीक पाँच साल बाद यहीं मिलेंगे।"

केहिन्डे बोला — "ठीक है भाई, हम लोग आज से ठीक पाँच साल बाद यहीं मिलेंगे पर बिछड़ने से पहले हम लोग अपने अपने चाकू इस कपास के पेड़ में अपनी अपनी जाने की दिशाओं में गाड़ देते हैं। और फिर जो भी पहले आयेगा वह दूसरे के चाकू की तरफ देखेगा।

अगर दूसरा चाकू जंग लगा या गन्दा हुआ तो उसको समझना चाहिये कि दूसरा भाई या तो मर गया है या फिर बहुत बीमार है और या फिर बड़ी कठिनाई में है।"

उन्होंने ऐसा ही किया और दोनों अपने अपने रास्तों पर चल दिये।

केहिन्डे जो दाँयी तरफ को गया था अभी कुछ ही दूर चला था कि उसको एक बड़ा शहर मिला। उसको वह शहर बहुत अच्छा लगा सो वह वहीं रुक गया। इस शहर में उसने डाक्टरी पढ़ी और जड़ी बूटियों की दवाओं का अच्छा डाक्टर बन गया।

उधर तायवो काफी दिनों तक चलता रहा और आखीर में समुद्र के किनारे आ पहुँचा। वहाँ से वह समुद्र के किनारे वाली सड़क पर चल दिया और चलते चलते वह भी एक बड़े शहर में आ पहुँचा।

उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहाँ की सब स्त्रियों ने अपने बाल खोल रखे थे। उस समय स्त्रियों के बाल खुले घूमना यह बताता था कि वे किसी बड़े भारी दुख में थीं सो उसने उन स्त्रियों से पूछा कि उनको क्या दुख था।

पता चला — "क्या करें, समुद्र के देवता ओलोकुन[48] का धरती से कुछ झगड़ा हो गया सो जब भी उसको ज़्यादा गुस्सा आता है तो वह धरती को पानी से ढक देता है।

हम लोगों को हर साल अपने शहर की सबसे सुन्दर लड़की की बलि दे कर उसे इस काम को करने से रोकना पड़ता है। अब वह समय आ गया है और इस साल राजा की बेटी की बारी है। यही वजह है हमारे इस भारी दुख की।"

---

[48] Olokun – the god of the Sea

तायवो ने पूछा — "इस बलि का समय कब है?"

एक स्त्री बोली — "आज शाम को जब सूरज डूबेगा।"

तायवो ने उससे तो और कुछ नहीं पूछा पर बाद में बलि की जगह मालूम की तो पता चला कि वह जगह समुद्र के किनारे कहीं अलग थलग को थी।

उस शाम को वह उस जगह पर पहुँच गया और पेड़ों में छिप कर समय का इन्तजार करने लगा। शाम ढले राजा की बेटी को लाया गया और उसको एक खम्भे से बाँध दिया गया।

रस्में पूरी करने के बाद सभी लोग उस लड़की को वहाँ अकेला छोड़ कर चले गये। सबके जाने के बाद तायवो वहाँ गया और उसने लड़की को खोलना शुरू कर दिया।

लड़की घबरा गयी और डर गयी।

वह बोली — "तुम यहाँ से चले जाओ नहीं तो समुद्र मेरे साथ साथ तुमको भी डुबो देगा। अब तुम कुछ नहीं कर सकते। अगर अब तुमने इस काम में दखल दिया तो वह तुमको मार डालेगा।"

पर तायवो उसकी इस बात पर केवल हँस कर रह गया।

जब तायवो उसको खोल रहा था तभी उसने समुद्र के पानी में बड़ी तेज़ आवाज सुनी और उस आवाज के साथ निकला एक छह सिर वाला राक्षस।

वह अपने छहों मुँहों से ज़ोर से चिल्लाया — "कहाँ है मेरा इस साल का शिकार?"

तायवो शान्ति से बोला — "यह रहा आपका इस साल का शिकार।"

बस फिर क्या था दोनों में खूब लड़ाई हुई। यह लड़ाई दो दिन और दो रात तक चली।

तायवो इस लड़ाई में अकेला नहीं था। जब तायवो राक्षस पर तलवार से वार कर रहा था तो चीता भी उस राक्षस पर टूट पड़ा। बिल्ले ने उसकी आँखें निकाल लीं और कुत्ते ने राक्षस की टाँगों में काट लिया। चिड़े ने चोंच मार मार कर उसको घायल कर दिया।

पर वह राक्षस भी बहुत ताकतवर था। अन्त में वह जीत गया होता अगर तायवो ने बिजली के देवता को अपनी सहायता के लिये न बुला लिया होता।

उसी समय एक तूफान आया। बिजली राक्षस के ऊपर गिर पड़ी और वह मर गया। तायवो ने अपनी तलवार से उस राक्षस के छहों सिर काट डाले। उसने उसके दो सिरों से चार कान काटे और उनको अपने बक्से में रख लिया।

राजा की लड़की ने जो यह सब कुछ अपनी आँखों से देख रही थी तायवो को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उससे प्रार्थना की वह उसके साथ राजा के पास चले, उसे सारी कहानी बताये और यह बताये कि किस तरह उसने सारे गाँव पर से यह शाप हमेशा के लिये खत्म कर दिया था।

परन्तु तायवो यह सुन कर केवल मुस्कुरा दिया और बोला कि उसको अपने सफर पर बहुत दूर जाना है इस समय वह उसके साथ नहीं जा सकता।

इस पर राजा की लड़की ने अपने गले से एक हार निकाला और उसके दो टुकड़े किये। एक टुकड़ा उसने उसके कुत्ते के गले में बाँध दिया और दूसरा उसके बिल्ले के गले में और वह अपने घर चली गयी।

जब राजा की लड़की अपने पिता के घर वापस जा रही थी तो रास्ते में उसको अपने पिता की सेना का सेनापति मिल गया। इस आदमी ने राजा से वायदा किया था कि वह राजकुमारी को बचाने के लिये समुद्री राक्षस से लड़ेगा परन्तु इस बलि के कुछ देर पहले ही डर के मारे बहाना करके भाग गया था।

राजकुमारी को ज़िन्दा देख कर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उससे उसके ज़िन्दा बच जाने की सारी कहानी पूछी।

राजकुमारी उसको समुद्र के किनारे ले गयी, उसको मरा हुआ राक्षस दिखाया, उसके कटे हुए छहों सिर दिखाये और सारी कहानी सुना दी कि किस तरह तायवो और उसके साथियों ने बिजली के देवता की सहायता से राक्षस को मार डाला था।

सेनापति ने वहाँ तो कुछ नहीं कहा। वह राजकुमारी को ले कर घर वापस आ गया परन्तु राजा को तायवो वाली कहानी उसने अपने नाम से सुना दी कि किस तरह उसने राक्षस को मार डाला था और

सबूत के तौर पर अपने नौकरों को समुद्र के किनारे से राक्षस के छहों सिर लाने भेज दिया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत ही खुश हुआ और साथ में यह जान कर भी कि अब राक्षस को बलि चढ़ाने की कभी जरूरत नहीं पड़ेगी।

उसने तुरन्त ही अपनी बेटी की शादी उस सेनापति से करने की घोषणा कर दी। और क्योंकि उसके कोई बेटा नहीं था इसलिये अपने मरने के बाद सेनापति को अपने राज्य का राजा भी घोषित कर दिया।

राजकुमारी ने अपने पिता को बहुत समझाने की कोशिश की कि राक्षस को सेनापति ने नहीं बल्कि तायवो ने मारा था परन्तु राजा ने सोचा कि शायद उसकी बेटी को डर के मारे सेनापति का चेहरा साफ दिखायी नहीं दिया इसलिये वह ऐसा कह रही है।

शादी का दिन भी आ गया। चारों तरफ खुशियाँ मनायीं जा रहीं थीं। सभी लोग बहुत खुश थे पर राजकुमारी बहुत उदास और दुखी थी।

राजकुमारी की शादी के पहले दिन तायवो किसी वजह से उसी गाँव में लौटा। वहाँ वह एक जगह आ कर ठहर गया। वहाँ आ कर उसका कुत्ता बाहर घूमने निकल गया।

राजकुमारी की नौकरानी उधर से गुजर रही थी कि उसने कुत्ते की गर्दन में पड़ा राजकुमारी का हार पहचान लिया। वह तुरन्त ही

घर दौड़ी गयी और जो कुछ उसने देखा था जा कर राजकुमारी को बता दिया।

राजकुमारी यह सुन कर बहुत खुश हुई और उसने अपनी नौकरानी को उस कुत्ते के मालिक का पता लगाने के लिये कहा।

नौकरानी जब उस कुत्ते को ढूँढने गयी तो उसको कुत्ता तो दिखायी नहीं दिया पर इस बार उसको तायवो का बिल्ला दिखायी दे गया। उसने बिल्ले के गले में पड़ा राजकुमारी के हार का दूसरा हिस्सा भी पहचान लिया।

फिर उसने तायवो के रहने की जगह ढूँढ ली और आ कर राजकुमारी को बताया। राजकुमारी दौड़ी दौड़ी अपने पिता के पास गयी और उसको सारी कहानी फिर से बतायी।

इस बार वह यह बताना नहीं भूली कि किस तरह उसने अपने हार के दो टुकड़े कर के तायवो के कुत्ते और बिल्ले के गले में डाल दिये थे और तायवो उन दिनों उसी गाँव में था।

राजा ने सोचा कि शादी से पहले यह मामला तय हो ही जाना चाहिये कि राक्षस को किसने मारा सो उसने अपने नौकरों को सेनापति, तायवो और उसके जानवरों को बुला लाने के लिये भेजा। जब सब वहाँ आ गये तो राजा ने उन दोनों को अपनी अपनी बात कहने के लिये कहा।

पहले सेनापति बोला और अपनी कहानी की सच्चाई साबित करने के लिये उसने राक्षस के छहों सिर राजा को पेश कर दिये।

फिर राजा ने तायवो को अपनी बात कहने के लिये कहा तो तायवो ने भी अपनी कहानी सुनायी और राजा से उन छह सिरों को फिर से ध्यान से देखने को कहा।

लोगों ने उनको ध्यान से देखा तो तुरन्त ही उनको पता चल गया कि उन छह सिरों में से दो सिरों के कान नहीं थे। राजा ने सेनापति से पूछा कि ऐसा क्यों है तो सेनापति कुछ घबरा सा गया।

इस सवाल का तो उसके पास कोई जवाब नहीं था क्योंकि राक्षस को उसने तो मारा नहीं था।

पर फिर सँभल कर बोला — "जब राक्षस समुद्र से निकला तो वह ऐसा ही था पर इस बात से क्या फर्क पड़ता है। मैंने तो आपको सबूत के तौर पर उसके छहों सिर पेश कर दिये हैं। आपको इससे ज़्यादा और क्या सबूत चाहिये?"

अब तायवो ने अपना बक्सा खोला और उसमें से चार कान निकाले और बोला — "यह सबूत चाहिये। अगर आप लोग ध्यान से देखें तो ये चारों कान इन दो सिरों के ही हैं।"

फिर उसने अपने कुत्ते और बिल्ले के गलों से हार के टुकड़े निकाले, उनको जोड़ा और वह हार उसने राजकुमारी को दे दिया जो उसने तुरन्त ही अपने गले में पहन लिया ताकि लोग पहचान सकें कि वह हार उसी का है लेकिन उसने अपना वह हार तोड़ कर फिर से कुत्ते और बिल्ले के गलों में डाल दिया।

राजा और उसके सलाहकारों को विश्वास हो गया कि उनका सेनापति झूठ बोल रहा था और तायवो सच। सेनापति को उसके झूठ की सजा मिली। उसको मौत के घाट उतार दिया गया।

शादी की रस्में चलती रहीं और राजकुमारी की शादी तायवो से हो गयी। दोनों वहीं महल में काफी दिन सुख से रहे। राजकुमारी ने अपना हार फिर से तोड़ कर तायवो के कुत्ते और बिल्ले के गले में पहना दिया था।

दो साल बाद राजा मर गया और लोगों ने तायवो को अपना राजा बना लिया।

एक दिन जब तायवो महल में अकेला बैठा था तो उसे ध्यान आया कि उसके तो पॉच साल पूरे होने वाले हैं और उसको अपने भाई से मिलने के लिये कपास के पेड़ के पास पहुँचना है।

वह सोचने लगा कि पता नहीं उसका भाई कैसा होगा। क्या उसके जानवरों के जुड़वॉ भी उसके भाई की वैसी ही सेवा कर रहे होंगे जैसी कि उसके जानवर उसकी कर रहे थे?

वह यह सब कुछ सोच ही रहा था कि उसको महल में बहुत ज़ोर का शोर सुनायी दिया। इतने में उसकी पत्नी दौड़ी आयी और बोली कि महल में एक बहुत बड़ा मुर्गा आ गया है और वह बहुत ज़ोर से शोर मचा रहा है। कोई भी उसको महल से बाहर नहीं निकाल पा रहा।

यह सुन कर तायवो उधर गया जहाँ वह मुर्गा था। उसने भी उस मुर्गे को बाहर निकालने की बहुत कोशिश की पर वह उसके बाहर निकाले भी बाहर नहीं निकला।

इस पर उसने उस मुर्गे को तीर मार कर बाहर निकालने की कोशिश की परन्तु आश्चर्य, जितने भी तीर उसने उस मुर्गे को मारे उनमें से एक भी तीर उसको नहीं लगा बल्कि उलटा वह मुर्गा उसको देख कर उसके ऊपर और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा।

तायवो ने इतना बड़ा मुर्गा अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखा था। आखिर उसने उस मुर्गे को मारने का इरादा छोड़ दिया और अपने कमरे की तरफ लौटने लगा तो मुर्गे ने उसका पीछा किया और एक खिड़की पर बैठ कर उसकी तरफ मुँह करके फिर से ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा।

अन्त में तायवो इस सबसे बहुत चिढ़ गया और उसने अपने चीते, बिल्ले, कुत्ते और चिड़े को बुलाया और अपनी तलवार ले कर उसको फिर से बाहर निकालने की कोशिश करने लगा।

उसके जुड़वाँ जानवर उस मुर्गे के पीछे भागे तो इस बार मुर्गा रुका नहीं वह उन जुड़वाओं के आगे आगे उड़ चला। वह शहर के बाहर गया और समुद्र के किनारे उस जगह की तरफ चला जहाँ तायवो ने पाँच साल पहले राक्षस मारा था।

यहाँ आ कर तायवो ने सोचा कि शायद कुछ अजीब सी बात हो जिसे यह मुर्गा मुझे दिखाना चाहता हो परन्तु तायवो ने महसूस

किया कि यह मुर्गा कोई मामूली मुर्गा नहीं था क्योंकि वह उन जुड़वाँ जानवरों को समुद्र के किनारे किनारे कई मील दूर ले आया था।

और हालाँकि उसके वे जुड़वाँ जानवर सब उसके पीछे पीछे बड़ी तेज़ी से चले जा रहे थे पर फिर भी कोई उसके साथ चल नहीं पा रहा था।

वे सब शाम तक चलते रहे कि अचानक मुर्गा समुद्र के किनारे से किनारे की तरफ के जंगलों की तरफ मुड़ गया।

यहाँ तायवो को एक खेत दिखायी दिया और खेत के पीछे दिखायी दिया उसको एक कम्पाउन्ड। तायवो ने उस खेत के पीछे के कम्पाउंड को देखने का निश्चय किया क्योंकि उसको कुछ ऐसा लगा कि वह मुर्गा शायद वहीं से आया था।

पर जब सारे जुड़वाँ उस कम्पाउन्ड में घुसे तो वहाँ तो कोई भी नहीं था और वह मुर्गा भी नहीं था। उस कम्पाउन्ड में कुछ देर तक घूमने के बाद वे सब वहाँ से चलने ही वाले थे कि उनको एक बुढ़िया दिखायी दी।

उसने उनसे पूछा कि वे लोग वहाँ क्या कर रहे थे।

तायवो बोला — "माँ जी, मैं यहाँ उस बड़े मुर्गे को ढूँढ रहा हूँ जो हमारे शहर में आ गया था और उसने हमको बहुत परेशान किया। सारा दिन मैं उसका पीछा करता रहा और वह हमको यहाँ ले आया है। अब वह मुझे कहीं दिखायी नहीं दे रहा है। क्या आपने उस मुर्गे को देखा है या आप उसको जानती हैं?"

बुढ़िया बोली — "यकीनन मैं उसे खूब अच्छी तरह जानती हूँ। उसने मुझे भी बरसों से तंग कर रखा है। उसने मेरे पति को समुद्र में धकेल दिया है। अगर तुम उसे मार दोगे तो मैं तुम्हारा बड़ा ऐहसान मानूँगी।

तुम यहाँ थोड़ी देर ठहरो। जैसे ही उसे पता चलेगा कि तुम यहाँ आ गये हो वह खुद ही यहाँ आ जायेगा।

तुम लोग उसका पीछा करते करते थक गये होगे। अच्छा होता अगर यहाँ आने से पहले ही तुमने उसको मार दिया होता। खैर, अब तुम यहाँ बैठो, थोड़ा आराम करो। मैं तुम्हारे लिये थोड़ी ताड़ी[49] लाती हूँ।"

वे सब वहीं बैठ गये और आराम करने लगे क्योंकि वे लोग सचमुच ही बहुत थक गये थे। बुढ़िया जल्दी ही ताड़ी ले आयी। सबने ताड़ी पी और बुढ़िया उनको आराम करने के लिये छोड़ कर वहाँ से चली गयी।

कुछ ही देर में बुढ़िया लौट आयी। तायवो ने उसके पहले चेहरे से अबके चेहरे में बहुत फर्क देखा। वह अब उनकी तरफ देख कर मुस्कुरा रही थी और उसके पीछे वही मुर्गा था जो उनको यहाँ तक भगा कर लाया था।

वह बोली — "राजा तायवो, तुम और तुम्हारे जानवर अब मेरे जाल में फँस चुके हैं। यह मुर्गा जो मेरा नौकर है यही तुम लोगों को

---

[49] Translated for the words "Palm Wine".

यहाँ ले कर आया है। यह उस समुद्री राक्षस का घर है जिसको पाँच साल पहले तुमने मारा था और मैं उसकी माँ हूँ। अब तुम लोग यहाँ आ गये हो तो अब तुम सब यहीं मरोगे।"

यह सुन कर तायवो चीख कर अपनी तलवार उठा कर बुढ़िया को मारने वाला था कि बुढ़िया के ऊपर उछलने को तैयार सभी जुड़वाँ तब तक जानवर पत्थर के बन चुके थे सिवाय तायवो के।

बुढ़िया बोली — "मेरी जादू की ताड़ी काम कर रही है।

इतने में तायवो का तलवार पकड़ा उठा हुआ हाथ भी पत्थर का हो गया था और वह अब उसको हिला भी नहीं सकता था। धीरे धीरे उसके शरीर से जान सी जाने लगी और थोड़ी ही देर में बुढ़िया के कम्पाउंड में पत्थर की छह मूर्तियाँ खड़ी थीं।

बुढ़िया ज़ोर से हँसती हुई बोली — "मेरे बेटे के छह सिरों के लिये ये छह पत्थर की मूर्तियाँ।"

मुर्गा भी खुशी से चिल्ला उठा — "कुकड़ूँ कूँ।"

आखिर पाँच साल का समय खत्म हुआ और केहिन्डे जो इन पाँच सालों में डाक्टरी अच्छी तरह सीख चुका था तथा उस शहर में उसका अभ्यास कर रहा था पाँच साल खत्म होने पर अपने भाई तायवो से मिलने के लिये चल पड़ा। उसके साथ उसका चीता, बिल्ला, कुत्ता, चिड़ा और तलवार भी थे।

जब वे उस कपास के पेड़ के पास पहुँचे जहाँ उन्होंने आपस में मिलने का वायदा किया था तो केहिन्डे ने अपने भाई के चाकू की

तरफ देखा। वह अभी भी पेड़ में उसी तरह गड़ा हुआ था पर बड़ा मैला और जंग लगा हो चुका था जबकि उसका अपना वाला चाकू खूब चमक रहा था।

केहिन्डे ने अपने साथियों से कहा कि तायवो अब उनसे नहीं मिल पायेगा क्योंकि शायद वह किसी भारी मुश्किल में पड़ गया है। पर किसी को यह ही पता नहीं था कि वह गया कहाँ है।

तायवो को ढूँढने का अब एक ही रास्ता था कि पाँच साल पहले तायवो जिस रास्ते पर गया था उसी रास्ते पर चल कर उसके जुड़वाँ जानवरों को ढूँढा जाये।

सो सब लोग वहाँ से बाँयी तरफ चल दिये। वे लोग भी काफी दिनों तक चलने के बाद उसी समुद्र के किनारे पहुँच गये जिधर तायवो गया था और किनारे के साथ वाली सड़क पर चलते हुए तायवो के शहर आ गये।

इधर तायवो करीब एक महीने से महल से गायब था सो उसकी पत्नी और उसके राज्य के लोग उसके बारे में बहुत चिन्तित थे कि वह था कहाँ। वे लोग उसको और उसके अजीब साथियों को ढूँढने चारों तरफ गये हुए थे।

जब केहिन्डे अपने वैसे ही जुड़वाँ साथियों के साथ उस शहर में पहुँचा तो कोई आश्चर्य नहीं कि लोगों ने उसको तायवो समझ लिया। वे तुरन्त ही घर दौड़े गये और बोले कि राजा तो लौट आये हैं।

केहिन्डे जब शहर में पहुँचा तो उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि शहर में शादी के ढोल बज रहे थे और उससे भी ज़्यादा आश्चर्य तब हुआ जब लोग उसको अपना खोया हुआ राजा समझ कर उसको नमस्ते करने लगे।

बहुत सारे लोग उसके पास आ कर यह पूछने लगे कि वह इतने दिन कहाँ था और उसने आने में इतने दिन क्यों लगाये।

केहिन्डे समझ गया कि यह शहर उसके भाई का शहर था और उसने इस शहर के लिये काफी कुछ किया था पर अब वह कहाँ गया यह तो ये लोग भी नहीं जानते।

बाजार में खड़ा खड़ा यही सब सोच रहा था और यह भी सोच रहा था कि उसे अब आगे क्या करना चाहिये कि अचानक उसके सामने उसके सामने एक बहुत बड़ा मुर्गा आ गया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा।

वहाँ खड़े शहर के सभी लोग उस मुर्गे को देख कर बहुत गुस्सा हुए और उसको वहाँ से भगाने की कोशिश करने लगे पर वह भागता ही नहीं था। कुछ ने उसको डंडियाँ मारीं कुछ ने उसको पत्थर मारे परन्तु उसको कुछ लगा ही नहीं।

केहिन्डे को यह देख कर बड़ा मजा आ रहा था। वह सोच रहा था कि केवल एक मुर्गे से वे सब लोग इतने परेशान क्यों थे?

पर जब केहिन्डे उसकी तरफ बढ़ा तो उसको यह देख कर आश्चर्य हुआ कि जैसे जैसे वह उसकी तरफ बढ़ता जा रहा था वह मुर्गा पीछे हटता जा रहा था।

भीड़ में से कुछ लोग बोले — "एक महीना पहले ही तो आपने इस मुर्गे को शहर से भगाया था। अब यह फिर आपके पीछे पीछे आ गया। आप इसके साथ अब तक कहाँ थे?"

यह सब सुन कर केहिन्डे को विश्वास हो गया कि यही मुर्गा उसके भाई के गायब होने की वजह थी। सो वह अपने चीते, बिल्ले, कुत्ते और चिड़े को साथ ले कर इस मुर्गे के पीछे पीछे अपने भाई की खोज में चल दिया।

लोगों ने उससे बहुत बार कहा कि वह उस जादुई पक्षी के पीछे न जाये और घर चल कर अपनी पत्नी से मिले जो बहुत दिनों से उसका इन्तजार कर रही थी परन्तु उसने किसी की एक न सुनी और वह उस मुर्गे के पीछे पीछे चल दिया।

थोड़ी देर चलने पर ही केहिन्डे को पता चल गया कि वह वाकई कोई जादू का पक्षी था क्योंकि वह मुर्गा बहुत तेज़ जा रहा था और वे उसके साथ चल नहीं पा रहे थे। उसने उसका पीछा करना छोड़ दिया और आराम से चलने लगा।

इस तरह उसके पीछे चलते चलते शाम तक वे सब भी उसी खेत पर पहुँच गये जहाँ तायवो और उसके साथी जानवर पत्थर की मूर्ति बने खड़े थे।

केहिन्डे ने शहर वालों से कहा था कि वे शहर में ही रह कर उसका इन्तजार करें और वह उस मुर्गे का पीछा करके अभी आता है। उसने उनको यह नहीं बताया था कि वह खुद कौन है और उनका राजा तायवो जो उसका जुड़वाँ भाई था अभी तक गायब है।

केहिन्डे जब उस खेत पर पहुँचा तो बुढ़िया दरवाजे पर खड़ी उसका इन्तजार ही कर रही थी।

केहिन्डे ने उससे पूछा — "क्या यह मुर्गा आप ही का है?"

बुढ़िया बोली — "हाँ, यह मुर्गा मेरा ही है। मैंने ही इसको तुम्हारे भाई के शहर से तुमको यहाँ लाने के लिये भेजा था क्योंकि मुझे मालूम है कि तुम किसको ढूँढते फिर रहे हो। तुम राजा तायवो और उसके चीते, बिल्ले, कुत्ते और चिड़े को ही ढूँढ रहे हो न?"

केहिन्डे बोला — "आप कह तो बिल्कुल ठीक रही हैं मगर आप यह सब कैसे जानती हैं?"

बुढिया बोली — "तुम्हारे भाई और उसके जानवरों को ढूँढने में मैं तुम्हारी सहायता करना चाहती हूँ। वे लोग अभी एक महीना पहले ही इधर से गुजरे थे। मैंने उनसे यहाँ रात भर रुकने और आराम करने के लिये बहुत कहा पर वे रुके नहीं।

मुझे डर है कि वे कहीं किसी मुसीबत में न फँस गये हों। पर तुम अगर यहाँ आराम करो तो मैं तुमको ताड़ी भी पिलाऊँगी और तुम्हारे भाई से मिलने का तरीका भी बताऊँगी।"

यह सुन कर केहिन्डे और उसके जानवर उस बुढ़िया के कम्पाउंड में चले गये और वहाँ जा कर बैठ गये। इतने में बुढ़िया ताड़ी का एक बड़ा सा कटोरा ले आयी।

केहिन्डे ने कई साल तक डाक्टरी की थी इसलिये वह बुढ़िया से बहुत ही सावधान था। जब केहिन्डे ने ताड़ी पी ली तो बुढ़िया ने वह ताड़ी उसके जानवरों को भी पीने को दी। उन्होंने भी वह ताड़ी पेट भर कर पी।

फिर बुढिया ने पूछा — "क्या तुम लोगों ने कटोरे की सारी ताड़ी खत्म कर दी?"

केहिन्डे बोला — "जी हाँ।"

बुढ़िया बोली — "अब तुम लोग मेरे साथ आओ मैं तुमको तुम्हारे भाई से मिलवाती हूँ।"

कह कर उसने तेल का एक दिया जलाया और उन लोगों को घर के बाहर की तरफ ले चली। चारों तरफ दीवार से घिरे कम्पाउन्ड के पास पहुँच कर बोली — "वे लोग तुमको उस झोंपड़ी में मिलेंगे। जाओ और देखो।"

उस झोंपड़ी में पहुँच कर केहिन्डे ने देखा कि उसका जुड़वाँ भाई और उसके जानवरों के जुड़वाँ जानवर सब मूर्ति बने खड़े हैं जैसे कि वे पत्थर के बने हों।

बुढ़िया दिया ले कर उन सबके पास आ गयी ताकि वे उन मूर्तियों को ठीक से देख सकें।

वह बोली — "देखा तुमने? उन्होंने भी मेरी ताड़ी पी थी और उनका यह हाल हो गया। अब मैंने तुमको तुम्हारे भाइयों से मिलाने का वायदा पूरा कर दिया है। आज से तुम लोग एक दूसरे की तरफ मुँह करके साथ साथ खड़े होगे।"

केहिन्डे यह सब देख कर डर गया। उसने पूछा — "क्या ये लोग अब किसी भी तरह से ज़िन्दा नहीं हो सकते?"

बुढ़िया यह सुन कर हँसी और उसके जानवरों की तरफ इशारा करते हुए बोली — "देखो इन लोगों ने तो पत्थर की मूर्ति में बदलना शुरू कर दिया है।

कुछ पल बाद तुम्हारे शरीर का खून भी ठंडा पड़ जायेगा और तुम भी पत्थर की मूर्ति बन जाओगे। फिर भी तुम्हारे मरने से पहले मैं तुमको इनको ज़िन्दा करने का तरीका जरूर बताऊँगी।"



वह तने खड़े केहिन्डे की तरफ देखती हुई बोली — "मेरे घर में जादुई पानी के दो कैलेबाश[50] भरे रखे हैं अगर वह पानी तुम सब लोगों के ऊपर डाल दिया जाये तो तुम सब फिर से ज़िन्दा हो सकते हो।

पर यह बात केवल मैं जानती हूँ और मैं तुम सबको ऐसी ही मूर्तियों के रूप में देखना चाहती हूँ क्योंकि तुम्हारे भाई ने मेरे छह

[50] Calabash is a dry outer cover of a pumpkin like fruit which is used to keep dry or wet things like Indians use pitcher. See its picture above.

सिर वाले बेटे समुद्री राक्षस को मारा है। अब काफी देर हो चुकी है इसलिये अब तुम बच नहीं सकते।"

इतना कह कर वह फिर से एक ज़ोर की हॅसी हॅसी।

केहिन्डे अपने तने खड़े होने के ढंग से हिला और बुढ़िया से बोला — "ओ बुढ़िया, अफसोस, यह तुम्हारी बदकिस्मती है कि मैंने डाक्टरी पढ़ी। तुम्हारे मुझे ताड़ी देने से पहले ही अपनी जेब से निकाल कर यह दवा मैंने उस ताड़ी में डाल दी थी इसलिये तुम्हारा जादू अब मेरे ऊपर काम नहीं करेगा।"

यह सुन कर बुढ़िया भागी पर केहिन्डे उससे तेज़ था। उसने तुरन्त ही अपनी तलवार निकाल कर उसको मार डाला।

फिर वह बुढ़िया के घर में गया और जादुई पानी के कैलेबाश ढूॅढे। वे उस बुढ़िया के घर के एक ॲधेरे कोने में छिपे रखे थे। उसने तुरन्त वे कैलेबाश ला कर उनका पानी तायवो और उसके जानवरों की मूर्तियों पर छिड़क दिया।

सभी तुरन्त ही ज़िन्दा हो गये।

सभी पॉच साल बाद मिले थे इसलिये सभी बहुत खुश थे। उन्होंने बुढ़िया का घर जला डाला। उन्होंने उस आग में उस मुर्गे को भी जला दिया जो उनको वहॉ तक ले कर आया था।

अगले दिन सुबह वे सब जादुई पानी के दोनों कैलेबाश ले कर तायवो के शहर चले।

तायवो रास्ते में बोला — "हम दोनों कितने एक से लगते हैं। है न?"

इस पर केहिन्डे ने अपने साथ होने वाली शहर की घटना सुनायी कि किस तरह शहर वालों ने उसको अपना राजा समझ लिया था।

इस पर तायवो को हॅसी सूझी सो वह बोला — "हम दोनों लोग घर में दो दरवाजों से घुसते हैं और देखते हैं कि मेरी पत्नी अपने पति को पहचान पाती है या नहीं।"

शहर पहुॅचने से पहले ही वे दोनों अलग अलग हो गये। दक्षिण की तरफ रहने वाले सरदार ने केहिन्डे को जब अपने जानवरों के साथ आते देखा तो सोचा कि वह तायवो था सो उसने तुरन्त ही शहर के बीच में रखा शाही ढोल बजाने के लिये अपने एक आदमी को भेज दिया।

तायवो उत्तरी दरवाजे से उसी समय अन्दर घुसा जिस समय उसका भाई केहिन्डे दक्षिण की तरफ से आया था। सो उत्तरी तरफ वाले सरदार ने तायवो और उसके जानवरों के आते देखा तो उसने भी शाही ढोल बजाने के लिये अपना एक आदमी भेज दिया।

अब क्या था शाही महल में भगदड़ मच गयी पर महल के रक्षकों को कहाॅ खड़ा किया जाये यह किसी को पता नहीं था।

तायवो की पत्नी शोर गुल सुन कर महल से बाहर निकली कि यह सब क्या हो रहा है तो उसको शोर दो तरफ से आता सुनायी दिया।

और जब दोनों तरफ के लोग आपस में मिले तो सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ यह देख कर कि वहाँ दो राजा थे, दो चीते थे, दो बिल्ले थे, दो कुत्ते थे और दो चिड़े थे और सभी जुड़वाँ थे क्योंकि सबकी शक्लें एक दूसरे से मिलती थी।

तायवो की पत्नी तो यह देख कर बड़े असमंजस में पड़ गयी क्योंकि शहर के लोगों की तरह से वह भी उन दोनों में से अपने पति को नहीं पहचान सकी।

दोनों ने हँसते हुए उसे अपने पति को पहचानने की चुनौती दी। पहले तो वह बड़ी परेशान हुई पर फिर उसने पहचान लिया।

बच्चों क्या तुम बता सकते हो कि उसने अपने पति को कैसे पहचाना?

उसने दोनों समूहों को अलग अलग कर दिया। हालाँकि दोनों समूह दिखने में एक जैसे थे पर वे यह भूल गये थे कि तायवो के बिल्ले और कुत्ते के गले में उसका अपना हार पड़ा था।

बस इसी से उसने अपने पति को पहचान लिया।

सभी लोग वहाँ दो साल तक खुशी खुशी रहे। दो साल बाद केहिन्डे बोला कि अब उनको अपने माता पिता को देखने जाना चाहिये। सो कुछ ही दिन बाद वे अपने घर की तरफ चल पड़े।

जब वे कपास के पेड़ के पास पहुँचे तो उनके चाकू अभी भी वहीं गड़े हुए थे बस फर्क इतना था कि अब तायवो वाला चाकू मैला और जंग लगा नहीं था। वह भी अब केहिन्डे के चाकू की तरह चमक रहा था। उन्होंने अपने अपने चाकू पेड़ से निकाल लिये और फिर घर की तरफ चल दिये।

दोनों जब घर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनका घर खाली है और टूट फूट चुका है। वे बहुत दुखी हुए। उनके माता पिता का कहीं पता न था।

पूछने पर पता चला कि उनकी माँ कुछ साल पहले मर चुकी है और उनका पिता उनके जाने के कुछ दिन बाद ही मछली पकड़ते समय नदी में डूब गया था।

दोनों ने अपनी माँ की कब्र के बारे में पता किया और फिर वहाँ पहुँच कर केहिन्डे ने अपनी कमर से बोझा खोला। वह बोला — "मैं वह जादू का पानी अपने साथ लाया हूँ जिसे तुम्हारे ऊपर छिड़क कर मैंने तुम लोगों को ज़िन्दा किया था। देखें इसका यहाँ क्या असर होता है।"

कह कर उसने थोड़ा सा पानी अपनी माँ की कब्र पर डाला। पानी डालते ही वहाँ की जमीन हिलने लगी। सभी लोग पीछे हट गये।

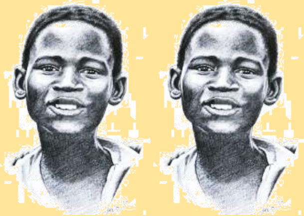
कुछ ही पल में जमीन फट गयी और वहाँ एक बड़ी चट्टान जमीन के ऊपर आ गयी। उसका नाम था ओलुमो। वह चट्टान आज भी अबेकुटा[51] शहर में देखी जा सकती है।

इसके बाद वे दोनों भाई उस जगह पर गये जहाँ उनका पिता डूब कर मरा था। उन्होंने वहाँ भी थोड़ा सा पानी डाला तो वहाँ पानी फैलने लगा और वहाँ ओसा नाम का एक लैगून बन गया जिसे आज लैगोस[52] कहते हैं। बच्चो कुछ साल पहले तक यही नाइजीरिया की राजधानी थी।[53]

तायवो और केहिन्डे फिर तायवो के शहर लौट आये। वहाँ तायवो ने कई साल राज किया। काफी दिन भाई के साथ रहने के बाद केहिन्डे ने सोचा कि वह अपने शहर जा कर फिर से डाक्टरी करेगा।

तायवो उसको कपास के पेड़ तक छोड़ने आया। कुछ समय बाद केहिन्डे मर गया और उसके साथ ही मर गये उसके जानवर।

इधर तायवो ने बहुत सालों तक राज किया। उसके कई बच्चे हुए। जब वह मरा तो उसके जानवर भी उसके साथ ही मर गये। उसके मरने के बाद उसका बेटा राजा बना और वह ओयो[54] का पहला राजा था।



[51] Olumo rock can still be seen in Abeokuta town in Nigeria

[52] Osa named Lagoon which is now called Lagos. It was the capital of Nigeria till 1991.

[53] Its new capital is Abuja since 12 Dec 1991 replacing Lagos.

[54] Oyo is an adjacent state to Lagos in Nigeria.

14 मुर्गी और बाज़[55]

एक बार एक जगह एक मुर्गी रहती जो साँपों और लोमड़ियों से बहुत परेशान थी क्योंकि जब भी वह अपने बच्चों को ले कर खाना ढूँढने निकलती थी वे उसके बच्चों पर हमला कर देते थे। और ऐसा अक्सर होता।

मुर्गी के कितना भी होशियार रहने के बावजूद वे उसके बच्चों को परेशान करने से नहीं चूकते थे। यह सब देख कर उसने यह सब एक बाज़ से कहने की सोची क्योंकि वह बाज़ कई तरह के जू जू[56] जानता था।

मुर्गी ने सारी बातें बाज़ को बहुत खुलासा बतायीं और इस काम में उसकी सहायता माँगी। बाज़ बोला कि वह उसकी सहायता करने के लिये तैयार है परन्तु इस काम के लिये उसको मुर्गी के हर 10 बच्चों में से दो बच्चे चाहिये।

मुर्गी को यह सुन कर बहुत दुख हुआ क्योंकि वह अपने बच्चों की सुरक्षा के लिये ही तो उसके पास गयी थी और वही उसके बच्चे खाने के लिये माँग रहा था। परन्तु फिर यह सोच कर वह तैयार हो गयी कि सारे बच्चों को खोने से तो अच्छा है कि 10 में से केवल दो बच्चे ही जायें।

[5555] The Hen and the Hawk (Tale No 14) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[56] Ju Ju means magic or Black Magic. It is like Tonaa Totakaa of India.

सो बाज़ ने उसके लिये एक बहुत ही असरदार जू जू बनाया और मुर्गी को दे दिया। कुछ समय बाद ही मुर्गी ने 20 अंडे दिये और जब उन अंडों में से उसके बच्चे निकल आये तो मुर्गी बहुत खुश हुई।

वह अपने बच्चों के साथ जहाँ भी जाती तो अब कोई साँप या लोमड़ी उसके बच्चों को परेशान नहीं करते थे। ऐसा अब उनके साथ हर बार होने लगा और अब उसके सारे बच्चे सुरक्षित थे।

अब तक मुर्गी के 60 बच्चे हो चुके थे। वह अपने परिवार को देख कर बहत खुश थी और उसको अपने परिवार पर बड़ा घमंड था।

यह सब तो हुआ परन्तु वह बाज़ के साथ किया गया अपना वायदा भूल गयी और उसने उसको अपने हर 10 बच्चों में से दो बच्चे नहीं दिये।

बाज़ भी यह सब भूल गया था। कुछ समय बाद बाज़ को ध्यान आया कि अब तो मुर्गी का परिवार काफी बड़ा हो गया होगा पर उसने अपने वायदे के अनुसार मुझे अपने बच्चे नहीं दिये तो वह मुर्गी से अपना हिस्सा लेने पहुँचा।

मुर्गी ने उसको बहुत कुछ सुनाया और उसको अपने 12 बच्चे देने से मना कर दिया। इससे बाज़ बहुत नाराज हुआ और जा कर एक देवता से शिकायत की। उस देवता का नाम था ओरिशा[57]।

[57] Orisha – name of the god

उस देवता ने बाज़ की बात सुन कर उसकी शिकायत को ठीक समझा और उसको मुर्गी के 12 बच्चे लेने की इजाज़त दे दी। अब बाज़ मुर्गी के 12 बच्चे एक साथ तो ले कर जा नहीं सकता था सो वह उसके बच्चे एक एक करके ले जाता रहा।

मुर्गी के वायदा पूरा न करने पर वह आज तक उसके बच्चे एक एक करके ले जाता है और मुर्गी का परिवार इतना बड़ा है कि वह अपने परिवार के 20 परसैन्ट बच्चों की गिनती भी नहीं कर सकती कि बाज़ को उसके कितने बच्चे लेने चाहिये।



15 ईगा चिड़िया और उसके बच्चे[58]

ईगा चिड़िया[59] एक छोटी सी सुन्दर सी काले और पीले रंग की चिड़िया होती है जो पश्चिमी अफ्रीका में सेनेगल देश से ले कर कैमेरून देश तक पायी जाती है।

यह काँटे वाली झाड़ियों और घास के मैदानों में रहती है। यह दो अंडे देती है और इसके ये अंडे सफेद, हल्के नीले या जामुनी रंग तक के होते हैं।

जब यह अपना नया घोंसला नहीं बना रही होती है तब यह अपना पुराना वाला घोंसला तोड़ रही होती है। यह बहुत ही चंचल और शोर मचाने वाली चिड़िया है और लड़ने में भी बड़ी बहादुर है। परन्तु जब इसके घोंसले में से बड़े बड़े चिड़े इसके छोटे छोटे बच्चों को उठा कर ले जाते हैं तब यह कुछ नहीं बोलती है।

ऐसा सब क्यों हुआ इसकी भी एक बड़ी अजीब सी कहानी है। यह उस समय की बात है जब अकाल के समय लोगों की दी हुई बलि को स्वर्ग में ले जाने की वजह से गिद्ध के पंख जल गये थे।[60]

उस समय एक ईगा चिड़ा और उसकी पत्नी अपने घोंसले में रहते थे। पत्नी ने बहुत ही सुन्दर दो अंडे दिये। ईगा चिड़े ने इतने

---

[58] Concerning the Egas and Their Young (Tale No 15) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[59] Ega bird is a very small black and yellow bird found in Western Nigeria from Senegal to Cameroon countries

[60] To read this account read the Tale No 9 entitled "Bali Ko Swarg Bhejanaa", published in this book.

सुन्दर अंडे पहले कभी नहीं देखे थे सो वह उन अंडों को देख कर इतना खुश हुआ कि उसने सभी चिड़े और चिड़ियों को बुला कर उनको अपने अंडे दिखाये।

चिड़ियों ने उनका घर भी देखा जो ताड़ की पत्तियों और घास का बना हुआ था और उसमें रखे देखे ये दो अंडे। सब कुछ बहुत सुन्दर दिखायी दे रहा था। चारों तरफ उनके घर के बारे में बातचीत होने लगी।

ईगा चिड़ा बहुत ही चंचल और बातूनी था और इस घटना के बाद तो वह कुछ और ज़्यादा ही चंचल और बातूनी हो गया था। दूसरे पक्षी यह देख कर चिढ़ गये और वे उसको, उसकी पत्नी को, उसके घर को और उसके अंडों को सबको गालियाँ देने लगे।

अब ऐसा कुछ हुआ कि उनकी गालियाँ सच होने लगीं और ईगा परिवार की किस्मत बदलने लगी। जब उन दोनों अंडों में से बच्चे निकले तो वे भी बड़े जिद्दी और माँ बाप का कहना न मानने वाले निकले।

जैसे जैसे वे बड़े होते गये वे और सुस्त होते गये। घर का सारा काम उनके माता पिता को ही करना पड़ता। वे सफाई के लिये भी अपने घोंसले से बाहर नहीं निकलते थे सो उनका घोंसला भी गन्दा रहने लगा।

माता पिता दोनों ने उनको सुधारने की बहुत कोशिश की पर नाकामयाब रहे। सो उन्होंने बच्चों से कहा कि वे उनके पुराने घर में

रह सकते हैं और वे अपने लिये दूसरा नया घर बना लेंगे। ऐसा कह कर वे अपना नया घर बनाने दूर चल दिये।

काफी कठिनाई और मेहनत से ईगा पति पत्नी ने अपना नया घर बनाया पर जैसे ही उनका नया घर बन कर तैयार हुआ उनके बच्चे अपने पुराने घर से उड़ कर उनके नये घर में रहने आ गये।

यह सब देख कर पिता ईगा बहुत दुखी हुआ और उसने एक एक तिनका और एक एक पत्ता खींच कर अपना नया घर तोड़ दिया।



अब बच्चों को उस घर से भी बाहर निकलना पड़ा तो उन्होंने यह सब मामला पक्षियों के राजा गरुड़[61] को जा कर सुनाया। उन्होंने उसे बताया कि उनके माता पिता ने उनको घर से बाहर निकाल दिया है।

गरुड़ ने ईगा माता पिता और उनके बच्चों को बुलाया और उनसे यह सारा मामला निपटने के लिये कहा तो ईगा माता पिता ने साफ इनकार कर दिया कि वह इन बच्चों को अपने साथ रखने के लिये तैयार नहीं है।

पर गरुड़ ने कहा कि इन बच्चों के माता पिता होने के नाते यह तुम्हारा फर्ज बनता है कि तुम अपने बच्चों का पालन पोषण करो इसलिये अगर तुम अपने बच्चों को घर से निकालते हो तो तुम

[61] Translated for the word “Eagle” – see its picture above.

अपराधी हो और इस अपराध की सजा तुम इस तरह भुगतो कि तुम हमेशा ही अपना घर बनाते रहो।

इसलिये वे हर समय वे अपना घर ही बनाते रहते हैं और जब कोई बड़ी चिड़िया उनके बच्चे ले जाती है तो वे बिल्कुल भी परेशान नहीं होते।



16 हाथी और मुर्गा[62]



एक बार एक हाथी और एक मुर्गे में बहस छिड़ गयी। हाथी अपने आपको सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर समझता था। पर एक दिन उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब एक मीटिंग में एक मुर्गे ने उसको ललकारा।

मुर्गा कूद कर बाहर आया और बोला — "ऐसा नहीं है दोस्त। तुम अपने बड़े शरीर की वजह से शायद ऐसा सोचते हो कि केवल तुम ही एक सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर हो पर सच्चाई तो यह है कि तुम एक बहुत ही बड़े बेवकूफ जानवर हो जो तुम उस ताकत का भी इस्तेमाल नहीं कर सकते जो देवताओं ने तुम्हें दी है।"

हाथी तो यह सुन कर सकते में आ गया। वह तो यह सोच ही नहीं सका कि देवताओं ने भला उसे ऐसी कौन सी ताकत दी है जिसका वह इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है।

वह बोला — "अगर मैं सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर नहीं हूँ तो फिर मुझे बताओ कि सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर कौन है मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

---

[62] The Elephant and the Cock (Tale No 16) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

मुर्गा बोला — "मैं साइज़ में बड़े जानवर की बात नहीं कर रहा हूँ बल्कि मैं उनकी ताकतों की बात कर रहा हूँ। बिना ताकत के साइज़ की क्या कीमत?"

हाथी बोला — "बिना ताकत के साइज़ की क्या कीमत? यह तो तुम ठीक कहते हो दोस्त। पर यह तो तुमको मुझे बताना ही पड़ेगा कि सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर कौन सा है।"

मुर्गा बोला — "मैं हूँ।"

इस जवाब पर सभी जानवर चौंक गये। कुछ को तो यह सुन कर बहुत ज़ोर से हँसी आ गयी, कुछ नाराज हो गये, और कुछ मजा लेने लगे।

हाथी ने कोई भाव नहीं दिखाया बल्कि जब सब शान्त हो गये तो वह अपनी शाही शान से उठा और अपनी सूँड़ हिलाते हुए बोला — "ओ मुर्गे, ज़रा मेरी तरफ देखो। मैं जंगल का राजा हूँ। सबसे ज़्यादा बड़ा और सबसे ज़्यादा ताकतवर।

मैं जिधर से भी गुजर जाता हूँ अपने निशान छोड़ जाता हूँ। सभी मेरे आने को पहचान जाते हैं। घने से घने जंगल में से भी मैं अपना रास्ता बना लेता हूँ। बड़े से बड़े खजूर के पेड़ को मैं बात की बात में गिरा देता हूँ। और दूसरा कौन सा जानवर ऐसा है जो ऐसे काम कर सकता है? वह मेरे सामने आये और बोले।"

यह कह कर हाथी बैठ गया और मीटिंग में आये सभी जानवरों ने उसकी तारीफ में तालियाँ बजायीं।

मुर्गा फिर उठ खड़ा हुआ और बोला — "तुम्हारा यह शरीर और यह ताकत किस काम की? बाकी सारे जानवर जंगल में से बिना कोई निशान छोड़े हुए चुपचाप से और तेज़ी से निकल जाते हैं। तुम्हारे पेड़ तोड़ने की इस बेवकूफी का क्या फायदा है?

तुम्हारी बजाय तो लगता है कि मैं ही सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर हूँ। मैं लोगों को गहरी से गहरी नींद में सोते हुए से जगा देता हूँ। मैं और बहुत सारे आश्चर्य के काम कर सकता हूँ।

यहाँ तक कि मैं मुर्दों को भी उठा सकता हूँ। मैं ही तो वह देवता हूँ जो सूरज को रोज धरती पर सुबह सुबह बुलाता हूँ।"

यह सब सुन कर तो वहाँ बैठे सभी जानवरों में एक चुप्पी सी छा गयी और वे एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

आखिर एक कछुआ उठा और बोला — "ठीक है ऐसा करते हैं कि दोनों का एक दिन मुकाबला रखते हैं और फिर हम लोग बतायेंगे कि धरती का सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर कौन है।"

यह राय तो सभी को बहुत अच्छी लगी। हाथी और मुर्गा भी इस बात पर राजी हो गये। मुकाबले का दिन भी तय कर दिया गया। तय किये हुए दिन पर सभी जानवर इकट्ठा हो गये।

पहला नम्बर हाथी का था। एक बड़ा घना जंगल उसके लिये चुना गया था। एक ज़ोर की चिंघाड़ के साथ हाथी उस जंगल में घुसा। अपने पीछे धूल मिट्टी का घना बादल छोड़ते हुए वह तुरन्त ही जानवरों के सामने से गायब हो गया।

फिर पेड़ों के उखड़ने की आवाज आयी, टूटी हुई शाखें और पेड़ हवा में उड़ने लगे और जंगल मे बहुत ज़ोर का शोर होने लगा।

अब हुआ यह कि इस जंगल में छोटे छोटे कीड़े भी बहुत सारे थे। जब हाथी जंगल में घुसा तो ये बहुत सारे कीड़े मकोड़े डर के मारे हाथी के शरीर पर बैठ गये। क्योंकि उनको लगा कि उनके लिये वही सबसे ज़्यादा सुरक्षित जगह थी।

सो जैसे जैसे हाथी जंगल में आगे बढ़ता गया उसका शरीर उन कीड़ों से ढकता गया। उधर गुस्से और धूल की वजह से वह उनको देख ही नहीं पाया परन्तु उसको लगा कि उसका शरीर भारी और ज़्यादा भारी होता जा रहा है।

आखिर हाथी थक गया। उसने जंगल से गुजरना छोड़ दिया और नीचे लेट कर सो गया।

मुर्गा यह सब देख रहा था। जब उसने देखा कि उसका मुकाबले वाला सो गया तो वह हाथी के शरीर पर बैठ गया और अपनी चोंच से उन कीड़ों को एक एक करके खाने लगा।

वह सारे कीड़े नहीं खा पाया क्योंकि हाथी के गिरते ही वे कीड़े उसके शरीर से उतर कर अपने टूटे घरों की तरफ जाने लगे थे।

आखिर हाथी का सारा शरीर साफ हो गया और अब उस पर कोई कीड़ा नहीं रह गया था। असल में तो हाथी कीड़ों से पूरी तरह आजाद तो आज ही हुआ था।

जब उसकी आँख खुली तो उसने अपने आपको हँसते हुए जानवरों के बीच पाया। मगर उसको तो अभी जंगल और भी पार करना था। उसकी पीठ पर मुर्गा अभी भी बैठा था जिसकी चोंच की मार वह अभी भी अपने शरीर पर महसूस कर रहा था।

वह तुरन्त ही उठ गया। अब उसको अपना शरीर तो बहुत ही हल्का लग रहा था परन्तु सारे शरीर में मुर्गे की चोंच के घाव महसूस हो रहे थे। उसको अपने शरीर के हल्केपन और दर्द से पता चल गया कि मुर्गे ने उसके शरीर को खाया था।

यह सोचते ही वह डर गया। डर के मारे वह ज़ोर से चीखा और जंगल में दौड़ गया। और जानवरों से कहता गया कि आगे से वह किसी ऐसे मुकाबले में हिस्सा नहीं लेगा जिसका ठीक से इन्तजाम न किया गया हो। और यह भी कि वह अब मुर्गे से अपने शरीर का कोई नुकसान नहीं चाहता।

उस दिन से हाथी घने जंगलों में रहता है मुर्गों की आवाज से भी दूर। मुर्गे को सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर नहीं माना जाता पर फिर भी उसने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी पर आज भी मुर्गे अपने आपको दुनियाँ का सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर समझते हैं।



17 एक शिकारी और एक हिरनी[63]

बहुत पुरानी बात है कि नाइजीरिया के एक गाँव में ओगुनलोला[64] नाम का एक शिकारी रहता था। वह रोज अपना तीर कमान ले कर शिकार के लिये जंगल चला जाता था।

वह अपने गाँव में सबका बहुत प्रिय था क्योंकि वह जंगल से कभी भी खाली हाथ नहीं लौटता था। वह हमेशा ही काफी शिकार ले कर लौटता था और कई लोगों को अपने लाये शिकार का माँस दे देता था इसलिये हर एक को थोड़ा बहुत माँस खाने को मिल ही जाता था।

लोग उसको उसके शिकार के बदले में उसको चावल, केला, ताड़ी[65] आदि दे दिया करते थे।

एक दिन ओगुनलोला शिकार पर गया तो जंगल में कुछ दूर निकल गया और एक अनजानी जगह जा पहुँचा। जब उसे शिकार करना होता था तो अक्सर वह पेड़ पर चढ़ कर जानवरों का इन्तजार किया करता था।

आज भी वह एक पेड़ पर चढ़ा जानवर का इन्तजार कर रहा था पर काफी देर के इन्तजार के बाद भी उसको कोई शिकार हाथ नहीं लगा।

---

[63] The Hunter and a Hind (Tale No 17) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa
[64] Ogunlola – name of the hunter
[65] Translated for the words "Palm Wine" – made from palm juice.

शाम ढल रही थी और उसको घर वापस भी जाना था। उसका घर वहाँ से थोड़ा दूर था सो वह पेड़ से नीचे उतर कर घर जाने की सोचने लगा।

वह पेड़ से नीचे उतरने ही वाला था कि उसकी नजर पास की झाड़ी में खड़ी एक हिरनी पर पड़ी। उसको देख कर वह बहुत खुश हो गया।

तुरन्त ही उसने अपना तीर कमान निकाला और तीर कमान पर चढ़ा कर उसे चलाने ही वाला था कि उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि उस हिरनी ने अपनी खाल उतारनी शुरू कर दी और कुछ ही पल में वहाँ एक सुन्दर लड़की खड़ी थी।

लड़की बहुत सुन्दर थी। इतनी सुन्दर लड़की ओगुनलोला ने अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं देखी थी। उस लड़की ने हिरनी वाली खाल पास में पड़े पत्थर के नीचे दबा दी और धीरे से जंगल में गायब हो गयी।

ओगुनलोला यह सब देख कर भौंचक्का रह गया था। उसने कुछ देर तक तो उस लड़की के आने का इन्तजार किया पर फिर जब वह नहीं आयी तो उसने पत्थर के नीचे रखी उस हिरनी की खाल को उठाया और उसे ले कर घर वापस आ गया।

अगली सुबह वह तड़के ही उठा, उस खाल को एक थैले में डाला और फिर से उसी जगह की तरफ चल दिया।

वहाँ जा कर ओगुनलोला ने सारा दिन शिकार और उस लड़की का इन्तजार किया परन्तु उस दिन न तो उसको शिकार ही मिला और न ही वह लड़की आयी।

पर शाम ढले जब वह घर वापस आने के लिये तैयार हो रहा था तो वह लड़की उसको फिर दिखायी दी। वह लड़की पत्थर के पास पहुँच कर अपनी खाल ढूँढने लगी।

ओगुनलोला ऊपर से ही बोला — "क्या तलाश कर रही हो?"

लड़की चौंक गयी पर मजबूरी की वजह से वह डरी नहीं और बोली — "मैं यहाँ एक हिरनी की खाल तलाश कर रही हूँ जो यहाँ इस पत्थर के नीचे रखी हुई थी।"

क्योंकि वह लड़की बहुत सुन्दर थी इसलिये ओगुनलोला ने पहले दिन शाम को जो कुछ भी देखा था उसको सब सच सच बता दिया और कहा कि अगर वह उसके घर चल कर उससे शादी कर लेगी तो वह उसकी खाल वापस कर देगा।

उस लड़की का नाम अयिन्के[66] था। वह इस शर्त पर राजी हो गयी कि उसके रूप बदलने का यह भेद वह किसी को बतायेगा नहीं।

ओगुनलोला उसकी यह शर्त तुरन्त ही मान गया। सो अयिन्के ने अपने वायदे के अनुसार उसे वह खाल भेंट में दे दी और वह उसके साथ उसके घर चल दी।

---

[66] Ayinke – name of the girl who had the skin of the hind

उससे पहले ओगुनलोला के दो पत्नियाँ और थीं अबाके और अशाके[67]। दोनों ही अयिन्के को देख कर आश्चर्य में पड़ गयीं क्योंकि वह उनके गाँव की नहीं थी और उन्होंने उसको कभी देखा भी नहीं था।

ओगुनलोला ने उनको समझाया कि वह दूर के किसी गाँव की थी। सभी ने उसकी बात मान ली और अबाके और अशाके ने भी उसका स्वागत किया। सभी खुशी खुशी रहने लगे।

कुछ समय बाद अयिन्के ने एक बेटे को जन्म दिया। उसका नाम उन्होंने ओगुनरिन्डे[68] रखा। अयिन्के अपने बेटे को बहुत प्यार करती थी। अभी तक ओगुनलोला ने यही सोच कर वह हिरनी वाली खाल नष्ट नहीं की थी कि कहीं उसका जादू चला न जाये।

दो साल के बाद अयिन्के में कुछ बदलाव आने लगे। अब उस को ओगुनलोला के घर में सन्तोष नहीं मिलता था। उसको अपने बेटे में भी कोई रुचि नहीं रह गयी थी।



ओगुनलोला ने भी उसका यह बदलाव देखा और सोचा कि शायद वह अपने जंगली जीवन में फिर से वापस जाना चाहती हो इसलिये उसने उस खाल को कोलानट[69] की एक टोकरी में छिपा कर ऊपर छत से टाँग दिया।

---

[67] Abake and Ashake – names of the two previous wives of Ogunlola

[68] Ogunrinde – name of the son of Ogunlola

[69] Cola Nut is kind of nut of a fruit which is eaten like Indian betel nut. Nigerians offer this nut as an auspicious thing when they meet each other. See its picture above.

एक दिन अयिन्के ने ओगुनलोला से अपनी खाल माँगी तो ओगुनलोला ने उसे देने से इनकार कर दिया और साथ में उसने उसे यह भी बताने से इनकार कर दिया कि वह उसने कहाँ छिपायी थी।

अयिन्के ने ओगुनलोला से कई बार पूछा कि वह खाल उसने कहाँ रखी थी पर ओगुनलोला ने उसे यह बता कर ही नहीं दिया कि वह खाल उसने कहाँ छिपायी थी। इस पर दोनों में झगड़ा होने लगा।

अभी तक ओगुनलोला अबाके और अशाके से इस बात को छिपाये हुए था परन्तु जब झगड़े बढ़ने लगे तो उन दोनों को भी शक हुआ कि यह मामला क्या है।

ओगुनलोला के जंगल जाने के बाद अयिन्के रोज अपनी खाल ढूँढती और अबाके और अशाके के पूछने पर भी वह उन्हें कुछ नहीं बताती कि वह क्या ढूँढ रही है।

यह सब देख कर एक दिन अबाके और अशाके दोनों बाजार जाने का बहाना करके पास में ही चटाइयों के पीछे छिप कर बैठ गयीं और अयिन्के को देखने लगी कि वह क्या करती है।

उन्होंने देखा कि अयिन्के ने एक सीढ़ी ली और कोलानट की टोकरी में छिपी हुई हिरनी की खाल निकाल ली।

यह देख कर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ पर इससे ज़्यादा आश्चर्य तो उन्हें तब हुआ जब उसने वह खाल पहन ली और हिरनी बन कर ओगुनलोला के घर से चली गयी।

अबाके और अशाके इस बात पर ओगुनलोला से बहुत गुस्सा हुईं कि उसने एक जानवर को अपनी पत्नी बना रखा था। वे तुरन्त अपने माँ बाप के घर गयीं और वहाँ जा कर गाँव के सरदार को सब बातें बतायीं। उनकी बातें सुन कर सरदार ने एक मीटिंग बुलायी।

इस बीच में उस हिरनी को जंगल में अपना पति दिखायी दे गया। वह उछलती कूदती उसके सामने आ गयी और इससे पहले कि वह उसे मारता वह उससे बोली — "ओ मेरे शिकारी पति, मुझे मारना नहीं। जब तुम नहीं थे तो मैंने अपना रुपहला कोट पहना और अपनी चीज़ें अपने बेटे को दे दीं। मुझे नहीं मारना।"

उसके बाद वह बोली क्योंकि उसने उसको उसकी खाल नहीं दी थी इसलिये अब वह उसके घर नहीं जाना चाहती थी और अब वह हिरनी ही बन कर रहेगी।

वह अब अपने घर जा सकता था और अपनी पत्नियों से उस के गायब होने के बारे में जो चाहे सो कह सकता था। यह कह कर वह भाग गयी।

ओगुनलोला हक्का बक्का सा उसको जंगल में भागते हुए जाता देखता रहा। जब वह गाँव लौटा तो आधा पागल सा दिखायी दे रहा था।

गाँव लौटने पर उसे पता चला कि गाँव के सारे लोग उसके खिलाफ हो चुके हैं और गाँव के सरदार ने उसको एक जानवर को पत्नी बना कर रखने के जुर्म में उसको और उसके बेटे दोनों को गाँव

से बाहर निकाल दिया है। सो वे दोनों गॉव छोड़ कर जंगल में रहने लगे।

ओगुनलोला बहुत दिनों तक जिया और अपना और अपने बेटे का केवल शिकार करके पेट पालता रहा। बाद में उसका बेटा भी जंगली हो गया और एक दिन जंगल में गायब हो गया।

पत्नियों और बेटे के जाने के बाद वह अकेला हो गया था और जब वह मरा तब भी वह अकेला ही था।



18 ओनीयेये और राजा ओलूडोटुन की बेटी[70]

बहुत पुरानी बात है जब योरुबा लोगों के पुरखे योरुबा देश में आये ही आये थे। उस समय वहाँ एक राजा था ओलूडोटुन[71]। इस राजा के केवल एक ही बच्चा था और वह थी उसकी बेटी, बड़ी सुन्दर सी।

जब वह बड़ी हुई तो राजा को उसकी शादी की चिन्ता हुई पर वह इसी सोच में पड़ा था कि वह उसकी शादी किससे करे। कई नौजवानों ने उससे शादी की इच्छा प्रगट की थी पर राजा ने सबको मना कर दिया था।

इन सब परेशानियों से बचने के लिये एक दिन उसने कुछ मजाक में और कुछ ठीक दुलहा चुनने के विचार से यह घोषित कर दिया कि जो भी आदमी एक ऐसा जानवर उसके पास लायेगा जिसकी **152** पूँछ होंगी वह उसी से अपनी बेटी की शादी करेगा और उसको अपना आधा राज्य भी देगा।

राज्य के सारे शिकारियों में राजा की यह घोषणा एक आग की तरह फैल गयी। किसी शिकारी ने ऐसा जानवर कभी न सुना था न देखा था। कुछ ने राजा को पागल भी समझा।

[7070] Oniyeye and King Oludotun's Daughter (Tale No 18) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria

[71] Oludotun was the King in Yorubaland.

उनमें से एक शिकारी जिसका नाम था ओनीयेये[72] वह उस राज्य का बड़ा अच्छा शिकारी था। उसने तय किया कि अगर ऐसा कोई जानवर धरती पर है तो वह उसको राजा के लिये जरूर मार कर लायेगा और राजकुमारी से शादी जरूर करेगा।

वह एक इफा पुजारी[73] के पास गया और उससे यह पता करने के लिये कहा कि दुनियाँ में ऐसा कोई जानवर है भी या नहीं जिसकी **152** पूँछ हों। पुजारी ने कहा कि अगर वह उसको एक छोटी सी भेंट देगा तो वह यह बात उसके लिये पता कर देगा। ओनीयेये राजी हो गया।

तीन दिन बाद इफा पुजारी ने उसको बुलाया और कहा — "ऐसा जानवर आज भी धरती पर है पर पूरी दुनियाँ में वह बस एक ही है। मेरे जूजू[74] ने मुझे बताया है कि वह एक खोखले पहाड़ में रहता है पर वह खोखला पहाड़ है कहाँ, यह मैं नहीं जानता। केवल सपने में ही वहाँ पहुँचा जा सकता है।

और अगर वह जानवर किसी के सपने में आ जाये तो जागने पर उसको देवताओं को कोई बलि जरूर चढ़ानी चाहिये। मेरे बेटे, इससे ज़्यादा मैं तुमको और कुछ नहीं बता सकता।"

ओनीयेये ने पुजारी को धन्यवाद दिया और चला गया।

---

[72] Oniyeye – name of the hunter

[73] Ifa Priest – their traditional religion's priest

[74] Ju Ju is a kind of magic or Black Magic. It is like Ojhaa of India who do Tonaa Totakaa. Here it may mean the god of this magic also.

ओनीयेये बहुत दिनों तक सोचता रहा कि उस **152** पूँछ वाले जानवर के पास कैसे पहुँचा जा सकता है। आखिर उसने एक तरकीब सोची।

उसने अपने सब शिकारी दोस्तों और भाइयों से कह दिया कि वह एक लम्बे सफर पर जा रहा है और दो महीने से पहले घर नहीं लौटेगा।



उसने अपना तीर कमान और शिकारी ताबीज[75] उठाया और अपने लम्बे सफर पर चल दिया। वह जंगल की तरफ पैदल ही चल दिया और कई दिनों तक चलता रहा। आखिर में वह एक ऐसी जगह पर आ गया जहाँ बहुत सारे जंगली जानवर रहते थे।

वहाँ उसने एक ऐसी खुली जगह तलाश की जहाँ बहुत सारे जानवर आते रहे होंगे। वहाँ उसने अपने तरकस का तकिया लगाया, अपनी कमान अपने पैरों के नीचे रखी और बिल्कुल बिना हिले डुले लेट गया ताकि वह मरा हुआ लगे।

काफी देर तक वह ऐसे ही लेटा रहा तब कहीं जा कर उस घास में उसे कुछ आवाजें सुनायी दीं जो उसकी जानकारी के अनुसार पक्के तौर पर हवा की नहीं थीं। यह वह अपने अनुभव से कह सकता था।

[75] Taabeez – is a kind of Totakaa to be worn on the body for some kind of protection from calamities and sorrows and sicknesses or any kind of bad things. It may look like above shown in the picture but it may look like anything else also.



थोड़ी ही देर में वहाँ एक छोटा सा चूहा ओनीयेये को मरा जान कर उसके आस पास घूमने लगा। हालाँकि उस चूहे को ओनीयेये से होशियार रहने के लिये कहा गया था पर उसको मरा जान कर वह कुछ ज़रा ज़्यादा ही निडर हो गया था।

उस चूहे ने एक बार फिर चारों तरफ घूम कर देखा कि ओनीयेये मरा हुआ था कि नहीं और यह पक्का होने पर कि वह मरा हुआ ही था निडर हो कर गाने लगा।

जंगल के सब जानवर ओनीयेये को उसके ताबीज से पहचानते थे। चूहे का गाना सुन कर पहले बन्दर आये फिर और जानवर आये।

इस तरह वहाँ काफी जानवर इकट्ठा हो गये। सभी जानवर ओनीयेये को मरा जान कर बहुत ख़ुश थे कि अब उनको उससे कोई खतरा नहीं था और एक बार फिर से जंगल में शान्ति हो गयी थी।

केवल जानवर ही नहीं बल्कि पक्षी और कीड़े मकोड़े भी वहाँ आ कर जमा होने लगे थे। जब वे उसको देख देख कर जाने लगे तो रास्ते में दूसरे जानवरों को भी बताते जाते थे कि जाओ ओनीयेये के मरे हुए शरीर को देख आओ। वह अब मर चुका है।

ओनीयेये के मरने की खबर **152** पूँछ वाले जानवर ने भी सुनी। यह खबर उसने पक्षियों के मुँह से सुनी थी जो उधर से उड़ते

जा रहे थे। उसने एक पक्षी को बुलाया और उससे पूछा कि क्या यह खबर सच थी?

पक्षी बोला — "हॉ यह खबर सच है। जा कर अपनी ऑखों से देख लो न। तुम उसके मरे हुए शरीर को वहीं खुली जगह में देख सकते हो जहॉ वह पड़ा है। वह वहीं पड़ा है और उसके चारों तरफ कितने सारे जानवर खड़े हैं।"

वह बोला — "ठीक है तो जाओ और उनको सबको बता दो कि **152** पूँछ वाला जानवर ओनीयेये के मरे हुए शरीर को देखने आ रहा है। वे मेरे स्वागत की तैयारी करें।"

वह पक्षी वापस उड़ गया और जा कर वहॉ सब जानवरों को बोल दिया कि ओनीयेये के मरे हुए शरीर को देखने के लिये **152** पूँछ वाला जानवर आ रहा है।

ओनीयेये ने जब यह घोषणा सुनी तो उसे लगा कि उसकी तरकीब काम कर गयी। **152** पूँछ वाला जानवर अपने खोखले पहाड़ से निकल कर उस खुली जगह की तरफ चल दिया जहॉ ओनीयेये का मरा हुआ शरीर पड़ा हुआ था।

जब वह खुले मैदान में पहुँचा तो सारे जानवरों ने उसका राजा की तरह स्वागत किया।

152 पूँछ वाला जानवर बोला — "आज का दिन बड़ा अच्छा है। यह ओनीयेये बहुत ही चालाक शिकारी था। केवल इसी की वजह से मैंने बरसों से अपने आपको उस खोखले पहाड़ में कैद कर

रखा था। आज मैंने इसका मरा हुआ शरीर देख लिया है अब मैं भी तुम सबके साथ जंगल में रह सकता हूँ।"

यह सुन कर सारे जानवर खुशी से फूले न समाये और तालियाँ पीटने लगे। फिर जानवर अपने राजा को ओनीयेये का मरा हुआ शरीर दिखाने के लिये लाये।

उस मरे हुए शरीर को देख कर राजा ने अपनी प्रजा से शाही शान से कहा — "उठाओ ओनीयेये के मरे हुए शरीर को और ले चलो मेरे खोखले पहाड़ में। मैं इसके ऊपर बैठ कर इसकी सवारी करता जाऊँगा।"

इन शब्दों को सुनते ही ओनीयेये उठ बैठा। उसने अपने तीर कमान सँभाल लिये। और जैसे ही उसने ऐसा किया सारे जानवरों में डर की एक लहर दौड़ गयी।

बजाय उसको उठाने के वे खुद ही जंगल की तरफ भाग लिये। केवल **152** पूँछ वाला जानवर ही ओनीयेये के सामने खड़ा रह गया।

ओनीयेये उसको मारने ही वाला था कि उसने ओनीयेये से प्रार्थना की कि अगर वह उसको छोड़ देगा तो वह ज़िन्दगी भर उसका गुलाम बन कर रहेगा। सो ओनीयेये ने उसको छोड़ दिया और उसको राजा ओलूडोटुन के पास ले आया।

बहुत सारे लोग इस **152** पूँछ वाले अजीब जानवर को देखने आये। राजा खुद भी उसको देख कर दंग रह गया क्योंकि उसने तो

कभी यह सोचा ही न था कि **152** पूँछ वाला जानवर दुनियाँ में भी कोई हो सकता है। उसने तो यह घोषणा ऐसे ही कर दी थी पर अब उसको अपने सामने ज़िन्दा देख कर तो वह दंग ही रह गया था।

राजा ने अपनी घोषणा के अनुसार अपनी बेटी की शादी ओनीयेये से कर दी और उसको अपने आधे राज्य का मालिक भी बना दिया।

152 पूँछ वाला जानवर ओनीयेये के पास रहा और जंगल के सभी जानवर भी अब आराम से रहते थे क्योंकि अब ओनीयेये राजा हो गया था और वह शिकार के लिये जंगल नहीं जाता था।



19 किन किन और बिल्ला[76]

किन किन जंगल का सबसे छोटा पक्षी होता है जो अपने छोटा होने के बावजूद अपने आपको बहुत बड़ा समझता है। एक समय था जब कोई उसकी परवाह नहीं करता था। किन किन को भी यह पता था पर वह भी किसी की चिन्ता नहीं करता था।

एक जंगली बिल्ला भी था जो किन किन की तरह ही था। उसको भी कोई पसन्द नहीं करता था क्योंकि वह जानवरों की किसी मीटिंग में कभी भी नहीं जाता था और अलग अलग ही रहता था।

तुम लोग यह सोच रहे होगे कि जब इन लोगों को जंगल में कोई पसन्द नहीं करता था और दोनों का स्वभाव काफी मिलता जुलता था तो ये दोनों आपस में दोस्त होंगे पर ऐसा भी नहीं था। ये दोनों आपस में भी खूब झगड़ते रहते थे।

एक बार जानवरों के राजा ने पक्षियों के राजा से मिल कर यह प्लान बनाया कि वे अपने अपने जानवरों और पक्षियों से कहेंगे कि वे जानवरों के राजा के लिये एक नया खेत बनायें।

पक्षियों के राजा ने अपने पक्षियों को इस काम के लिये एक अच्छी सी जगह चुनने के लिये भेज दिया और उनको कह दिया कि वे खेत बनाने में जानवरों की सहायता करें।

[76] Kin Kin and the Cat (Tale No 19) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

सो बिल्ले को छोड़ कर सभी जानवर और किन किन को छोड़ कर सभी पक्षी जानवरों के राजा का खेत बनाने में जुट गये।



जंगल के बीच में एक बहुत बड़ा मैदान साफ किया गया। थोड़ी सी जमीन को जला कर याम[77] बोने के लिये तैयार किया गया। थोड़ी सी जमीन में मक्का उगायी जानी थी। पक्षियों ने बीज बोने में सहायता की।

किन किन यह सब कपास के एक पेड़ पर बैठा बैठा देख रहा था। उसको उन सबकी सहायता करने की कोई इच्छा नहीं थी बल्कि उसको तो गुस्सा आ रहा था कि उसको सहायता के लिये क्यों नहीं कहा गया। उधर बिल्ला भी छिप कर यह सब देख रहा था।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो जानवरों के राजा को उसका खेत देखने के लिये बुलाया गया। इतने में किन किन ने एक गीत गाया —

ओ जंगल के राजा, देखो जानवरों और पक्षियों ने क्या किया है
पेड़ उखाड़े, जमीन साफ की है
और जानवरों के राजा ने तुम्हारे राज्य में अपना खेत बनाया है
जो तुम्हारा है उसे ले लो और वहाँ घास फूस उगा दो

[77] Yam is a tuber vegetable and is a staple food of Nigeria. It sometimes more than 5-10 pounds each. See its picture above.

जैसे ही किन किन ने अपना गीत खत्म किया वह साफ किया हुआ मैदान और उस पर बनाया गया खेत सब गायब हो गये और वहॉ जंगल हो गया।

अगले दिन जानवरों के राजा को अपना खेत ही दिखायी नहीं दिया तो उसने जानवरों और पक्षियों को फिर से खेत बनाने का हुक्म दिया। सो एक बार फिर काम शुरू हुआ और खत्म हुआ।

जानवरों के राजा के खेत देखने से पहले किन किन ने फिर वही गीत गाया और उसका बना बनाया खेत फिर गायब हो गया। सो राजा को अपना खेत फिर दिखायी नहीं दिया।

जानवर और पक्षी बेचारे फिर काम पर लगे पर किन किन ने तीसरी बार भी वही गीत गा कर उनकी मेहनत पर पानी फेर दिया।

बिल्ले ने सोचा कि यह काम किन किन का ही हो सकता था और किसी का नहीं पर उसने कहा कुछ नहीं और इस सबका आनन्द लेता रहा।

खेत चौथी बार तैयार किया गया और इस बार उस पर एक चौकीदार तैनात करने का निश्चय किया गया ताकि उसका पता चल सके जो यह सब करके उनकी मेहनत बिगाड़ रहा था।

इस चौकीदारी के काम के लिये चीते को चुना गया। उसने सारा दिन तो चौकीदारी की पर दिन में गर्मी बहुत होने की वजह से शाम को उसे नींद आ गयी।

तभी किन किन ने गीत गाया और जब तक चीता जगा तब तक तो जंगल की झाड़ियों में वह बुरी तरह से फॅस चुका था।

जितनी बार भी खेत नष्ट होता, जानवरों के राजा का यह विचार और भी ज़्यादा पक्का होता जाता कि उसका काम पूरा हो और अपराधी का पता लगे पर हर चौकीदार का वही हाल हुआ जो चीते का हुआ था।

क्योंकि हर बार किन किन धीरज रख कर अपने समय का इन्तजार करता और समय आने पर अपना गीत गा कर उसे नष्ट कर देता।

अब तो बिल्ले को पूरा यकीन हो गया था कि यह सब किन किन का ही काम था। उसने सोचा कि यही समय था जब वह किन किन को हरा सकता था।

वह जानवरों के राजा के पास गया और बोला कि अबकी बार खेत बनने के बाद वह खुद उस खेत की रखवाली करेगा। अपनी अक्लमन्दी से उसने जानवरों के राजा को भी यह पता नहीं लगने देगा कि यह सब कौन कर रहा था।

राजा को भी इस बात पर आश्चर्य तो बहुत हुआ कि जो काम बड़े बड़े जानवर नहीं कर सके उसे यह छोटा सा बिल्ला कैसे करेगा पर फिर अपने मतलब के लिये उसने बिल्ले की इस प्रार्थना को भी मान लिया।

अब क्या था बिल्ला चल दिया शाही खेत की तरफ। वह शाही खेत को चारों तरफ से घूम घूम कर इधर उधर देखता रहा। आखिर उसको एक पेड़ की शाख पर किन किन बैठा दिखायी दे गया। वह वहाँ धीरज से बैठा खेत पूरा होने का इन्तजार कर रहा था।

इस बार बिल्ला चौकन्ना था। उसने किन किन को उसके गीत गाने और खेत नष्ट करने के पहले ही पकड़ लिया और उसे खा गया। सो अबकी बार उस खेत पर जंगल नहीं उगा।

अगले दिन सुबह जब सारे जानवर और पक्षी खेत पर पहुँचे तो वे यह सोचते हुए गये था कि उनको खेत फिर से बनाना पड़ेगा पर वे तो बहुत ही खुश हो गये जब उन्होंने देखा कि उनका खेत तो वैसा का वैसा ही है जैसा कि उन्होंने पहले दिन छोड़ा था।

उन्होंने बिल्ले को बुलाया और उससे पूछा कि उनका खेत कौन बरवाद करता था।

बिल्ला बोला — "तुम चिन्ता न करो। जो भी यह काम करता था मैंने उसको खा लिया है। अब तुम्हारा खेत बिल्कुल सुरक्षित है।"

बिल्ले को लगा कि हर एक जानवर यह जानने के लिये बेचैन है कि कौन खेत नष्ट करता था पर उसको किन किन का भेद छिपाने में बड़ा मजा आ रहा था। उसने सोचा कि किसी दिन मैं भी वह गीत अब जंगल के राजा के लिये गा सकता हूँ।

जानवरों के राजा ने बिल्ले को अपना खेत बचाने के लिये धन्यवाद दिया पर वह उससे उसका नाम छिपाने की जिद से खुश नहीं था जो उसका खेत इतनी बार नष्ट कर चुका था।

उधर चीता और दूसरे जानवर जो खेत की चौकीदारी ठीक से नहीं कर पाये थे वे बिल्ले से खार खाये बैठे थे।

चीता जानवरों के राजा के पास गया और बोला — "महाराज, मुझे बिल्ले की बात पर विश्वास नहीं होता। वह यह भी नहीं बताता कि उसने किसको खाया है और उसने खेत तैयार करने में भी हमारा साथ भी नहीं दिया।

जू जू[78] करने में तो वह हमेशा से ही बहुत होशियार है। मुझे तो ऐसा लगता है कि उसने अपने जू जू से ही हमारे खेत को इतनी बार नष्ट किया और अब आपका विश्वास पाने के लिये वह कह रहा है कि उसने खेत नष्ट करने वाले को खा लिया है। इसका केवल एक ही जवाब है और वह यह कि वह खुद ही बदमाश था और साथ में झूठा भी।"

यह सुन कर सभी जानवरों ने चीते की हॉ में हॉ मिलायी क्योंकि बिल्ले को कोई भी पसन्द नहीं करता था। सभी चिल्लाने लगे "बिल्ले को मारो, बिल्ले को मारो।"

---

[78] Ju Ju is a magic or Black Magic. It is like Tonaa Totakaa of India. It can be for good or for bad.

बिल्ले ने जब यह देखा कि सारे जानवर उसके खिलाफ हो गये हैं तो उसने इस सबकी सारी जिम्मेदारी मरे हुए किन किन पर डाली और जल्दी जल्दी पास के शहर की तरफ चल दिया।

उसने अपने आपको कोसा कि उसने सारा किन किन क्यों खाया। अगर वह उसका थोड़ा सा हिस्सा भी छोड़ देता तो वह आज उसको सबको दिखा सकता था। काफी समय बाद जब मामला कुछ दब गया तब वह जंगल की तरफ लौटा।



20 जंगल के राजा का दफ़न[79]

किन किन की मौत और बिल्ले के शहर भाग जाने के बाद जंगल में काफी दिनों के बाद शान्ति आयी थी और काफी दिनों तक रही भी।

जंगल के राजा ने जानवरों के राजा को अपना खेत बनाये रखने की इजाज़त दे दी थी और पक्षियों को भी छूट थी कि वे भी कहीं भी जा कर अपना मनमाना शिकार कर सकते थे।

एक दिन जंगल का राजा मर गया तब सभी जानवरों ने निश्चय किया कि उसका अन्तिम संस्कार बड़ी धूमधाम से किया जाये क्योंकि वह बहुत दयालु था। बहुत देर तक सभी जानवर उसके लिये की जाने वाली रस्मों के बारे में आपस में बात करते रहे कि क्या क्या कैसे कैसे होगा।

अन्त में यह निश्चय किया गया कि उस समय के लिये एक बहुत बड़ा ढोल बनना चाहिये और वह शुरू से आखीर तक सभी रस्मों में बजता रहना चाहिये जो काफी लम्बी चलने वाली थीं।

किसी ने सलाह दी कि किसी एक जानवर की खाल का ढोल बना लिया जाये। तो दूसरे ने कहा "नहीं, क्योंकि वह सभी के लिये दयालु था इसलिये सभी को इस ढोल बनाने में अपना अपना कुछ हिस्सा देना चाहिये जैसे हर कोई अपने कानों का एक हिस्सा दे

[79] The Funeral of the Forest King (Tale No 20) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

सकता है। इन सब टुकड़ों को शहर के किसी दरजी से सिलवा लिया जायेगा और फिर उसका ढोल बनवा लिया जायेगा।"

यह विचार सबको बहुत अच्छा लगा और जंगल के राजा के दफ़न में बजाने के लिये ढोल को बनाने के लिये सभी ने अपने अपने कानों के छोटे छोटे हिस्से दिये।

ऐलिरी चुहिया[80] ने भी अपने कान का एक छोटा सा हिस्सा दिया पर जानवरों ने यह कह कर उसे लेने से इनकार कर दिया कि उसके कान का वह हिस्सा बहुत ही छोटा था। हालाँकि उसने अपने कान का बहुत बड़ा हिस्सा दिया था।

इससे ऐलिरी चुहिया बहुत नाराज हो गयी और अकेली कहीं दूर चली गयी।

जब सारे जानवरों के कानों के टुकड़े इकट्ठे हो गये तो बिल्ला अचानक पता नहीं कहाँ से वहाँ आ गया।

जबसे वह जंगल छोड़ कर गया था तबसे वह यहाँ पहली बार आया था। वैसे उसने पहले ही यह सबको बता दिया था कि वह जंगल के राजा को आखिरी बार देखने जरूर आयेगा।

इस समय कोई भी उसकी इस प्रार्थना को ठुकराने की हालत में नहीं था। इसलिये उससे यह कह दिया गया कि वह आ तो सकता है मगर शर्त यह है कि वह शहर वापस जा कर किसी अच्छे दर्जी को बुला कर लाये क्योंकि वह शहर को अच्छी तरह से जानता था।

---

[80] Eliri mice

बिल्ला तुरन्त ही इस बात पर राजी हो गया। अगले दिन ही वह शहर लौट गया और वहाँ से वह एक अच्छे दर्जी को बुला लाया। उसने जानवरों के कानों के वे सारे टुकड़े सिल दिये। फिर वह एक ढोल बनाने वाले को बुला कर लाया और जल्दी ही ढोल भी तैयार हो गया।

बच्चों ध्यान रहे कि बिल्ले ने इस ढोल को बनाने में अपने कान का एक छोटा सा टुकड़ा भी नहीं दिया था। यह ढोल केवल दूसरे जानवरों के कानों के टुकड़ों से ही बना था।

जंगल के राजा के दफ़न की रस्में अब शुरू होने ही वाली थीं।

इस बीच ऐलिरी चुहिया गुस्से में भरी भरी देवताओं के पास पहुँची और जा कर अपना दुखड़ा रोया। जब देवताओं ने उसकी बात सुनी तो वह बहुत खुश हुई कि कम से कम कोई तो है जिसने उसकी बात सुनी।

देवताओं ने कहा — "तुम्हारे कान का हिस्सा न ले कर जानवरों ने बहुत बड़ी गलती की है। जानवरों को इस बात की सजा दिलवाने के लिये तुम जो भी सहायता हमसे माँगोगी हम तुम्हें देंगे।"

ऐलिरी ने यह सुन कर देवताओं को धन्यवाद दिया और कहा कि वह उनको तंग बिल्कुल भी नहीं करना चाहती थी परन्तु अगर

वे लोग उसको ढोलों के देवता अयान[81] की सहायता दे देते तो बड़ा अच्छा होता।

देवताओं ने तुरन्त ही उसको अयान की सहायता दे दी और ऐलिरी ने अयान को बता दिया कि उसको क्या करना है। जब दफ़न की रस्में शुरू हुईं तो सारे जानवर ढोल के चारों तरफ इकट्ठा हो गये और उन्होंने ढोल पीटना शुरू किया।

पर यह क्या? ढोल में से तो कोई आवाज ही नहीं निकल रही थी। सभी जानवरों ने बारी बारी से कोशिश की पर सब बेकार।

अन्त में दुखी हो कर उन्होंने वह ढोल वहीं छोड़ दिया और दूसरी रस्मों को पूरा करने में लग गये जो ढोल की आवाज के बिना बहुत ही बुरी लग रही थीं।

जैसे ही राजा का शरीर उठा कर ले जाया जा रहा था कि सभी चौंक उठे। ढोल में से तो आवाज आ रही थी। और यह सब करामात ऐलिरी ने अयान की सहायता से की थी।

सब जानवर ढोल की आवाज सुन कर ढोल के पास दौड़े आये और उन्होंने उसे फिर से बजाने की कोशिश की पर वह उनसे न बजा।

इस तरह हर बार जब भी वे राजा का शरीर ले जाते थे तो ढोल की आवाज सुनते थे परन्तु जब वे लौट कर आते और उसको बजाने की कोशिश करते तो वह उनसे न बजता।

---

[81] Ayan - god of Drums

अन्त में उन्होंने एक चौकीदार वहाँ छोड़ दिया यह देखने के लिये कि उनके पीछे वह ढोल कौन बजाता है। पर जब भी वह चौकीदार देखता रहता वह ढोल चुप रहता था और जैसे ही उसकी नजर हटती वह बजने लगता।

बिल्ले ने सोचा यह क्या बात है कि जब भी चौकीदार देखता है तो ढोल नहीं बजता और जब वह उधर नहीं देखता तो बजता है। केवल ऐलिरी चुहिया ही यहाँ नहीं है हो सकता है कि वही कुछ कर रही हो।

जब पहला चौकीदार यह पता नहीं लगा सका कि ढोल कौन बजा रहा था तो दूसरा चौकीदार चुना गया। और जब दूसरा चौकीदार भी यह पता न चला सका कि ढोल कौन बजा रहा है तो तीसरा चौकीदार चुना गया।

पर जब तीसरा चौकीदार भी यह पता न चला सका तो बिल्ले ने कहा कि ढोल की चौकीदारी वह खुद करेगा। जानवर राजी हो गये और बिल्ला ढोल के पास जा कर धीरे से लेट गया और ढोल को देखने लगा।

अचानक जब सब शान्त था तो उसने देखा कि ऐलिरी वहाँ आयी जहाँ ढोल रखा हुआ था पर बिल्ले को वहाँ लेटे देखते ही वह वहाँ से भागने लगी।

बिल्ला भी कम नहीं था। उसने तुरन्त ही उसको पकड़ लिया, मार डाला और खा गया।

जब सारी रस्में पूरी हो गयीं तब जानवरों ने पूछा कि क्या हुआ और कौन था वह जो वह ढोल बजा रहा था। बिल्ले ने उनको फिर वही जवाब दिया जो उसने किन किन चिड़े की बार दिया था।

वह बोला — "मैंने उस ढोल बजाने वाले को खा लिया।"

जानवरों ने फिर पूछा — "पर वह था कौन?"

परन्तु बिल्ला फिर से पहले की तरह चुप बैठ गया। उन्होंने फिर से उस ढोल को बजाने की कोशिश की पर फिर उसमें से आवाज ही नहीं निकली।

बिल्ला बोला — "मैंने तुमको बोला कि अब ढोल बजाने से कोई फायदा नहीं क्योंकि यह ढोल अब कभी नहीं बजेगा क्योंकि इस ढोल के बजाने वाले को मैंने खा लिया है।"

चीता चीखा — "दोस्तो, यह बहुत पुरानी बात है जब मैंने तुमसे कहा था कि यह बिल्ला बहुत शरारती है और जू जू[82] करने में बहुत होशियार है। और जू जू करने में ही यह होशियार नहीं है बल्कि साथ में झूठा भी है।

इस बार भी इसने हमको धोखा दिया है। यह खुद ही ढोल बजाता रहा है और अब हमें नहीं बता रहा कि ढोल कौन बजाता था।"

सभी जानवर चिल्लाये — "यह बिल्ला हमारी दुनियाँ में रहने के काबिल नहीं है। इसको आदमियों के शहर में भेज दो।"

---

[82] Ju Ju is a kind of magic or Black magic. It is like Jaadoo Tonaa of India. It may be for good or for bad.

इस बात पर बिल्ले ने जानवरों की तरफ मुँह करके उनके ऊपर थूका और शहर की तरफ भाग गया।

उस दिन से बिल्ला शहर में रहता है वह अभी भी चिड़ियें, चूहे और चुहियें खाता है और दूसरे जानवर उसको देख कर भी या तो देखते नहीं या छोड़ देते हैं।

उधर वह ढोल कभी नहीं बजा और कुछ दिनों बाद तो उसको दीमक[83] ही खा गयी।



[83] Translated for the words “White Ants”.

21 अहोरो और उसकी पत्नी ऐटीपा[84]

यह कहानी यहाँ नहीं दी गयी है।

[84] Ahoro and His Wife Etipa (Tale No 21) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

22 एक बेसहारा लड़का और उसकी जादुई डंडियाँ[85]

अजाओ[86] एक बेसहारा लड़का था। वह जब पाँच साल का ही था कि उसके माँ और बाप दोनों ही चल बसे। क्योंकि वह अभी छोटा ही था इसलिये उसके चाचा ने उसके पालने पोसने का जिम्मा ले लिया।

पर तीन साल के बाद वह भी चल बसे तो उन चाचा के एक दोस्त ने उसको अपने यहाँ रख लिया। चाचा के उस दोस्त का नाम था ओगुनमोडे[87]।

अजाओ बड़ा ही शान्त लड़का था सो ओगुनमोडे उसको बहुत प्यार करता था और उसको अपने बेटे की तरह रखता था। ओगुनमोडे के अपना कोई बच्चा नहीं था वह इसलिये भी उसको बहुत चाहता था।

पर ओगुनमोडे की पत्नी बहुत ही ईर्ष्यालु स्वभाव की थी। जब उसने देखा कि ओगुनमोडे अजाओ को बहुत प्यार करता है तो उससे वह सहा नहीं गया। उसने अजाओ को तंग करना शुरू कर दिया।

---

[85] An Orphan Boy and His Magical Twigs (Tale No 22) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[86] Ajao – name of the orphan boy

[87] Ogunmode – name of the friend of the uncle of Ajao. Ajao lived with him after the death of his uncle.

उसको वह बहुत मुश्किल मुश्किल काम करने को देती और जब उसका पति काम से वापस घर आता तो हमेशा ही उसकी शिकायत करती।

अजाओ का जीना हराम कर रखा था उसने। जैसे जैसे अजाओ बड़ा होता गया उसके लिये वहाँ रहना बहुत ही मुश्किल होता गया।

जब अजाओ करीब बीस साल का हो गया तो ओगुनमोडे ने अपनी पत्नी के कहने से उसको घर से निकाल दिया और उसको कह दिया कि अब वह वहाँ कभी वापस न आये।

अजाओ का कोई ऐसा दोस्त नहीं था जो उसे अपने पास रख लेता और उसके अपने पास कोई पैसा नहीं था। इसके अलावा कोई उसको सामान खरीदने के लिये भी पैसा देने को तैयार नहीं था ताकि वह कोई धन्धा कर सके सो सिवाय भीख माँगने के उसके पास और कोई चारा नहीं था।

एक दिन उस गाँव के एक बड़े रईस के घर में चोरी हो गयी तो लोगों ने अजाओ का नाम लगा दिया कि यह चोरी अजाओ ने की है। डर के मारे अजाओ अपना गाँव छोड़ कर भाग गया।



अजाओ के पास केवल एक लुंगी[88] के अलावा और कुछ भी नहीं था। वह इतना परेशान हो गया था कि उसने अपनी जान देने का फैसला कर लिया।

जब वह गाँव से भाग रहा था तो रास्ते में उसे एक रस्सी दिखायी दी। उसने वह रस्सी इस इरादे से उठा ली कि वह उसको गले में बाँध कर फाँसी लगा लेगा।

गाँव से बाहर आ कर अब वह किसी ऐसे पेड़ की तलाश करने लगा जिसकी शाख से रस्सी बाँध कर वह फाँसी लगा सकता। कुछ देर बाद इधर उधर घूमने के बाद उसे एक लम्बी सी शाख दिखायी दे गयी जिसे वह अपनी फाँसी के लिये इस्तेमाल कर सकता था।

वह उस पेड़ पर चढ़ गया और उस शाख पर रस्सी बाँधने ही वाला था कि उसको पत्तियों और शाखों के बीच से कुछ दूरी पर बसा एक गाँव दिखायी दिया।

अपने मरने की बात तो वह भूल गया और सोचने लगा कि उसको तो पता ही नहीं था कि उधर कोई गाँव भी था। किसी ने उससे कभी इस गाँव का जिक्र भी नहीं किया।

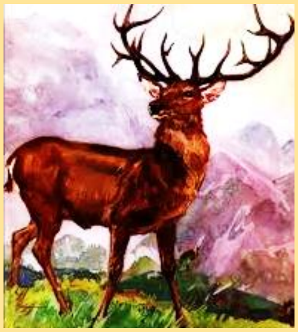
जैसे जैसे वह इस गाँव की तरफ देख रहा था उसको वह गाँव कुछ अजीब सा लगा। उसके घर और सड़कें सभी कुछ बिना आदमियों का लग रहा था।

---

[88] Lungi is a cloth to cover the lower part of the body from the waist to knee or to feet. See its picture above.

उसे वहाँ सब कुछ शान्त लग रहा था, सब कुछ खाली था, धुँआ भी नहीं था, पर साथ ही वह साफ सुथरा भी लग रहा था। ऐसा लगता था जैसे वहाँ कोई रहता ही न हो।

अजाओ ने सोचा कि कम से कम उसको वह गाँव जा कर देखना तो चाहिये क्योंकि इससे उसको कोई नुकसान तो होगा नहीं बल्कि हो सकता है कि उसे वहाँ पर उसे कोई काम ही मिल जाये।



सो अजाओ ने रस्सी तो वहीं छोड़ दी और जंगल के रास्ते उस गाँव की तरफ चल दिया। कुछ ही दूर जाने पर उसको एक बारहसिंगा[89] मिला।

उसने सोचा कि वह बारहसिंगा उसे देख कर वहाँ से भाग जायेगा पर यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ कि ऐसा नहीं हुआ। वह वहीं खड़ा रहा और उसे देखता रहा।

अजाओ के पास कोई हथियार नहीं था और उसे उसको मारने का कोई इरादा नहीं था सो वह उससे बच कर गाँव की तरफ जाने वाले रास्ते पर चल दिया।

अचानक उसने अपने पीछे किसी को पुकारते हुए सुना — "अजाओ, तुम कहाँ जा रहे हो?"

[89] Translated for the word "Stag". It is a deer like animal with two horns but with many branches in them. See its picture above.

एक बारहसिंगे के मुँह से अपना नाम सुन कर अजाओ बड़े आश्चर्य में पड़ा और इधर उधर देखने लगा कि उसको किसने पुकारा पर उसे बारहसिंगे के अलावा वहाँ और कोई दिखायी नहीं पड़ा।

इतने में वह बारहसिंगा फिर बोला — "अजाओ, यह मैं ही तुमसे पूछ रहा हूँ तुम कहाँ जा रहे हो?"

अजाओ बारहसिंगे के मुँह से यह सुन कर कुछ डर सा गया पर फिर बोला — "पास में ही मैंने एक अजीब सा गाँव देखा था मैं वहीं जा रहा हूँ।"

बारहसिंगा बोला — "जिस पेड़ से तुमने वह गाँव देखा था वह एक जादुई पेड़ था और वह गाँव जानवरों का एक गाँव है। यह जानवरों का देश है। तुम उस गाँव में मत जाना। तुम तुरन्त ही अपने आदमियों के देश में चले जाओ क्योंकि तुम जानवरों के देश के नहीं हो।"

यह सुन कर तो अजाओ और भी डर गया और घबरा गया। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे। वह कुछ दूर वापस गया और एक बड़े से पत्थर पर बैठ कर सोचने लगा कि वह अब क्या करे।

"क्या मैं उस पेड़ के पास फिर जाऊँ और फाँसी लगा कर अपनी जान दे दूँ? या उस जानवरों के गाँव में जाऊँ और फिर वहाँ

जा कर देखूँ कि वहाँ क्या होता है। और या फिर यहीं रह कर भूखा रह कर अपनी जान दे दूँ?"

वह बहुत थक गया था सो वह वहीं लेट गया और सो गया। जब वह उठा तो रात होने वाली थी। उसने सोचा कि वह रात में उस गाँव में जायेगा और देखेगा कि वहाँ क्या होता है। अगर वहाँ कोई खतरा होगा तो वह रात में वहाँ से बच कर भाग भी सकता है सो वह फिर सो गया।

अबकी बार जब वह उठा तो पूरी तरह रात हो गयी थी केवल तारों की रोशनी ही चमक रही थी। अजाओ उठा और जानवरों के गाँव की तरफ चल दिया। केवल मेंढक और झींगुरों की आवाजें ही उसको सुनायी दे रही थी।

इस गाँव में जानवर तीन समूहों में रहते थे — एक समूह था माँस खाने वाले जानवरों का, दूसरा समूह था घास खाने वाले जानवरों का और तीसरा समूह था रेंगने वाले जानवरों का।

हालाँकि वे सभी आपस में दोस्ती से रहते था पर फिर भी वे अपने अपने समूहों में ही ज़्यादा रहते थे।

अजाओ धीरे धीरे गाँव की तरफ बढ़ा और मिट्टी के एक बड़े से मकान में रोशनी देख कर उसकी खिड़की में से अन्दर झाँका। पास में काफी पेड़ पौधे थे इसलिये वह आसानी से वहाँ छिपा खड़ा रह सकता था।

अजाओ इस समय घास खाने वाले जानवरों के समूह वाले हिस्से में था और यह मकान उनके मिलने की जगह थी। सभी वहाँ मिल कर कोई मीटिंग कर रहे थे। जब अजाओ उनकी बात सुन रहा था तो वे दवाओं के बारे में अपनी अपनी तारीफें कर रहे थे।

एक बड़ा सा हाथी कह रहा था — “दोस्तो, अगर आप लोग कुछ पल के लिये बाहर आयें तो मैं आपको एक जादू दिखाना चाहता हूँ।”

कहते के साथ ही उसने डंडियों का एक गठ्ठर उठा लिया और उस मकान के बाहर आ गया। उस मकान के सामने एक बहुत बड़ी खुली जगह थी।

अजाओ जहाँ खड़ा था वहाँ से वह उन सबको अच्छी तरह देख सकता था पर उसको कोई नहीं देख रहा था क्योंकि सारे जानवर अपनी मीटिंग की कार्यवाही में मस्त थे।

हाथी की बात सुन कर सारे जानवर बाहर निकल कर आ गये और हाथी का दिखाया जाने वाल जादू देखने के लिये एक गोला बना कर खड़े हो गये।

हाथी बाहर निकल कर बोला — “अब आप देखें।”

उसने एक डंडी उठायी, उसको दो हिस्सों में तोड़ा और जानवरों के घेरे में फेंक दिया। तुरन्त ही वहाँ पर एक बहुत बड़ी इमारत खड़ी हो गयी।

सभी जानवरों ने आश्चर्य से अपने अपने सिर हिलाये और वे उस इमारत को देखने के लिये उसके अन्दर घुस गये।

हाथी अभी उस इमारत के बाहर ही खड़ा था। उसने दूसरी डंडी उठायी और उसे तोड़ कर जमीन पर फेंकी तो वह इमारत गायब हो गयी और सारे जानवर एक कमरे के अन्दर खड़े रह गये।

इतने में अजाओ को एक जानी पहचानी आवाज सुनायी दी। यह आवाज उस बारहसिंगे की थी जो उसे जंगल में मिला था।

वह बोला — "यह तो सचमुच ही बहुत अच्छा है परन्तु मेरे भाई लोग अगर मुझे भी कुछ दिखाने का मौका दें तो मैं भी कुछ दिखाना चाहता हूँ।"



जानवरों ने फिर से एक गोला बना लिया और बारहसिंगे ने एक डंडी उठायी और उसको तोड़ कर जो उसने जमीन पर फेंका तो वहाँ एक कौड़ियों[90] का थैला प्रगट हो गया। उसने दूसरी डंडी तोड़ कर फेंकी तो वह गायब हो गया।

इस तरह वे घास खाने वाले जानवर एक एक करके आगे आते गये और एक एक डंडी से कुछ कुछ चीज़ें प्रगट करते गये और दूसरी से उन्हें गायब करते गये।

[90] Translated for the word "Cowries". Cowry is a kind of sea shell. See its picture above. Long before they were used as money.

किसी ने कपड़े प्रगट किये तो किसी ने खाने का सामान, तो किसी ने बहुत सुन्दर मोती और जवाहरात। ऐसा लगता था जैसे डंडियों को तोड़ने से ही सब कुछ प्रगट किया जा सकता था और फिर उनको गायब किया जा सकता था।

अजाओ को खाना पकाने वाली डंडियाँ सबसे ज़्यादा अच्छी लग रही थीं क्योंकि सुबह से उसने कुछ खाया नहीं था।

उसने वह जगह अच्छी तरह से देख ली जहाँ उन जानवरों ने अपनी करामातें दिखाने के बाद उन डंडियों को फेंका था। यह मीटिंग रात भर चली और सुबह होने पर सब जानवर अपने अपने घर चले गये।

जब सब कुछ शान्त हो गया तो भूखे अजाओ ने उन डंडियों में से खाना पैदा करने वाली डडियाँ उठायीं और उस गाँव से दूर जंगल की तरफ भाग चला। दूर पहुँच कर वह आराम से एक जगह पर बैठ गया।

उन डंडियों में से उसने एक छोटा सा टुकड़ा तोड़ा और जमीन पर फेंक दिया। वहाँ बहुत सारी खाने की चीज़ें प्रगट हो गयीं। वह उनको देख कर बहुत खुश हुआ। उसने पेट भर कर खाना खाया।

उस डंडी के सहारे अब वह कहीं भी अकेला रह सकता था। क्योंकि अब उसे खाने पीने की कोई परेशानी नहीं थी।

पर रोज रोज डंडियाँ तोड़ने से उसकी डंडियाँ छोटी होती जा रहीं थीं। वह हर रात उस गाँव में चुपके से पहुँच जाता इस उम्मीद

में कि वह उन जानवरों को और डंडियाँ तोड़ता देखे और वह और डंडियाँ वहाँ से ले आये पर उस रात के बाद वह मकान खाली ही रहा।

अजाओ ने सोचा कि अब तो उसके पास केवल दो दिन के लिये ही खाने की डंडियाँ बची हैं इसलिये उसे जल्दी ही जानवरों का दूसरा समूह देखना चाहिये। सो अगली रात वह उस गाँव के दूसरी तरफ चला गया जहाँ माँस खाने वाले जानवर रहते थे।

जब वह जंगल के दूसरे किनारे पर पहुँचा तो उसने देखा कि एक जगह आग जल रही है और उसके चारों तरफ बहुत सारे जानवर बैठे हैं।

वहाँ एक चीता भाषण दे रहा था — "मेरे माँसाहारी दोस्तो और भाइयो, कुछ दिनों पहले हमारे घास खाने वाले भाइयों ने अपनी मीटिंग में कुछ जादू के करतब दिखाये थे।

अपने गाँव में अब यह बात फैल गयी है कि केवल वे ही जादू के करतब दिखा सकते हैं और उनके पास ही सबसे ज़्यादा ताकतवर जू जू[91] हैं। ऐसा लगता है कि जैसे हमारे पास कोई जादू और जू जू है ही नहीं।"

यह सुन कर बहुत सारे जानवर चिल्ला पड़े — "यह सच नहीं है, यह झूठ है। हमको भी अपने जू जू और दवाओं का जादू दिखाने का मौका मिलना चाहिये।"

[91] Ju Ju means magic or Black Magic. It is like Jaadoo Tonaa of India. It may be for good or bad.

एक शेर बोला — "मैंने सुना था कि वहाँ डंडियाँ तोड़ कर जादू दिखाया गया था।"

चीता बोला — "आप ठीक कहते हैं शेर जी कि वहाँ कुछ खास तरह की डंडियाँ तोड़ी गयीं थीं। हमारे कुत्ते भाई कुछ जादू की डंडियाँ ले कर आये हैं। और अब हम भी इस गाँव को दिखा देंगे कि हमारे पास भी ताकतवर दवाऐं और जूजू हैं।"

सो इस मीटिंग में भी पिछली मीटिंग की तरह ही हुआ। एक एक जानवर सामने आया। उसने एक डंडी तोड़ कर एक चीज़ पैदा की और दूसरी डंडी तोड़ कर उसे गायब कर दिया।

अजाओ ने फिर सब ध्यान से देखा और खाना पैदा करने वाली डंडियों को ठीक से देख लिया कि वे उन्होंने कहाँ फेंकी थीं।

यह मीटिंग भी सारी रात चली और सुबह होने पर सब अपने अपने घर चले गये। सारे जानवर बहुत खुश थे कि उन्होंने भी घास खाने वालों जानवरों की तरह जादू के करतब दिखाये।

जब सब चले गये तो अजाओ ने एक बार फिर खाना पैदा करने वाली डंडियाँ इकट्ठी की और उनको अपने रहने की जगह पर ले आया। अजाओ को शहद की केक बहुत अच्छी लगती थी और उन डंडियों से माँगने पर वह उसको मिल जाती थी।

अब उसको यह भी पता चल गया था कि इस गाँव में जानवर तीन समूहों में रहते थे। उसने जानवरों के दो समूहों की मीटिंग तो देख ली थी सो उसने सोचा कि इसका मतलब यह है कि रेंगने वाले

जानवरों की मीटिंग भी अब किसी भी समय होने वाली होगी इस लिये मुझे उसका खयाल रखना चाहिये।

इस मीटिंग को देखने के लिये अब वह हर रात गॉव की तरफ जाने लगा। साथ में वह शहद वाले केक ले जाता ताकि भूख लगने पर उनको खा सके।

उधर मॉसाहारी जानवरों की मीटिंग के अगले दिन एक कुत्ता उधर से गुजरा तो उसको लगा कि वे डंडियॉ उस तरह से नहीं पड़ीं थीं जिस तरह से उनको जादू दिखाने के बाद फेंका गया था और साथ में कुछ अजीब सी बू भी आ रही थी।

वह इधर उधर घूम घूम कर देखने लगा तो उसको अजाओ के पैरों के निशान दिखायी दिये। वह मन ही मन बोला — "ओह तो उस दिन आदमी का बच्चा यहॉ आया था।"

कुत्ता तुरन्त दौड़ा दौड़ा गया और अपने सारे मॉसाहारी भाइयों को इस बारे में बताया।

तुरन्त ही एक मीटिंग बुलायी गयी। मॉसाहारी जानवरों ने घास खाने वाले जानवरों को भी इस बारे में बताया तो बारहसिंगा बोला कि वह एक आदमी अजाओ से जंगल में मिल चुका था हो सकता है कि ये पैरों के निशान उसी के हों।

दोनों समूहों ने अपने अपने जानवरों को गॉव के आस पास अजाओ का पता लगाने के लिये तैनात कर दिया। इसमें कोई

आश्चर्य नहीं कि एक दिन अजाओ गाँव के आस पास घूमता पकड़ा गया।



एक बड़े बन्दर ने उसको पकड़ा और उसे गाँव में ले आया। अबकी बार माँसाहारी और घास खाने वाले जानवरों की मीटिंग एक साथ बुलायी गयी ताकि वे आदमी के बच्चे को देख सकें और उस बिन बुलाये मेहमान के साथ क्या बर्ताव किया जाये यह निश्चय कर सकें।

कुछ चिल्लाये — "हमको इस आदमी के बच्चे को दिखाओ।"

कुछ माँसाहारी जानवर चिल्लाये — "इसको मार दो, इसको मार दो।"

कुछ घास खाने वाले जानवर बोले — "हाथी इसको कुचल कर मार देगा।"

ऐसा लग रहा था जैसे सभी जानवर अजाओ की मौत चाहते हों। अजाओ बेचारा बन्दर के पास जमीन पर पड़ा था।

बारहसिंगा बोला — "मुझे ठीक से देखने दो। शायद यह अजाओ ही है।"

जानवर चिल्लाये — "इसको हमें ऊपर उठा कर दिखाओ। यही हमारे गाँव में चुपके चुपके चोर की तरह आता है।"

हाथी ने अजाओ को अपनी सूँड़ से ऊपर उठा लिया और बोला — "देखो यही है वह आदमी का बच्चा।"

अजाओ अभी तक अपने हाथ में शहद वाली केक पकड़े था। जैसे ही हाथी ने बोलने के लिये अपना मुँह खोला उसने तुरन्त ही केक का एक टुकड़ा हाथी के मुँह में डाल दिया।

हाथी ने शहद वाला केक पहले कभी नहीं चखा था। जैसे जैसे उसने वह केक खाया तो उसको लगा कि उसको तो वह केक बहुत अच्छा लग रहा है। अच्छा लगने की वजह से हाथी को वह केक खाने में कुछ देर लगी तो सुनने वालों का धीरज छूट गया।

इतने में जानवर चिल्लाये — "इसको नीचे फेंक कर मार दो।"

हाथी बोला — "नहीं, मैं इसको नहीं मारूँगा। मेरी सलाह है कि हम इसे अपना पालतू बना लें। इसने मुझे अभी अभी बहुत ही स्वादिष्ट खाना खिलाया है। मैं उसका नाम तो नहीं जानता पर वह खाने में बहुत स्वाद है।"

कुछ जानवर चिल्लाये — "अरे तुम यह क्या बेवकूफी की बात कर रहे हो। क्या कभी किसी ने आदमी को भी जानवरों का पालतू बनते सुना है?"

बिल्ला बोला — "हाँ यह काम तो आदमी का है हमारा नहीं।"

इतने में शेर बोला — "वह स्वादिष्ट खाना कहाँ है ज़रा मैं भी तो खा कर देखूँ।"

हाथी ने धीरे से अजाओ को उतार कर माँसाहारी जानवरों के सरदार शेर के पास रख दिया और बोला — "देखो तो कितना सुन्दर लड़का है।"

अजाओ ने शहद वाला केक शेर को भी खिलाया। केक शेर को भी बहुत स्वादिष्ट लगा।

केक खा कर शेर बोला — "हाथी ठीक कहता है। लड़का बहुत सुन्दर है इसको मारना हमारे लिये बड़ी शर्म की बात होगी। इसको तो हमारे साथ रहना होगा और यह बताना होगा कि यह खाना कैसे बनता है।"

जब हाथी और शेर ने यह फैसला सुना दिया कि लड़के को उनके साथ ही रहना है तो दूसरे जानवरों को भी मानना पड़ा। जिनको इस फैसले पर थोड़ा बहुत भी शक था तो अजाओ ने उन सबको वह शहद वाला केक खिला कर राजी कर लिया।

इस तरह अजाओ उन जानवरों के बीच रहने लगा। उसने उनको बताया कि आदमियों ने उसके साथ कितनी बेरहमी का बर्ताव किया था और किस तरह उसको अपने गाँव से निकाल दिया था।

और किस तरह वह अपने आपको मारना चाहता था। फिर कैसे उसको जानवरों के इस गाँव का पता चला और कैसे वह रात को इस गाँव को देखने के इरादे से यहाँ आ पहुँचा था।

अजाओ ने उन जानवरों को बहुत सारी बातें सिखायीं जैसे आदमी के बिछाये जाल से कैसे बचना चाहिये। शिकारियों से कैसे बचना चाहिये और किन आदमियों पर भरोसा किया जा सकता है किन पर नहीं। उसने उनको भालों और तीरों की ताकत के बारे में भी बताया।

धीरे धीरे जानवर अजाओ को प्यार करने लगे और उस पर उनका विश्वास बढ़ गया। अब वह उनके समूह का ही एक सदस्य बन गया था।

जानवरों ने उसको डंडियों के जादू सिखाये और बदले में सबने शहद वाले केक खाये। अजाओ को रेंगने वाले जानवरों के समूह से भी मिला दिया गया और वे भी उसको खूब प्यार करने लगे थे।

पर कई साल उन जानवरों के साथ बिताने के बाद उसको लगा कि उसको अब अपने आदमियों के पास जाना चाहिये।

सो एक दिन उसने यह बात जानवरों की एक मीटिंग में कही तो कोई जानवर उसकी इस बात पर राजी नहीं हुआ। कोई उसको वहाँ से जाने नहीं देना चाहता था।

परन्तु शेर बोला — "अजाओ ठीक कहता है। इसको अपने लोगों में ही जा कर रहना चाहिये। वहाँ जा कर इसको शादी करनी चाहिये और फिर इसके बच्चे भी होने चाहिये।

अब तक यह हमारा बहुत अच्छा दोस्त था और हम सबको इस पर पूरा विश्वास है कि यह आदमियों की दुनियाँ में पहुँच कर भी हमको धोखा नहीं देगा।"

फिर वह अजाओ से बोला — "तुम्हारे जाने का हम सभी को बहुत दुख होगा। तुम अकेले ही आदमी के बच्चे हो जो हमारे साथ इतने दिनों तक हमारे बन कर रहे। हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं और तुम पर भरोसा करते हैं।

अगर तुम्हारे अपने लोग कभी भी तुम्हारे साथ बुरा बरताव करें तो तुम बिना किसी हिचकिचाहट के यहाँ लौट आना। हम तुम्हारी हर तरीके से सहायता करने की कोशिश करेंगे।

लो ये कुछ जादू की डंडियाँ अपने साथ ले जाओ। ये तुमको तुम्हारी नयी ज़िन्दगी शुरू करने में सहायक होंगी।"

सभी जानवरों ने अजाओ को रोते हुए विदा किया और गाँव के बाहर तक छोड़ने आये। जाते समय वे बोले — "अजाओ, कभी कभी हमसे मिलने भी आ जाया करना।"

अजाओ अपने उसी गाँव में वापस पहुँच गया जहाँ से वह एक बार चोरी के झूठे इलजाम में निकाला गया था। वहाँ पहुँच कर उसने एक छोटी सी जमीन देख कर हाथी वाली डंडी तोड़ कर फेंकी तो वहाँ एक सुन्दर मकान खड़ा हो गया।

उसके बाद वह कुछ और डंडियाँ तोड़ता रहा जिनसे उसको कपड़े, घर का सामान और खाने पीने का सामान मिला।

अजाओ अब एक अमीर आदमी था और अब वह अपनी नयी ज़िन्दगी शुरू कर सकता था।

अजाओ की बदकिस्मती से उस गाँव के लोग अभी भी अजाओ के चोर होने को भूले नहीं थे और उन्होंने उसको अभी तक माफ भी नहीं किया था।

सो गाँव में अब यह बात फैलने लगी कि अजाओ अब अपनी लूट के सामान के साथ फिर से इस गाँव मे रहने के लिये आ गया

है। क्योंकि इतना सारा पैसा वह ईमानदारी से इतने थोड़े समय में नहीं कमा सकता था तो वह पैसा जरूर ही लूट का होगा।

कुछ ही दिनों बाद गाँव के लोग इकट्ठा हो कर उसके पास आये और यह सोच कर कि वह पास के गाँवों से चोरी कर के वह यह सब माल जमा करता रहा है पकड़ कर उसको गाँव के सरदार के पास ले गये।

सरदार ने अजाओ से पूछा कि उसके पास इतनी सारी दौलत कहाँ से आयी। पर अजाओ जानवरों और उनकी डंडियों की कहानी उनको बताना नहीं चाहता क्योंकि उसको पता नहीं था कि उसकी कहानी सुन कर वे उसके साथ कैसा बर्ताव करेंगें।

उसको जानवरों के साथ किया हुआ अपना वायदा भी याद आया। सफाई न देने की वजह से सरदार ने उसको तो जेल में बन्द कर दिया और उसकी सारी चीज़ें अपने कब्जे में कर लीं।

उन्होंने अजाओ को बहुत समय तक जेल में रखा।

और जब वह जेल से छूटा तो वह फिर से जानवरों के गाँव की तरफ चल दिया। उसने सोचा कि पहली बार से यहाँ से जाने में और इस बार के यहाँ से जाने में एक फर्क है। पहले वह यहाँ से अपने आपको मारने के इरादे से गया था इस बार वह अपने दोस्तों के पास जा रहा है।

अजाओ जब जानवरों के गाँव पहुँचा तो जानवर उसको अपने बीच पा कर बहुत खुश हुए। अजाओ ने उन्हें अब तक की अपनी सारी कहानी बतायी।

तीनों समूहों ने फिर अपनी अलग अलग मीटिंग कीं और फिर उनके नेताओं शेर, हाथी और मगर ने उसको बुलाया।

उन्होंने उससे कहा — "अजाओ, हमने तुम्हारी बात को गौर से सुना। तुमने जो हमारे लिये वफादारी दिखायी है उससे खुश हो कर एक बार फिर हम तुमको अपनी दुनियाँ में आने की इजाज़त देते हैं और अपने राजा को हमारे और हमारी डंडियों के बारे में सब कुछ बताने की इजाज़त देते हैं।"

सो अजाओ ने डंडियों का एक बंडल उठाया और अपने गाँव की तरफ चल दिया।

इस बार वह सीधे राजा के पास गया और बोला — "हे राजा, आप अपनी प्रजा में अजाओ को अच्छी तरह जानते है। उसको लोगों ने दो बार चोरी का इलजाम लगा कर गाँव के बाहर निकलने पर मजबूर कर दिया। उन्होंने उसको जेल में भी रखा।

शायद आपको याद होगा कि कुछ दिन पहले अजाओ यहाँ था और उसने अपनी दौलत पाने के भेद को खोलने से इनकार कर दिया था। आज वही अजाओ जिन्होंने मुझे वह ताकत दी थी उनकी इजाज़त से उस भेद को खोलने के लिये आपके सामने हाजिर है।

आप कोई एक दिन तय कर लें तो उस दिन मैं आप सबको बहुत सारे आश्चर्यजनक जादू दिखाऊँगा और शायद इस तरह अपने माथे पर लगा यह काला दाग धो सकूँ।"

सो राजा ने एक दिन तय कर लिया। उस दिन गाँव के बहुत सारे लोग आये और उस दिन अजाओ ने अलग अलग डंडियों से अलग अलग जादू दिखाये।

वह सब देख कर लोगों को आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई। उसकी बहुत सारी दौलत देखते हुए उनमें से बहुत सारे लोग अपनी अपनी बेटियों की शादी उसके साथ करने तैयार हो गये।

अजाओ ने राजा की बेटी का रिश्ता ले लिया और उसके साथ उसकी शादी का एक दिन भी तय हो गया। जैसे जैसे शादी का दिन पास आता गया गाँव में खुशियाँ और तैयारियाँ बढ़ती गयीं।

शादी के एक दिन पहले सारे जानवर अपने जानवर वाले गाँव से आये और अजाओ की शादी की खूब खुशियाँ मनायी गयीं।

जिस समय जानवर आये उस समय अँधेरी रात थी। एक जानवर ने खूब सारे नीबू फेंके तो वे सारे नीबू लैम्प बन गये और गाँव भर में उजाला फैल गया।

लोगों को जानवरों के बढ़िया कपड़े देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि पहली बात उन्होंने तो जानवरों को इससे पहले कभी कपड़े पहने देखा नहीं था। दूसरे उनके कपड़े तो आदमियों के कपड़ों से कहीं ज़्यादा अच्छे थे।

हाथी का सिर बढ़िया जरी की टोपी से ढका था तो शेर के सिर पर मोतियों का ताज था। छिपकली के गले में लाल मोतियों की माला थी तो बारहसिंगा एक बहुत ही सुन्दर गाउन पहने था। मगर बहुत बढ़िया रेशम के कपड़े पहने था तो सूअर मखमल की चादर ओढ़े था।

शादी की दावत के सारे खाने और चीज़ों की तरह जादू की डंडियों से ही पैदा किये गये थे। रात बीत गयी और लोगों ने कहा कि इतनी अच्छी शादी की रात, नाच गाना दावत आदि, उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

सुबह राजा ने अपनी बेटी अजाओ को दे दी साथ में एक बढ़िया घोड़ा गाड़ी भी दी। जानवरों ने अपने जादू से अजाओ को चीलों से जुती उड़ने वाली एक गाड़ी दी जिसमें बैठ कर अजाओ और उसकी पत्नी सारा दिन गॉव के ऊपर उड़ते रहे।

रात को वे अपने अपने घर चले गये और फिर अगले दिन उनकी शादी हो गयी। जानवर भी अपने गॉव लौट गये।

कुछ समय बाद अजाओ की पत्नी ने एक बेटे को जन्म दिया। उसका नाम उन लोगों ने अकानो[92] रखा। जब अकानो थोड़ा बड़ा हो गया तो अजाओ अकाने को जानवरों के गॉव ले गया। वहॉ उनको जानवरों के तीनों समूहों ने अलग अलग दावत दी।

[92] Akano - name of the son of Ajao

उन्होंने कहा — "अजाओ, जब तुम हमारे गाँव में पहली बार आये थे तब तुम अपने बेटे अकानो से कुछ ज़्यादा बड़े नहीं थे। उस समय हमने तुमको बहुत कुछ सिखाया। क्या अब तुम अपने बेटे को यहाँ नहीं छोड़ोगे ताकि वह जानवरों को जान सके और उन्हें ठीक से समझ सके।"

अजाओ बोला — "मेरी तो बहुत इच्छा है।"

और वह अकानो को जानवरों के गाँव में छोड़ गया। वहाँ उसने उनकी भाषा, उनके रीति रिवाज आदि बहुत कुछ सीखा।

अकानो अपने पिता को बहुत प्यार करता था। उसका पिता सबसे पहले जानवरों के गाँव में कैसे आया इसकी कहानी सुनते सुनते वह कभी थकता ही नहीं था।

उधर जानवर भी अकानो को प्यार तो बहुत करते थे परन्तु उन्होंने कभी उसको डंडियों का भेद नहीं बताया।

जब भी कभी उसने उनके बारे में पूछा भी तो बूढ़े शेर ने जवाब दिया — "आदमियों में यह भेद केवल तुम्हारा पिता ही जानता है। जब वह मर जायेगा तो उसके बाद इस भेद को और कोई नहीं जान पायेगा।

क्योंकि हम तुम्हारे पिता को बहुत प्यार करते हैं इसी लिये यह भेद हमने उसको बताया। मगर तुमको अगर हमारी किसी और सहायता की कभी भी जरूरत हो तो हम तैयार हैं।"

अकानो जानवरों के गाँव में कई साल रहा। फिर एक दिन वह हाथी से मिलने पहुँचा। हाथी उसको देखते ही बोला — "अकानो, मुझे मालूम है कि तुम मुझसे मिलने क्यों आये हो। कई साल पहले तुम्हारा पिता भी इसी तरह मुझसे मिलने आया था। क्या तुम अपने देश वापस जाना चाहते हो?"

अकानो बोला — "जी हाँ।"

उस रात अकानो को विदा करने के लिये एक बहुत बढ़िया दावत दी गयी और अगले दिन सुबह अकानो अपने गाँव की तरफ चल पड़ा। बहुत सारे जानवर उसको छोड़ने गये।

जब वे गाँव की सीमा पर पहुँचे तो हाथी बोला — "हमने तुम्हें डंडियों का जादू कभी नहीं बताया पर देखो यह एक जादू की डंडी है जो हम तुम्हें जाते समय एक भेंट के रूप में दे रहे हैं। तुम इस को तोड़ कर जो कुछ भी माँगोगे वह इससे तुमको मिल जायेगा।"

अकानो ने सब जानवरों को धन्यवाद दिया और सारे जानवर उसको विदा कर गाँव वापस लौट गये।

अकानो को भी इन जानवरों से प्यार हो गया था और वह इन को छोड़ कर दुखी था पर अपने गाँव जाते समय वह खुश भी था क्योंकि अपने लागों को उसने बहुत दिनों से देखा नहीं था।

पर जब वह गाँव के पास पहुँचा तो उसे लगा कि उसके गाँव की तो सारी सड़कें खाली पड़ी हैं। वहाँ कोई आदमी ही नजर नहीं आ रहा था।

अकानो घबरा गया और सोचने लगा कि उसको आने में लगता है देर हो गयी। शायद यहाँ उसको और पहले आना चाहिये था। जब अकानो गाँव के अन्दर पहुँचा तो उसे इस खालीपन की वजह समझ में आ गयी।

सारा गाँव उजड़ चुका था, घर जल गये थे या फिर टूट गये थे। अकानो अपने नाना के महल के पास पहुँचा, अपने पिता के घर के पास पहुँचा और सब कुछ उजड़ा हुआ सा देख कर फिर से दुखी हो गया।

उसी समय उसको हाथी की दी हुई डंडी याद आयी। उसने डंडी तोड़ी और इच्छा की कि वह सारा गाँव फिर से बस जाये और उसके लोग वहाँ फिर से वापस आ जायें।

जैसे ही उसने डंडी तोड़ कर फेंकी और यह इच्छा की तो तुरन्त ही सारा गाँव फिर से बन गया और उसको कुछ लोग सड़क पर चलते फिरते नजर आने लगे।

उसने उनसे अपने परिवार वालों के बारे में पूछा तो वे बोले — “यह बड़े दुख की बात है अकानो कि उधर तो तुम जादू की डंडियाँ ले कर जानवरों के गाँव से आये और इधर यह आदमियों का गाँव एक दूसरे समूह ने नष्ट कर दिया।

तुम्हारे नाना और तुम्हारे पिता लड़ाई में मारे गये और तुम्हारी माँ को वे लोग बन्दी बना कर ले गये। इस लड़ाई में बहुत से लोग

मारे गये और बहुत से लोगों ने जंगल में भाग कर अपनी जान बचायी।"

अकानो ने उनको ढोल बजा कर बुलाने के लिये कहा। सब लोग वापस आ गये और उन्होंने अकानो को अपना नया राजा चुन लिया।

यह सब करने के बाद अकानो फिर से जानवरों के गाँव गया और जा कर उनको अपने गाँव का सारा हाल सुनाया और उस दूसरे समूह से लड़ाई लड़ने के लिये सहायता माँगी।

हाथी बोला — "अकानो, जो कुछ भी हुआ उसका हमको बहुत दुख है। हमें अजाओ के मरने का भी बहुत दुख है क्योंकि हम उसे बहुत प्यार करते थे पर हमारी मुश्किल यह है कि हम आदमी से नहीं लड़ सकते।

वैसे हम तुम्हारी माँ को वापस लाने में तुम्हारी सहायता जरूर करेंगे। पर इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कर पायेंगे। तुम घर जाओ और अपने सिपाही इकट्ठा कर के इन्तजार करो कि हम कैसे तुम्हारी सहायता करते हैं।"

अकानो ने ऐसा ही किया। वह अपने गाँव वापस चला गया और जानवरों की सहायता का इन्तजार करने लगा।

उसने देखा कि सब जानवरों ने दूसरे गाँव को घेर लिया। वे उनसे लड़े नहीं। घास खाने वाले जानवरों ने उनकी सारी खेती खा डाली।

जब उस गाँव से आदमी फसल लेने आये तो माँसाहारी जानवरों ने उनको खा लिया और रेंगने वाले जानवरों ने भी उनके ऊपर हमला किया।

धीरे धीरे उनका सारा खाना खत्म हो गया और उनको शान्ति के लिये अकानो की माँ को छोड़ना ही पड़ा। अकानो की माँ वापस आ गयी और फिर अपने बेटे के साथ बहुत दिनों तक सुख से रही।



23 टिनटिन्यिन और भूतों की दुनियाँ का राजा[93]

बहुत पुरानी बात है जब योरुबा देश में टिनटिन्यिन नाम का एक लड़का रहता था। उसका पिता तो उसकी छोटी उम्र में ही नहीं रहा पर कुछ साल बाद उसकी माँ भी चल बसी।

अब वह इस दुनियाँ में अकेला रह गया और कोई उसकी देखभाल करने वाला भी नहीं था।

वह जंगली जानवरों और पक्षियों के साथ जंगल में रहने लगा। उन्होंने ही उसको खाना खिलाया, उसको कपड़े पहनाये, उसकी देखभाल की और उसको बड़ा किया।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वहाँ रहते रहते उसने जानवरों और पक्षियों की भाषा भी सीख ली थी और योरुबा भाषा तो उसको आती ही थी।

उस जंगल में कुछ दूरी पर एक बड़ा शहर था जिसका राजा बहुत ताकतवर था। उस शहर में हर साल एक बहुत बड़ा त्यौहार मनाया जाता था।

टिनटिन्यिन हर साल उस त्यौहार में जाता था क्योंकि उसको नाचना, गाना, ढोल बजाना, अच्छे कपड़े पहनना सभी कुछ बहुत

---

[93] Tintinyin and the Unknown King of the Spirit World (Tale No 23) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

अच्छा लगता था। उस शहर का राजा देखने में भी सुन्दर था सो टिनटिन्यिन को वह राजा भी बहुत अच्छा लगता था।

पुराने समय में भूत[94] भी ऐसे त्यौहारों पर आया करते थे। बस उनको कोई पहचान नहीं पाता था क्योंकि वे सामान्य लोगों के रूप में आते थे और त्यौहार खत्म होने पर चुपचाप वापस चले जाया करते थे।

राजा को भी इस बात का पता था पर क्योंकि कोई उनको पहचान नहीं पाता था इसलिये वह यह बात यकीन के साथ नहीं कह सकता था। पर वह भी यह जानना चाहता था कि वाकई यह बात सच थी कि नहीं।

एक बार राजा ने इस बात का फैसला करने का निश्चय किया कि वाकई यह सच था या नहीं सो उसने इस त्यौहार से पहले ही अपने शहर में यह घोषणा करा दी कि जो भी आदमी इस त्यौहार में भूतों के राजा को पहचानेगा और उसे राजा को बतायेगा उसको बहुत सारी भेंटें इनाम में मिलेंगीं और शहर में ऊँचा ओहदा मिलेगा।

टिनटिन्यिन ने भी यह घोषणा सुनी। वह राजा के महल में गया और राजा से कहा कि वह भूतों के राजा को पहचान कर राजा को बतायेगा।

[94] Translated for the word "Ghost"

अब टिनटिन्यिन को तो यह भी पता नहीं था कि वह भूतों का राजा दिखायी कैसा देता होगा पर उसे विश्वास था कि उसके जंगल के साथी इस बारे में उसकी सहायता जरूर करेंगे।

जब राजा ने इस अजीब से जंगली लड़के के मुँह से ये शब्द सुने कि वह भूतों के राजा को पहचान लेगा तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसा लड़का भूतों के राजा को कैसे पहचान सकता है।

सो उसको धमकाने के लिये और उसे जनता को बेवकूफ बनाने से रोकने के लिये उसने टिनटिन्यिन से कहा कि अगर वह उसको न पहचान सका तो सजा के तौर पर उसकी भूतों के राजा के लिये बलि चढ़ा दी जायेगी।

इतना कहने पर भी राजा को यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि वह लड़का अभी भी अपनी बात पर अड़ा था। उसने कहा कि अगर वह ऐसा न कर सका तो वह मरने के लिये तैयार था।

ऐसा कह कर वह लड़का वहाँ से चला गया और राजा आश्चर्य में पड़ा वहीं बैठा रह गया। वह यह कहे बिना न रह सका "यह लड़का भी अजीब है।"

त्यौहार के दिन टिनटिन्यिन ने देखा कि हर आदमी उसी को घूर रहा है। सारे शहर में टिनटिन्यिन को भूतों के राजा को पहचानने वाली बात फैल चुकी थी और सभी इस ताक में थे कि देखें क्या होता है कैसे वह लड़का भूतों के राजा को पहचानता है।

कुछ लोग टिनटिन्यिन के लिये दुखी भी थे कि यह बेचारा मुफ्त में ही मारा जायेगा क्योंकि इतनी भीड़ में भूतों के राजा को पहचानना आसान नहीं था।

शहर का राजा पेड़ों की छाँह में एक बड़े ऊँचे सिंहासन पर बैठा था। उसने टिनटिन्यिन को बुलाया और कहा — "लड़के, अब बताओ वह भूतों का राजा इस भीड़ में कौन सा है।"

टिनटिन्यिन भी राजा से बात करने के बाद चिन्तित था क्योंकि हालाँकि उसने जंगल के सारे जानवरों और पक्षियों से कह रखा था कि उसको भूतों के राजा को पहचानना है पर अभी तक भूतों के राजा का कोई नामो निशान नजर नहीं आ रहा था।

वह परेशान सा यह सोच ही रहा था कि भूतों के राजा को पहचानने के लिये वह क्या करे कि उसको एक नन्हा सा ईगा चिड़ा[95] दिखायी दिया। नन्हा ईगा गा रहा था।

उसकी भाषा और तो कोई समझ नहीं पा रहा था पर टिनटिन्यिन की समझ में सब आ रहा था। वह गा रहा था —

टिनटिन्यिन, हालाँकि तुमने बहुत बड़ा बोल बोला है
कि तुम भूतों के राजा को जानते हो जो मरे हुओं और शैतानों का राजा भी है
पर तुम उसे नहीं जानते और तुमने अपनी ज़िन्दगी दाँव पर लगा दी है
तुम मेरे दाँये पंख की सीध में देखो एक आदमी अकेला खड़ा है
उसके शरीर पर कोई ऐसा निशान नहीं है जिससे वह राजा लगे
वह एक डंडे पर झुका खड़ा है पर वही राजा है भूतों का और मेरे बेटे मैं तुम्हारा पिता हूँ

[95] Ega Bird – a very small black and yellow bird found in Western Nigeria from Senegal to Cameroon countries

इस तरह टिनटिन्यिन को पता चल गया कि उसका पिता ईगा चिड़े की आवाज में बोल रहा है और उसकी सहायता कर रहा है।[96]

उधर शहर का राजा उसके जवाब के इन्तजार में था। वह बोला — "बताओ लड़के, वह भूतों का राजा कौन सा है। मैं तुम्हारे जवाब का इन्तजार कर रहा हूॅ।"

टिनटिन्यिन सीधा उस आदमी के पास गया और उसको पकड़ कर राजा के पास ले आया। जब लोगों ने देखा तो लोग हॅस पड़े कि या तो वह लड़का उनका बेवकूफ बना रहा है या फिर उस बूढ़े आदमी का।

उस बूढे आदमी ने अपना पैर खोल कर अपने टखने पर बॅधा एक काला मोती दिखाया। यही भूतों के राजा का निशान था। बस फिर उसने न तो राजा से ही कुछ कहा और न ही वह किसी और से बोला और गायब हो गया।

शहर के राजा ने अपना वायदा निभाया। उसने उसको बहुत सारी भेंटें दीं और शहर में ऊॅचा ओहदा दिया। इसके बाद तो टिनटिन्यिन बहुत बड़ा आदमी हो गया।

हालॉकि भूतों के राजा को फिर किसी ने उस त्यौहार में नहीं देखा पर तबसे उस शहर के किसी और राजा ने भी उसको देखने की इच्छा प्रगट नहीं की।

---

[96] This statement shows that the Yoruba Tribe also believes in reincarnation.

पर लोगों का कहना है कि वह अभी भी एक गरीब आदमी के वेश में वहाँ आता है।



24 अक्लमन्द कुत्ता[97]

एक बार जानवरों के देश में बहुत सारी लड़ाइयाँ हुईं। लगता था उस देश में जैसे किसी का शाप काम कर रहा हो। सो जानवरों के राजा ने सलाह के लिये एक मीटिंग बुलायी।

सभी के ख्याल में कहीं कोई गड़बड़ थी जिसको ठीक करना जरूरी था। पर वह गड़बड़ कहाँ थी और उसको कैसे ठीक किया जाये इस बारे में काफी देर तक बातें होतीं रहीं पर वे किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पा रहे थे।

तभी किसी ने कहा कि ये सब परेशानियाँ उनके बचपन से शुरू हुई थीं इसलिये हो सकता है कि इस सबके लिये उनकी माँऐं जिम्मेदार हों। क्योंकि जब वे उनके लिये और उनके और कामों के लिये जिम्मेदार थीं तो वे इस काम के लिये भी जिम्मेदार थीं।

यह बात सूखे के मौसम में जंगली आग की तरह फैल गयी। वे सभी कहने लगे कि क्योंकि यह सब हमारी माँओं का काम है इस लिये हमको उन्हें मार देना चाहिये। जब हर जानवर अपनी अपनी माँ को मारेगा तभी कुछ हो सकता है।

[97] The Wise Dog (Tale No 24) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa
[My Note: This story is given here as it was given in the book by Fuja Abayomi in his book "Fourteen Hundred Cowries but I found it with a varied title and and different version on Internet too. At one of the Web Sites its title is "A Dog Who Sent His Mother to Heaven".]

उन सबमें एक जानवर ऐसा भी था जिसको यह बात कुछ जॅची नहीं। और वह था कुत्ता। यह कुत्ता अपनी मॉ की बहुत इ़ज़्ज़त करता था। वह अक्लमन्द भी था और ऐसे बेवकूफी वाली बातों से भटकता नहीं था।

पर इस समय उसको यह भी पता था कि इस समय जानवरों के खिलाफ जाने से कोई फायदा नहीं है इसलिये उसने चुपचाप इस बात को मान लिया।

इस चक्कर में बहुत सारी माएं मारी गयीं। कुत्ते ने इस डर से कि अगर उसने अपनी मॉ को कहीं छिपा दिया तो जानवर उसे ढूँढ निकालेंगे और फिर उन दोनों को मार देंगे उसने अपनी मॉ को स्वर्ग भेज दिया।

कुत्ते की मॉ अपने बेटे के प्यार की कर्जदार थी सो उसने स्वर्ग जाते समय अपने बेटे से कहा— "बेटे तुम किसी भी मुश्किल में हो तो मुझे बुला लेना मैं आ जाऊॅगी।" फिर उसने उसको एक छोटा सा गीत सिखाया जो उसको बुलाने के लिये उसे गाना था।

कुछ समय बाद ही जानवरों को पता चल गया कि उनका अपनी मॉओं को मारना कुछ भी नहीं कर सका क्योंकि उसके तुरन्त बाद ही और बड़ा भारी अकाल पड़ गया। कुॅए सूख गये, मॉस भी नहीं मिलता था, फसल भी नहीं हुई और इस वजह से और बहुत सारे जानवर मर गये।

कुत्ता यह सब देख कर बहुत दुखी हुआ। एक दिन उसको अपनी माँ की याद आयी और याद आया उसको बुलाने वाला गीत।

वह एक अकेली सी जगह पहुँचा और उसने वह गीत गाया —

मॉ मॉ अपनी रस्सी नीचे डालो अपने बेटे को बुलाओ और उसे खाना खिलाओ
आज उसे तुम्हारी सहायता की जरूरत है, मॉ ओ मॉ

तुरन्त ही एक लम्बी सी रस्सी स्वर्ग से नीचे जमीन पर गिर पड़ी। उसके एक सिरे पर एक छोटी सी कुर्सी थी। कुत्ता उस कुर्सी पर बैठ गया और रस्सी ऊपर जाने लगी।

जब वह ऊपर पहुँच गया तो उसकी माँ ने उसे पेट भर बढ़िया बढ़िया खाना खिलाया। खाना खा कर शाम को उसी रस्सी के सहारे वह नीचे उतर आया।

जब तक उस देश में अकाल रहा कुत्ता अपनी माँ के पास जाता रहा और खाना खा कर वापस आता रहा।

एक दिन उसको उसका दोस्त कछुआ मिल गया तो कछुआ तो उसको खुश और तन्दुरुस्त देख कर हैरान रह गया।

उसने उससे पूछ ही लिया — "कुत्ते भाई, इन मुश्किलों के दिनों में भी तुम क्या खाते हो जो इतने खुश और तन्दुरुस्त हो? यह अकाल तो हम लोगों की ज़िन्दगी का बड़ा भारी अकाल है।

हम सभी लोग तो खाने की कमी की वजह से दुबले हो रहे हैं और तुम मोटे हुए जा रहे हो। दोस्त मुझे भी अपनी इस तन्दुरुस्ती का राज़ बताओ न।"

कुत्ता यह सुन कर डरा कि कहीं ऐसा न हो कि वह दूसरे जानवरों के सामने उससे ऐसी बात फिर कहे सो उसने सोचा कि वह उसको अपना भेद बता देता है।

वह बोला — "कछुए भाई, अगर तुम मुझसे यह वायदा करो कि तुम मेरी यह बात किसी दूसरे से नहीं कहोगे तो मैं तुमको अपना यह भेद बता देता हूँ।"

ऐसे मौके पर जैसे सब कहते हैं ऐसे ही कछुए ने भी कुत्ते से वायदा किया कि वह कुत्ते की बात बाहर बिल्कुल भी नहीं फैलायेगा। कुत्ते ने कहा — "अच्छा तुम सुबह आना तब तुम देखना।"

सुबह तड़के ही कछुआ उस जगह पर पहुँच गया जहाँ कुत्ते ने उसको बुलाया था। कुत्ता थोड़ी देर से आया। आ कर कुत्ते ने अपनी माँ का बताया गीत गाया।

तुरन्त ही आसमान से एक रस्सी नीचे जमीन पर गिर पड़ी और कुत्ता और कछुआ दोनों उस कुर्सी पर बैठ कर स्वर्ग चल दिये। शाम को खा पी कर वे खुशी खुशी वापस लौट आये। इस बीच सारे समय कछुआ स्वर्ग की कसम खाता रहा कि वह यह भेद किसी और को नहीं बतायेगा।

कुछ दिनों बाद कछुआ जानवरों के राजा से मिलने गया और बोला — "हे राजा, क्या मैं आपसे अकेले में कुछ बात कर सकता हूँ?"

शेर ने तुरन्त ही अपनी पूँछ हिला कर सब जानवरों को वहाँ से बाहर जाने का इशारा किया।

जब शेर अकेला रह गया तो कछुआ सिर झुका कर बोला — "राजा साहब, मैं अभी अभी एक ऐसी जगह से आ रहा हूँ जहाँ अकाल का नाम भी नहीं है और हर कोई पेट भर कर खा सकता है।"

शेर बोला — "कहाँ है वह जगह कछुए भाई? मैंने बहुत दिनों से पेट भर कर खाना नहीं खाया है और इसी वजह से मुझे इस शापित देश से कुछ नफरत सी होने लगी है।"

कछुआ बोला — "अगर आप अपने राज्य में मुझे ऊँचा ओहदा दें और मेरी सुरक्षा का वायदा करें तो मैं आपको वहाँ जाने का रास्ता बता सकता हूँ।"

शेर बोला — "इसमें तो कोई बात ही नहीं है कछुए भाई। पर तुमको अपना वायदा पूरा करना पड़ेगा। तुम तुरन्त ही हम लोगों के वहाँ जाने का इन्तजाम करो और देखो यह बात किसी और को नहीं बताना।"

कछुए ने शेर को सुबह एक जगह आने को कहा और वहाँ से चला गया।

कुत्ते को तो इन सब बातों का पता ही नहीं था। अगली सुबह कछुए को शेर का ज़्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ा। उसने जल्दी ही उसको आते देखा।

परन्तु उसको देखते ही तो उसका पारा आसमान पर चढ़ गया क्योंकि शेर वहाँ अकेला नहीं आया था। वह साथ में अपनी पत्नी बच्चों और अपने बहुत सारे दोस्तों को भी लाया था। बड़ी भीड़ थी उसके साथ।

कछुआ मन ही मन बोला — "बस यही तो मैं नहीं चाहता था। पर अब तो कुछ हो नहीं सकता। अब अगर मैं केवल राजा को ऊपर ले जाता हूँ तो भी और जानवर तो उसके गवाह रहेंगे ही।"

जब राजा कछुए के पास आ गया तो कछुए ने राजा का और उसके साथ आये सब जानवरों का स्वागत किया और फिर उसने कुत्ते वाला गीत गाया और रस्सी और कुर्सी आसमान से नीचे आ गिरी।

राजा शेर ने पूछा — "इस एक कुर्सी पर हम सब कैसे बैठेंगे?"

कछुआ जल्दी से बोला — "जी यह तो आप ठीक कह रहे हैं। हम सब इस एक कुर्सी पर नहीं बैठ सकते। इस पर तो केवल हम दोनों के लिये ही जगह है। मुझे दुख है कि बाकी सबको यहीं नीचे रहना पड़ेगा।"

शेर बोला — "ठीक है।"

और शेर उछल कर उस कुर्सी पर बैठ गया। शेर के बैठने के बाद कछुआ बड़ी मुश्किल से उस कुर्सी पर बैठ सका। पर शेर की पत्नी बच्चे और दोस्त तो कुछ और ही सोच रहे थे।

जब शेर और कछुआ ऊपर जाने लगे तो कई जानवरों ने उस रस्सी पर लटकने की कोशिश की। बहुत सारे लटक भी गये। पर इसके बाद वहाँ क्या हुआ इसको तो केवल सोचा ही जा सकता है।

राजा शेर सबको डाँट रहा था और कोई उसकी सुन ही नहीं रहा था। किसी ने रस्सी पकड़ रखी थी, तो कोई कछुए के ऊपर बैठा था, किसी ने शेर की पूँछ पकड़ रखी थी और कुछ ऊपर वाले जानवरों के हाथ पैर या पूँछ पकड़े लटक रहे थे।

सो गुस्से में भरे चीखते चिल्लाते जानवरों की एक छोटी सी भीड़ ऊपर आसमान की तरफ चली।

कुत्ते की माँ ने जब शोर सुना तो नीचे झाँक कर देखा। उसको लगा कुछ गड़बड़ है क्योंकि उसने देखा कि बहुत सारे जानवर रस्सी से लटके ऊपर चले आ रहे हैं। उसको लगा वे सब उसको मारने के लिये आ रहे हैं।

बस तुरन्त ही उसने एक चाकू लिया और जब वे सब आधे रास्ते में पहुँचे तो उसने रस्सी काट दी। बड़े ज़ोर की एक आवाज हुई और सारे के सारे जानवर धम्म से नीचे आ गिरे। कछुआ तो अपने खोल की वजह से बच गया पर बाकी सारे जानवर मर गये।

पास के गॉव के जानवरों ने इतनी ज़ोर की धम्म की आवाज सुनी तो वे देखने आये कि क्या मामला है। उनको जल्दी ही पता चल गया कि कछुए के अलावा सभी जानवर मर चुके थे। उन्होंने राजा शेर के शरीर को भी पहचान लिया।

कछुए को राजा के मारने का जवाब देने के लिये अदालत में जाना पड़ा।

अदालत में उसने कुत्ते की मॉ और उसकी रस्सी की पूरी कहानी सुना दी। अब कोई जानवर उसकी बात का विश्वास ही नहीं कर रहा था सो उसको फिर उसी जगह पर लाया गया जहॉ शेर मरा था और इतने सारे जानवरों को मारने के जुर्म में उसका सिर काट दिया गया।

उधर कुत्ता जब उस जगह पर पहुॅचा और उसने ऊपर जाने के लिये गीत गाया तो कोई रस्सी नीचे नहीं गिरी क्योंकि वह रस्सी तो उसकी मॉ ने चाकू से काट दी थी और वह बची हुई आधी रस्सी तो केवल आधे रास्ते तक ही आती थी सो कुत्ता फिर कभी स्वर्ग नहीं जा सका।

अकाल चलता रहा तो कुत्ता आदमियों के देश में चला गया और वहीं उनके दिये गये खाने पर गुजारा करने लगा। तबसे कुत्ता अपना गुजारा आदमी के दिये खाने पर ही करता है।

बहुत सारे आदमियों और जानवरों ने इस बात को जानने में अपनी पूरी ज़िन्दगी खर्च कर दी कि कुत्ते ने अपनी मॉ को स्वर्ग कैसे

भेजा था और अकाल खत्म होने के बाद फिर वह नीचे कैसे आयी पर कोई भी इस बात का ठीक से पता नहीं लगा सका।

कुछ का कहना है कि और दूसरे जानवरों की तरह उसने भी अपनी माँ को मारा था। कुछ का कहना है कि उसकी प्रार्थना पर किसी ने स्वर्ग से रस्सी लटकायी थी और उसी से वह ऊपर गयी थी। पर यह भेद अभी तक भेद ही है।



25 एक लकड़ी का चमचा और एक कोड़ा[98]

एक बार धरती पर अकाल पड़ा तो अजायी[99] नाम का एक आदमी खाने की तलाश में अपने घर से कुछ दूर निकल गया। चलते चलते वह एक नदी के किनारे आ पहुँचा। खाने की खोज में वहाँ वह बहुत देर तक इधर उधर घूमता रहा।



इत्तफाक से वहीं नदी के किनारे उसे तेल वाले ताड़[100] का एक पेड़ दिखायी दे गया। उस पेड़ पर कुछ गिरियाँ लगी हुई थीं। वह पेड़ पर चढ़ गया और उन गिरियों को तोड़ने ही वाला था कि वे सब की सब नदी में गिर गयीं।

केवल एक गिरी को छोड़ कर बाकी सब गिरियाँ नदी के पानी में डूब गयीं थीं। वह एक गिरी जो तैर रही थी वह भी पानी के बहाव के साथ नीचे की तरफ जाने लगी।

अजायी पेड़ से नीचे उतर आया और उस बहती हुई एक गिरी के देखता हुआ उसके साथ साथ चलता रहा। वह गिरी भी बीच धार में बहती जा रही थी। आखिर बहते बहते वह समुद्र में पहुँच गयी।

---

[98] The Wooden Spoon and the Whip (Tale No 23) – a folktale from Yoruba Tribe, Nigeria, Africa
[99] Ajayi – name of the man
[100] Palm tree from which the Nigerians extract palm oil. The picture given above of is of its nuts.

अजायी ने सोचा कि समुद्र में तो यह खो जायेगी। जैसे तैसे तो यह एक गिरी मिली है और वह भी खो जायेगी यह सोच कर अजायी समुद्र में कूद पड़ा।

परन्तु जैसे ही वह समुद्र में कूदा वह गिरी समुद्र में डूब गयी। अजायी को तो उस गिरी को लेना ही था सो उसने भी समुद्र में डुबकी मार दी।

उसके डुबकी लगाते ही एक अजीब सी बात हुई और वह यह कि वह अब पानी में नहीं बल्कि समुद्र के नीचे एक महल में खड़ा था। उसके सामने समुद्र का देवता ओलोकुन[101] बैठा था और वह महल उसी का था।

देवता ने पूछा — "अजायी, तुम्हारे यहाँ आने की क्या वजह है?"

अजायी ने उसको सारी कहानी बता दी कि किस तरह वह खाने की तलाश में निकला था फिर किस तरह वह तेल वाले ताड़ की गिरी का पीछा करते करते वहाँ तक आ पहुँचा था।

ओलोकुन बोला — "तुम यहाँ मेरे पास रहो और पेट भर कर खाना खाओ।"

अजायी बोला — "वह तो ठीक है पर मैं अकेला नहीं हूँ। मेरा परिवार भूखा मर रहा है।"

[101] Olokun – the Sea God

इस पर ओलोकुन अपने सिंहासन से उठा और उसने अपने कमरे के एक कोने में खड़ी एक लकड़ी की अलमारी खोली।



उसमें से उसने एक अजीब सा लकड़ी का चमचा निकाला और अजायी को देते हुए बोला — "लो, यह लकड़ी का चमचा ले जाओ। इसे सँभाल कर रखना तो तुम्हें और तुम्हारे परिवार को कभी भी खाने की कमी नहीं होगी।

तुमको बस यह करना है कि इससे यह कहना है कि तुम्हें क्या चाहिये और यह चमचा तुमको वही दे देगा।"

अजायी ने समुद्र के देवता को धन्यवाद दिया और उस देवता के नौकर अजायी को समुद्र के किनारे तक छोड़ गये। वहाँ से अजायी अपने घर दौड़ गया। घर जा कर उसने वह जादुई चमचा अपने घर वालों के दिखाया।

अजायी ने चमचे से पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

चमचा बोला — "खाना खिलाना।" और तुरन्त ही वहाँ कई तरह के तैयार खाने प्रगट हो गये। सबने कई दिनों बाद पेट भर कर खाना खाया।

अजायी भला आदमी था और दूसरों की सहायता करना चाहता था सो वह राजा के पास गया और उसने वह चमचा राजा को दिखाया।

वह चमचा देख कर तो राजा बहुत खुश हुआ। राजा ने अपने सभी लोगों को बुला लिया और चमचे से प्रगट हुआ खाना खिला कर सभी को सन्तुष्ट किया।

सब आदमियों को खाना खिलाने के बाद अजायी और राजा दोनों ने सोचा कि राज्य के सब जानवरों को भी खाना खिला दिया जाये सो उन्होंने सब जानवरों को भी खाना खाने के लिये बुलाया और उनको भी खाना खिला कर सन्तुष्ट किया।



खाना खाने के बाद एक कछुआ अजायी के पास आया और उससे पूछा कि उसको यह जादुई चमचा कहाँ से मिला। अजायी ने चमचा मिलने की सारी कहानी उसको बता दी।

कछुए ने अजायी को धन्यवाद दिया और चमचे से पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

चमचा बोला — "खाना खिलाना।"

कछुआ बोला — "तो तुम मुझे ताड़ की एक गिरी दो।"

तुरन्त ही ताड़ की एक गिरी वहाँ हाजिर हो गयी। कछुए ने ताड़ की वह गिरी उठायी, राजा को धन्यवाद दिया और वहाँ से चला गया।

कछुए ने गिरी को नदी और समुद्र के बीच की जगह डाला तो गिरी वहाँ डूबने लगी। कछुआ उसके पीछे पीछे चल दिया तो वह भी समुद्र के देवता ओलोकुन के महल में देवता के सामने खड़ा था।

देवता ने कछुए से पूछा — "ए कछुए, तुम्हारा इधर कैसे आना हुआ?"

कछुए ने उसको अजायी वाली कहानी जैसी की तैसी सुना दी।

ओलोकुन बोला — "तो अब तुम्हें क्या चाहिये।"

कछुआ बोला — "मैं चाहता हूँ कि आप मुझे भी एक लकड़ी का चमचा दे दें ताकि मैं अपने भूखे परिवार का पेट भर सकूँ।"

देवता ने कहा — "अब और तो मेरे पास कोई चमचा नहीं है। पर रुको।"

ऐसा कह कर वह अपनी लकड़ी की अलमारी के पास गया और उसे खोल कर उसमें से एक कोड़ा निकाल कर कछुए को देते हुए कहा — "हॉ यह एक कोड़ा है यह सारी ज़िन्दगी तुन्हारी सेवा करेगा।"

कछुआ जल्दी में था उसने देवता को धन्यवाद दिया और देवता के नौकर उसको समुद्र के किनारे छोड़ गये।

उससे जितनी जल्दी हो सकता था उतनी जल्दी वह अपने घर आया और घर के दरवाजे बन्द करके अपने परिवार से बोला — "अब तुम मेरे कोड़े का कमाल देखो। अब मेरे पास भी अजायी जैसी कमाल की चीज़ है जो मुझे हर चीज़ देगी।"

कछुए ने कोड़े से पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

कोड़ा बोला — "मारना।"

और उसने कछुए और उसके परिवार को मारना शुरू कर दिया। घर का दरवाजा क्योंकि बन्द था इसलिये कछुए को बाहर निकलने में बहुत देर लगी।

अगले दिन उसने बदला लेने की सोची। वह अपना कोड़ा ले कर राजा के पास पहुँचा और बोला कि उसका कोड़ा भी अजायी के चमचे की तरह से करामात दिखा सकता था। और ऐसा कह कर उसने वह कोड़ा राजा को भेंट कर दिया।

राजा ने खुशी खुशी कछुए से वह कोड़ा ले लिया और फिर अपने सब आदमियों को खाना खाने के लिये बुलाया।

राजा ने उस कोड़े से पूछा — "तुम्हारा क्या काम है?"

कोड़े ने कहा — "मारना।"

और उसने वहाँ बैठे सभी आदमियों को मारना शुरू कर दिया, राजा को भी।

कछुआ पहले से ही एक कोने में छिप गया था सो वह सुरक्षित रहा। लोग चिल्ला रहे थे और उस कोड़े की मार से बचने के लिये भाग रहे थे। कछुआ इस सबका आनन्द ले रहा था। कुछ देर बाद कोड़ा शान्त हो गया।

कोड़े के शान्त होने के बाद लोगों ने कछुए को ढूँढना शुरू किया और उसे ढूँढ लिया और राजा के पास ले आये। राजा ने तुरन्त ही उसको मारने का हुक्म दे दिया।

इस तरह कछुए को अजायी की नकल करने की सजा मिली और उसके बदले का अन्त हुआ।



26 बाज़ कभी चोरी क्यों नहीं करता[102]

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गाँव में एक पति पत्नी रहते थे। उन लोगों की शादी को कई साल बीत चुके थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था। एक दिन पत्नी ने अपने पति से प्रार्थना की कि वह किसी जू जू आदमी[103] के पास जाये और उससे इस बारे में बात करे।

पति अपने जू जू आदमी के पास गया और उससे उसने इस बारे में बात की तो उसने कहा कि "ठीक है कल आना। मैं देखता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ।"

कुछ समय बाद उस जू जू आदमी के जू जू से उनके घर एक बेटी पैदा हुई जिसका नाम उन्होंने रखा अलान्तेरे[104]।

पति पत्नी दोनों उस जू जू आदमी के बहुत ही अहसानमन्द थे। पति जब उसको धन्यवाद देने गया तो वह बोला "देखो, अलान्तेरे को किसी भी हालत में काम मत करने देना क्योंकि इस जू जू ने इसको धरती पर भेजने के लिये यही सौदा किया है।"

पति घर लौट गया और जा कर यह सब अपनी पत्नी को बताया। दोनों को इस बात की कोई फिक्र नहीं थी कि उनकी बेटी

---

[102] Why the Hawk Never Steals? (Tale No 24) - a Yoruba folktale from Nigeria, Africa

[103] Ju Ju Man is the man who does magic or Black Magic. Ju Ju in Nigeria is a kind of magic or Black magic. It is like Indian Tonaa Totakaa. It can be both for good or bad.

[104] Alantere – name of the daughter of the couple.

काम करती है या नहीं क्योंकि बेटी से बढ़ कर उनके लिये और कोई खुशी नहीं थी।

अलान्तेरे बड़ी हुई पर जैसे और घरों में लड़कियाँ काम करती हैं अलान्तेरे को घर का कोई काम नहीं करने दिया जाता था। इस तरह बड़े होने से वह बहुत आलसी हो गयी।

जब अलान्तेरे 18 साल की हुई तो उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली। आदमी की दूसरी पत्नी अलान्तेरे को उसके आलसीपने की वजह से बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती थी।

हालाँकि उसको अलान्तेरे के बारे में सब कुछ बता दिया गया था कि वह काम क्यों नहीं करती थी फिर भी उसके ऊपर इस बात का कोई असर नहीं था।

एक दिन जब पति और उसकी पहली पत्नी दोनों बाहर अपने दोस्तों से मिलने गये हुए थे तो उसकी दूसरी पत्नी को अलान्तेरे से काम कराने का मौका मिल गया। उसने अलान्तेरे को खूब पीटा और घर का आँगन साफ कराया। फिर उसको पानी लाने भेजा।

जैसे ही अलान्तेरे पानी भरने के लिये पानी पर झुकी तो एक अजीब बात हुई। तालाब की देवी ओलूवेरी[105] अचानक तालाब से प्रगट हुई, उसने लड़की को खींचा और तालाब के पानी की गहराइयों में डुबो दिया।

[105] Oluweri – goddess of the Rivers

जब अलान्तेरे के माता पिता वापस घर लौटे तो उन्हें अपनी बेटी कहीं दिखायी नहीं दी। इससे उनको चिन्ता हो गयी कि उनकी बेटी कहाँ गयी।

उन्होंने जब दूसरी पत्नी से पूछा कि अलान्तेरे कहाँ है तो उसने उसके बारे में बताने से साफ इनकार कर दिया कि उसको उस लड़की के बारे में कुछ पता नहीं था। हो सकता था कि वह कहीं बाहर चली गयी हो।

जब अलान्तेरे बहुत देर तक नहीं लौटी तो उसके पिता ने उसके दोस्तों के घर मालूम किया पर वह वहाँ भी नहीं थी और उसके दोस्तों को भी नहीं मालूम था कि वह कहाँ थी।

इस पर उसके पिता ने लोगों से कहा कि लगता है कि अलान्तेरे को चुरा लिया गया है इसलिये उसकी तलाश जरूरी है। लोग दो दो और चार चार के समूह में चारों तरफ जा सकते थे और उसका नाम ले ले कर उसको पुकार सकते थे। लोगों ने ऐसा ही किया।

एक समूह ओलूवेरी के तालाब की तरफ निकल गया था। एक आदमी ने वहाँ जब उसका नाम ले कर पुकारा तो अलान्तेरे तालाब की सतह पर आ गयी। उसने बहुत बढ़िया कपड़े और गहने पहने हुए थे और वह बिल्कुल रानी लग रही थी। उसके चारों तरफ सोने और चाँदी की चटाइयाँ थीं।

अलान्तेरे ने एक गीत गाया जिसमें उसने उस आदमी को बताया कि किस तरह उसकी सौतेली माँ ने उससे काम करवाया और उस पर क्या क्या बीती।

वह आदमी तो यह सब देख सुन कर भौंचक रह गया। वह तुरन्त भागा भागा अलान्तेरे के माता पिता के पास पहुँचा और जा कर उनको सब कुछ बताया।

अलान्तेरे के माता पिता अपने दोस्तों के साथ उस तालाब पर आये और अलान्तेरे को पुकारा।

अलान्तेरे फिर वैसे ही बढ़िया कपड़े और गहने पहने तालाब की सतह पर आ गयी और यह गीत गाने लगी —

अलान्तेरे अलान्तेरे
देवताओं ने तुझे काम करने से मना किया था
उसके माँ बाप ने भी हाँ तो की कि वह काम नहीं करेगी
पर जब उसके माँ बाप नहीं थे तब उसको पीटा गया
उससे काम कराया गया उसको पानी भरने भेजा गया
वह भी ओलूवेरी के अपने तालाब से

अलान्तेरे अलान्तेरे
तभी अचानक देवी आ गयी तालाब की जिसका नाम है ओलूवेरी
वह ले गयी उसको पानी के नीचे कभी न दिखायी देने के लिये
अब वह इस तालाब से आगे कभी दिखायी नहीं देगी

और वह फिर पानी में डूब गयी। अब हर बार जब भी वे तालाब पर आये यही सब हुआ। अलान्तेरे तालाब की सतह पर आती, यह गाना गाती और फिर तालाब में चली जाती।

पर कोई कभी उसको तालाब के बाहर नहीं ला सका।

दुखी पिता एक बार फिर उसी जू जू आदमी के पास गया और उसको अपने साथ हुई घटना बतायी। जू जू आदमी ने पहले जू जू से सीधी प्रार्थना की परन्तु उससे कुछ नहीं हुआ क्योंकि उससे किया गया वायदा तोड़ा जा चुका था।

तब उस जू जू आदमी और पिता ने मिल कर देवताओं की प्रार्थना की मगर वहाँ से भी कुछ नहीं हुआ। ओलूवेरी से भी प्रार्थना की पर उसका भी कोई जवाब नहीं मिला।

अलान्तेरे की कहानी अब सब जगह फैल चुकी थी। कई लोग सहायता के इरादे से आये भी पर कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सका।



एक दिन जब अलान्तेरे का पिता सब तरफ से नाउम्मीद हो चुका था तो एक बाज़[106] आया। उसने भी अलान्तेरे की कहानी सुन रखी थी।

वह उसके पिता की सहायता करना चाहता था पर उसकी कीमत थी बीस मुर्गे। पिता तुरन्त ही राजी हो गया और दोनों ओलूवेरी के तालाब की तरफ चल दिये।

[106] Translated for the word "Hawk" – see its picture above.

बाज़ ने पिता को उस समय अपनी बेटी को पुकारने के लिये कहा जब वह उस तालाब के ऊपर मँडराये। कह कर बाज़ उस तालाब के ऊपर उड़ गया और वहाँ जा कर मँडराने लगा। उस बाज़ को तालाब पर मँडराते हुए देख कर पिता ने अपनी बेटी को पुकारा।

पिता के पुकारने पर अलान्तेरे तालाब की सतह पर आ गयी तो उस बाज़ ने तुरन्त ही कूद लगा कर उसके बाल पकड़ लिये और उसको धीरे से अपने तेज़ पंजों में पकड़ कर बाहर ले आया। बाहर ला कर उसने अलान्तेरे को उसके पिता के आँगन में छोड़ दिया।

इस पर घर में बहुत आनन्द मनाया गया और बाज़ को बहुत बहुत धन्यवाद दिया गया। अलान्तेरे के पिता ने बाज़ को न केवल 20 मुर्गे दिये बल्कि और भी बहुत कुछ दिया।

बाज़ बोला ये सारे मुर्गे तो मैं एक साथ नहीं ले जा सकता सो अगर आपको कोई एतराज न हो तो मैं इनको यहीं आप ही के पास छोड़ देता हूँ और इनको मैं एक एक कर के ले जाता रहूँगा। पिता राजी हो गया।

तब से बाज़ एक एक मुर्गा ले जाता रहता है। किसी को पता नहीं है कि अलान्तेरे के पिता ने उसको कितने मुर्गे देने का वायदा किया था।

पर बस वह तो तबसे आता है और एक एक मुर्गा ले जाता है। उसको यह लगता ही नहीं कि वह चोरी कर रहा है क्योंकि

उसको तो अब याद ही नहीं कि उसको कितने मुर्गे ले जाने हैं और वह कितने मुर्गे ले जा चुका है।



27 एक बैल और मक्खी[107]



बहुत साल पहले की बात है कि जानवरों के देश मे एक बार अकाल पड़ा। किसी को कुछ खाने को नहीं मिल पा रहा। याम[108] की फसल भी नहीं हुई, मूॅगफली बिना पानी के सिकुड़ गयी थी, केला बहुत ही छोटा सा रह गया था।

यहॉ तक कि मिर्चे और भिंडी भी नहीं आयीं। घास जल गयी थी और भुट्टे के पेड़ पर तो भुट्टा ही नहीं था।

जो जानवर दूसरे जानवरों का मॉस खा कर रहते थे वे भी भूखे थे क्योंकि वे दूसरे जानवर अब बची खुची घास, फल और सब्जी खा कर गुजारा कर रहे थे। और इसी लिये वे भी सूख से गये थे उनमें मॉस ही नहीं था।

मरने से पहले कुछ करना जरूरी था।

सो जानवरों के राजा शेर ने एक मीटिंग बुलायी जिसमें जंगल के सारे जानवर, पक्षी, मछली, कीड़े मकोड़े सभी आये थे। सभी को लग रहा था कि देवता को बलि चढ़ानी जरूरी थी पर बलि के लिये

[107] The Bull and The Fly (Tale No 27) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria
[108] Yam is a tuber vegetable which is a staple food in all the West African countries. It may weighs up to 5-10 pounds

कौन तैयार हो। सो शेर ने सलाह दी कि लाटरी निकाली जाये और जिसका नाम निकले उसी की बलि चढ़ायी जाये।

सबने यह बात मानी। लाटरी निकाली गयी तो उसमें सबसे पहले हाथी का नाम निकला सो उसको मार डाला गया।

उसका माँस इतना सारा था कि उसको जंगल में ऐसे ही नहीं छोड़ा जा सकता था। सो यह निश्चय किया गया कि किसी कसाई को बुलाया जाये और उससे हाथी को दावत के लिये कटवा लिया जाये।

पर यह काम भी उतना ही मुश्किल था जितना कि बलि के लिये जानवर ढूँढना।

सो शेर ने इस काम के लिये भी लाटरी डाली तो उसमें कसाई के नाम में बैल का नाम निकला। बैल उसमें से सबके लिये माँस काटने लगा। जब वह माँस काट रहा था तो मक्खी ने भी अपना हिस्सा माँगा।

बैल को मक्खी बिल्कुल पसन्द नहीं थी। वह बोला — “तुम बस मेरी तरफ देखती रहो मैं तुमको बिल्कुल नहीं भूलूँगा।”

मक्खी बैल की आँख की तरफ देखती रही। सारा माँस खत्म हो गया था अब कुछ भी नहीं बचा था।

मक्खी फिर चिल्लायी — “मेरा हिस्सा कहाँ है?”

यह सुन कर बैल को उससे और चिढ़ हो गयी। वह अपनी पूँछ हिलाता हुआ बोला — “तुम्हारी कोई कीमत नहीं है और तुम मेरा

कुछ बिगाड़ भी नहीं सकतीं सिवाय इसके कि तुम मेरी तरफ देखती रहो।"

मक्खी बहुत गुस्सा होते हुए बोली — "ऐसा ही हो। आज से मैं और मेरे बच्चे तुम और तुम्हारे बच्चों की आँखों में ही देखते रहा करेंगे।"

तब से मक्खी अक्सर जानवरों की आँख पर बैठ कर उन्हें परेशान करती है और जानवर भी उनको घृणा करते हैं। पर कर कुछ नहीं सकते क्योंकि उनके पूर्वज ऐसा ही शुरू कर गये हैं।



28 ओलूसेग्बे[109]

बहुत साल पहले की बात है जब योरुबा लोगों ने तभी तभी एक लड़ाई जीती थी और वे लोग कुछ जीते हुए लोग और सामान के साथ घर लौट रहे थे।

ओलूसेग्बे उन सबका सरदार था। अगर देखा जाये तो आज की यह लड़ाई उसी की वजह से जीती गयी थी।

गाँव आते समय दो सिपाही बात कर रहे थे — "ओलूसेग्बे अभी तक अकेला है। इन जीते हुए लोगों में कुछ लड़कियाँ बहुत सुन्दर हैं। हो सकता है कि वह इन्हीं में से एक से शादी कर ले।"

दूसरा बोला — "वह बड़ा अजीब आदमी है। उसने तो अभी तक अपने ही गाँव की किसी लड़की से शादी नहीं की वह इनमें से किसी एक से क्या शादी करेगा।"

उधर ओलूसेग्बे भी यही सोच रहा था पर पकड़ी हुई लड़कियों में से कोई उसको मन नहीं भा रही थी।

चलते चलते एक नदी आ गयी और सभी नदी पार करने लगे। ओलूसेग्बे ने अपने घोड़े पर चढ़ कर नदी तुरन्त ही पार कर ली और नदी के उस पार जा कर दूसरे लोगों को नदी पार करते देखने लगा।

[109] Olusegbe (Tale No 28) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

तभी उसकी निगाह किनारे पर उगी एक सब्जी पर पड़ी। उसने उसको तोड़ लिया और उसकी एक पत्ती पकड़ कर बोला — "कितनी सुन्दर सब्जी है यह। अगर यह किसी की पत्नी बन जाती तो कितना अच्छा रहता।"

बस उसका इतना कहना था कि वह सब्जी तो उसके हाथ से फिसल कर नीचे गिर गयी और एक सुन्दर लड़की के रूप में बदल गयी।

ओलूसेग्बे देखते ही उसको चाहने लगा। उसने उससे पूछा — "क्या तुम मेरी पत्नी बन कर मेरे घर चलोगी?"

लड़की ने सिर झुकाया और चुपचाप उसके पीछे पीछे चल दी।

कुछ दूर चलने पर उसको चमकीले रंगों वाली एक अजीब सी चिड़िया दिखायी दी। उसको देख कर ओलूसेग्बे के मुँह से निकला — "काश, किसी आदमी की पत्नी भी इतनी ही सुन्दर होती।"

उसका इतना कहना था कि वह चिड़िया भी एक सुन्दर लड़की में बदल गयी और उसके पीछे पीछे हो ली।

कुछ देर बाद ठंडे पानी का एक झरना आया। दिन गर्म था सो सभी वहाँ थोड़ी देर के लिये ठंडक में बैठ गये।

उस ठंडे पानी के देख कर ओलूसेग्बे बोला — "कितना ठंडा पानी है। काश यह एक लड़की होता।"



और उसके यह कहते ही पानी का कैलेबाश[110] लिये हुए एक लड़की वहाँ प्रगट हो गयी। उसने उस लड़की के कैलेबाश से पानी पिया और उसको भी साथ ले कर गाँव की तरफ चल दिया।

आगे जा कर उसने एक हिरन को भी एक लड़की बनाया और उसको भी साथ ले लिया।

जब वह अपने गाँव के पास पहुँचा तो वह इन घटनाओं के बारे में सोच ही रहा था कि उसने एक बहुत सुन्दर तितली एक फल के ऊपर मँडराती देखी।

वह सोचने लगा कि अगर मैंने फिर कहा कि "यह तितली कितनी सुन्दर है" या "यह फल कितना सुन्दर है" तो शायद ये भी लड़कियाँ बन जायेंगे और फिर वे लड़कियाँ मेरे पीछे लग जायेंगी।

पर उसका यह बोलना ही था कि सचमुच ही वे तितली और फल दोनों ही लड़कियाँ बन गयीं और अब छह लड़कियाँ उसके घोड़े के पीछे पीछे चल रहीं थी।

वह जब गाँव के अन्दर पहुँचा तो गाँव वालों ने उन छहों लड़कियों की तरफ कोई खास ध्यान नहीं दिया क्योंकि वे समझ रहे थे कि वे भी शायद जीती हुई लड़कियाँ होंगी। पर ओलूसेग्बे के सिपाही और दूसरे लोग उनको देख कर जरूर आश्चर्य कर रहे थे

---

[110] Calabash is a dry outer cover of a pumpkin like fruit which is used to keep dry or wet things as in India the pitchers are used. See its picture above.

कि ये लड़कियाँ कहाँ से आयीं। क्योंकि जब वे पहले वाले गाँव से चले थे तब तो ये लड़कियाँ उसके साथ नहीं थीं।

उस रात जीत की खुशी में खूब आनन्द मनाया गया। जीत का माल बाँटा गया और सब सिपाही अपने अपने घरों को लौट गये।

उधर ओलूसेग्बे ने उन छहों लड़कियों से शादी कर ली। अपना घर भी खूब बड़ा बनवा लिया। सब्जी वाली पत्नी उसको अपनी सब पत्नियों में सबसे ज़्यादा प्यारी थी इसलिये वही उसकी पहली पत्नी बनी।

एक दिन उसकी सब्जी वाली पत्नी ने कहा — "ओलूसेग्बे, लोगों का कहना है कि तुम्हारे पास कोई जू जू[111] है इसी लिये लड़ाई में तुमको कोई हरा नहीं सकता। क्या यह बात सही है?"

ओलूसेग्बे बोला — "आज तक मैंने यह बात किसी को नहीं बतायी पर अब क्योंकि मेरी शादी हो चुकी है और तुम मेरी बड़ी पत्नी हो इसलिये मैं तुमको बता देता हूँ। तुम ठीक कहती हो। हर लड़ाई में मेरी जीत उस जू जू की वजह से ही होती है।

मेरे घर के उस दूर वाले कोने में पानी का एक घड़ा है और एक झाड़ू है जो कभी भी इस्तेमाल नहीं की जाती। जब भी मुझे किसी लड़ाई का डर होता है तो मैं वह झाड़ू उस जादू के पानी में डुबोता हूँ और फिर मुझे किसी के हमले का डर नहीं रहता।

---

[111] Ju Ju is a magic or Black Magic. It is a kind of Tonaa Totakaa of India. This is Nigerian traditional magic. It may be for good or for bad.

पर तुम यह बात किसी को बताना नहीं। यह बात केवल हम तुम दोनों के बीच में ही रहनी चाहिये।”

सब्जी वाली पत्नी ने कहा कि ठीक है वह यह बात किसी को नहीं बतायेगी।

क्योंकि आजकल गाँव में शान्ति थी सो ओलूसेग्बे ने राजा से कुछ समय के लिये उस गाँव से बाहर जाने की इजाज़त माँगी। वह अपने एक दोस्त से मिलना चाहता था। राजा ने उसको इजाज़त दे दी।

कुछ दिन बाद ओलूसेग्बे अपनी सब्जी वाली पत्नी को घर की देखभाल करने के लिये छोड़ कर अपने दोस्त से मिलने चल दिया।

कुछ समय तक तो सब ठीक रहा पर कुछ समय बाद ही पास के एक कबीले ने हमला कर दिया। हमला अचानक था इसलिये गाँव के लोगों को गाँव की दीवार के दरवाजे बन्द करने और इधर उधर सिपाही खड़े करने का समय ही नहीं मिला।

राजा बहुत दुखी हुआ क्योंकि इस समय उसका सबसे अच्छा सेनापति ओलूसेग्बे उसके पास नहीं था और उसको हार जाने का डर था।

ओलूसेग्बे की सब्जी वाली पत्नी कुछ देर तक तो लड़ाई देखती रही पर फिर वह घर के अन्दर गयी और उसने ओलूसेग्बे की बाँसुरी बजायी और उसकी साथिन पत्नियों ने गाया —

ओलूसेग्बे ओलूसेग्बे, ओ मेरे पति सबसे अच्छे सेनापति
तुम्हें वह फल याद है जो तुम्हारी पत्नी बना
तुम्हें वह रंगीन चिड़िया याद है जो पेड़ पर गा रही थी
वह तितली याद है जो फल के पास थी

वह हिरन याद है जो तुम्हारे रास्ते में आ गया था
वह सब्जी याद है जो नदी के किनारे उगी थी
और झरने का वह पानी, ये सब तुम्हारी पत्नियाँ हैं
लड़ाई गाँव की दीवार के पास है और तुम दूर हो बहुत दूर

सब्जी वाली पत्नी जब यह गा रही थी और बाँसुरी बजा रही थी तो अचानक उसे ओलूसेग्बे के जू जू की याद आ गयी। उसने बाँसुरी तो फेंक दी और घर के दूसरे कोने की तरफ भागी।

जा कर तुरन्त उसने झाड़ू जादू के पानी में डुबो दी और वह झाड़ू ले कर लड़ते हुए सेनापति के पास पहुँची और वह झाड़ू उसको दे दी। तुरन्त ही दुश्मन हारने लगा और अपने गाँव भाग गया।

ओलूसेग्बे ने जब इस अचानक हमले के बारे में सुना तो वह भी जल्दी जल्दी घर आया और उसे यह जान कर खुशी हुई कि दुश्मन को हरा दिया गया है। और यह जान कर उसे और भी ज़्यादा खुशी हुई कि उसकी बड़ी पत्नी की समझदारी से यह सब हुआ।

कुछ दिनों तक फिर गाँव में शान्ति रही तो ओलूसेग्बे ने फिर बाहर जाने की सोची। राजा ने उसको फिर जाने की इजाज़त दे दी।

पड़ोसी कबीले वाले तो इसी मौके की तलाश में थे। उन्होंने सोचा कि पिछली बार शायद हम बदकिस्मती से हार गये थे पर इस बार हम शायद जीत जायें।

यही सोच कर उन्होंने फिर से अचानक हमला कर दिया। अब की बार सब्जी वाली पत्नी तैयार थी। उसने तुरन्त झाड़ू जादू के पानी में डुबोयी और लड़ते हुए सेनापति को दे आयी।

इस बार भी दुश्मन का बहुत नुकसान हुआ और उसने फिर कभी ओलूसेग्बे के गाँव पर हमला करने की सोचा भी नहीं।

कुछ दिनों में ओलूसेग्बे घर वापस आ गया। पर उसके आने के कुछ दिनों बाद ही राजा मर गया तो दूसरा राजा चुना गया। वहाँ यह रिवाज था कि सेनापति को नये राजा से मिलने जाना होता था और उससे यह पूछना होता था कि वह किस देश पर चढ़ाई करना चाहता था।

इसी रिवाज के अनुसार ओलूसेग्बे भी नये राजा से मिलने गया और उसने उससे पूछा कि वह किस देश पर चढ़ाई करना चाहता था तो सबको यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह मेंढकों के देश पर चढ़ाई करना चाहता था।

अब राजा का हुक्म था सो मानना तो था ही। असल में हुआ यों कि राजा जब बच्चा था तो एक मेंढक ने उसकी आँख में थूक दिया था सो आज जब वह राजा बन गया था तो वह उनसे अपने उस अपमान का बदला लेना चाहता था।

सो ओलूसेग्बे ने अपनी सेना इकट्ठी की और अपने कैप्टेन लोगों की एक मीटिंग बुलायी। जब मीटिंग चल रही थी तो ओलूसेग्बे ने एक चींटी के भागने की आवाज सुनी पर वह कुछ समझ न सका कि वह चींटी क्यों भागी और कहाँ जाने के लिये भागी।

असल में वह चींटी मेंढकों को राजा के हमले की खबर देने के लिये भागी थी। जब चींटी ने जा कर उनको राजा के हमले के बारे में बताया तो सारे मेंढक डर गये।



एक अक्लमन्द मेंढक ने कहा — "अब जब हमको पहले से मालूम चल ही गया है तो हमको ठीक से काम करना चाहिये। मेरी सलाह यह है कि हमको अक्लमन्द कछुए के पास जाना चाहिये और उससे सहायता माँगनी चाहिये। अगर वह हमारी सहायता नहीं भी करेगा तो भी कम से कम हमें कोई तरकीब तो बतायेगा ही।"

सो एक मेंढक कूदता फलाँगता कछुए के पास गया और उसे सारी बातें बतायीं।

कछुए ने सब कुछ ध्यान से सुना और बोला — "मुझे अफसोस है कि मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता। क्योंकि अगर तुमको ओलूसेग्बे से लड़ना है तो तुमको हारना ही है क्योंकि उसके पास एक ऐसा जू जू है जिसकी वजह से उसे कोई नहीं हरा सकता।"

मेंढक बोला — "यह जू जू क्या है?"

कछुआ बोला — "पिछली लड़ाई के समय में मैं सेनापति के घर के पास ही रहता था वहीं मैंने उसकी बड़ी पत्नी को उसकी दूसरी पत्नियों से उस जू जू की बात करते और गॉव को बचाने की बात करते सुनी थी।

वह घर के एक कोने में गयी, एक पुरानी झाड़ू उठायी और उसको एक अजीब से पानी में डुबोया और फिर उस झाड़ू को ले कर वह सेनापति के पास भाग गयी और बस फिर वे वह लड़ाई जीत गये।"

मेंढक ने पूछा — "आप क्या सोचते हैं कि यह झाड़ू और वह पानी ही क्या ओलूसेग्बे के जू जू हैं?"

कछुआ बोला — "मुझे तो पूरा यकीन है कि वे ही उसके जू जू हैं। तुम लोग एक काम कर सकते हो। तुम उसकी पत्नी को खुश कर के किसी तरह उसकी वह झाड़ू और पानी का बर्तन ले लो तो फिर देखते हैं कि ओलूसेग्बे की सेना तुमको कैसे हराती है।"

मेंढक कूदता फलॉगता वापस अपने देश में पहुॅचा और कछुए से हुई सब बातें सब मेंढकों को जल्दी जल्दी सुना डालीं।



यह सब सुन कर मेंढकों ने निश्चय किया कि सब मेंढकों से एक एक कौड़ी[112] इकट्ठी की जाये और ओलूसेग्बे की बड़ी पत्नी को भेंट की जायें।

[112] Cowrie is a shell of a sea animal. In olden days it was used as money. It seems in Nigeria also it was used as money in those times. See its picture aove.

जब कौड़ियॉ इकट्ठी हो गयीं तो मेंढकों के सरदार ने उन कौड़ियों में से कुछ कौड़ियों से एक घड़ा शहद खरीदा, कुछ कौड़ियॉ अपने पास रखीं और कुछ कौड़ियॉ कछुए के लिये रखीं। फिर वह ओलूसेग्बे के घर चल दिया।

कूदता फॉदता वह उसकी बड़ी पत्नी के पास पहुॅचा और उसको आदर से नमस्कार किया और बोला कि वह कितनी सुन्दर थी और किस तरह इतनी सुन्दर पत्नी के लिये वह ओलूसेग्बे से जलता था।

ओलूसेग्बे की बड़ी पत्नी यह सुन कर बहुत खुश हुई।

इसके बाद मेंढक ने उसको शहद का घड़ा भेंट किया। ओलूसेग्बे की बड़ी पत्नी को मेंढकों के राजा के इरादों के बारे में कुछ भी पता नहीं था इसलिये उसको शक करने की कोई गुंजायश ही नहीं थी।

कुछ देर बातें करने के बाद वह बोला कि क्या वह उस कोने में रखा बर्तन और झाड़ू कुछ समय के लिये उससे उधार ले सकता था। उसने उससे यह भी कहा कि वह उनको अगले दिन वापस दे जायेगा।

पहले तो वह तैयार नहीं हुई परन्तु कौड़ियों के कई थैले देख कर वह राजी हो गयी। उसने मेंढक से कहा कि ओलूसेग्बे के पता चलने से पहले पहले ही वह उनको वापस कर जाये तो अच्छा है।

मेंढक ने कहा "ठीक है। मैं ऐसा ही करूॅगा।"

और कछुए की सहायता से उसने वह बर्तन और झाड़ू ले जा कर जंगल में छिपा दी।

अगली सुबह जब ओलूसेग्बे लड़ाई पर जाने की तैयारी कर रहा था तो हजारों की तादाद में मेढकों ने गाँव पर हमला कर दिया। वे समुद्र की तरह बढ़े चले आ रहे थे लोगों को मारते हुए, राजा को भी मारते हुए, तोड़ फोड़ करते हुए।

ओलूसेग्बे अपने जू जू की तरफ दौड़ा तो उसे वहाँ न देख कर उसने अपनी बड़ी पत्नी से पूछा — "मेरा जू जू कहाँ है? कहाँ गया मेरा जू जू यहाँ से?"

दुखी होते हुए उसकी पत्नी ने अपनी बेवकूफी की कहानी उसको सुना दी कि किस तरह मेंढक आया, उसको कौड़ियाँ और शहद दिया और यह जू जू ले गया।

ओलूसेग्बे तो गुस्से से पागल सा हो गया पर इस समय उसके पास अपनी पत्नी से लड़ने का समय नहीं था। मेंढक बढ़े चले आ रहे थे। वह उनसे लड़ने के लिये गया भी पर हार गया।

यह पहली बार था जो वह अपने दुश्मन से हारा। उस रात सारे मेंढक गाँव में आ गये और गाँव का सब कुछ अपने कब्जे में कर लिया।

मेंढक जो ओलूसेग्बे के घर गया था बोला — "इस जीत का फल हैं ओलूसेग्बे की छहों सुन्दर पत्नियाँ ले लेना। क्योंकि अब वह

उनका क्या करेगा। अब मैं जा कर अपनी सब्जी वाली पत्नी को धन्यवाद दूँगा और अपना घर देखूँगा।"

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने देखा कि ओलूसेग्बे की छहों की छहों पत्नियाँ तो रो पीट रहीं हैं।

वह बोला — "यह क्या हो रहा है यहाँ? क्या अपने नये पति का इस तरह स्वागत किया जाता है? जाओ और जा कर मेरे लिये बढ़िया खाना पकाओ। मैं बहुत थक गया हूँ खाना खा कर सोना चाहता हूँ।"

छहों पत्नियाँ एक आवाज में बोलीं — "हमारा पति ओलूसेग्बे कहाँ है?"

मेंढक बोला — "तुम्हारा पति मर गया, भूल जाओ उसको। अब मैं तुम्हारा पति हूँ अब तुमको मेरा कहा मानना पड़ेगा। जाओ मेरे लिये खाना ले कर आओ। हाँ और यह रोना धोना बन्द करो। मुझे यह शोर बिल्कुल पसन्द नहीं है।"

मेंढक की शक्ल और उसके ये शब्द उन पर जहर का काम कर रहे थे। पर अब वे पत्नियाँ हँसी और सबने गाना शुरू कर दिया —

ओलूसेग्बे ओ ओलूसेग्बे तुम चले गये, सबसे सुन्दर तुम्हारी छह पत्नियाँ
सब्जी जो नदी किनारे उगी, रंगीन चिड़िया जो पेड़ पर गाती थी
ठंडे झरने का पानी, फल जो तुम्हारी पत्नी बनी
तितली और हिरन जो तुम्हारी पत्नी बने
अब हम सब अपने अपने घर जाते हैं, ओलूसेग्बे, विदा।

यह गाना खत्म होते ही उसकी छहों पत्नियाँ गायब हो गयीं और मेंढक उस घर में अकेला रह गया।

वह बहुत देर तक बिना हिले डुले वहाँ चुपचाप पड़ा रहा। फिर बोला — "आश्चर्य, यह तो बहुत ही अजीब बात है।"

पर ओलूसेग्बे तो अभी मरा नहीं था। जब वह मेंढकों की सेना से हार चुका तो उसने अपने एक कैप्टेन को बुलाया और कहा कि वह उसको अपनी तलवार से मार दे।

कैप्टेन ने उसको ढाँढस बँधाया और कहा कि अभी सब कुछ नहीं लुटा है। अगर ओलूसेग्बे किसी तरह से यह मालूम करने में कामयाब हो जाये कि वह जू जू उसके घर से कौन ले गया था तो वे लोग उसको शायद वापस भी ले सकें और उस मेंढक को उसकी किये की सजा भी दे सकें।

यह बात ओलूसेग्बे की कुछ समझ में आयी और वह यह पता करने चल दिया कि आखिर हुआ क्या था। ओलूसेग्बे जंगल में काफी समय तक यों ही बेकार सा घूमता रहा।

एक दिन उसको एक चीता मिल गया। चीते ने पूछा — "क्या तुम्हीं बहादुर सेनापति ओलूसेग्बे नहीं हो?"

ओलूसेग्बे बोला — "हाँ भाई मैं ही वह बदकिस्मत ओलूसेग्बे हूँ बल्कि कहना चाहिये कि था।"

चीता आगे बोला — “जानवरों का कहना है कि तुम अपने हराने वाले को ढूँढने निकले हो। अगर तुम मेरी बात ध्यान से सुनो ओलूसेग्बे, तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।

जब तुम अपने कैप्टेन लोगों के साथ अपनी मीटिंग कर रहे थे तो एक चींटी ने सुन लिया था कि तुम लोग मेढकों के देश पर हमला करने वाले हो और वह चींटी वह बात सब मेंढकों को बता आयी थी।

उनमें से एक मेंढक ने जो अभी भी तुम्हारे घर में बैठा है सलाह दी कि इस बारे में कछुए से सलाह ली जाये। और यह कछुआ ही तुम्हारी हार की वजह है। क्योंकि उसी ने उस मेंढक को यह सलाह दी थी कि तुम्हारी बड़ी पत्नी को शहद और कौड़ियाँ दे कर उससे वह जू जू ले लिया जाये।

और ऐसा हो गया। वह तुम्हारी पत्नी को शहद और कौड़ियाँ दे कर आया और उससे तुम्हारा जू जू ले आया। और अब कछुआ जानता है कि मेंढक ने वह जू जू कहाँ छिपाया है।

अगर तुम उस कछुए को पकड़ लो तो मुझे विश्वास है कि तुम अपनी खोयी हुई ताकत को फिर से पा सकोगे।”

ओलूसेग्बे बोला — “सत्यानाश हो उस कछुए का और उसके सारे बच्चों का। भगवान करे वह सब जानवरों में कमजोर समझा जाये। मैं उसे ढूँढता हूँ और उसे मारता हूँ।”

चीता बोल — "नहीं, यह काम तुम नहीं मैं करूँगा क्योंकि वह मेरा दुश्मन है।"

ओलूसेग्बे ने पूछा — "पर तुम कछुए से इतनी नफरत क्यों करते हो? उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

चीता बोला — "कुछ दिन पहले की बात है कि हम दोनों में झगड़ा हो गया था और मैं जानता हूँ कि वह बहुत ही चालाक जानवर है।



एक दिन मेरे घर एक अलाबे[113] आया। वह मेरे बच्चों के चेहरों पर निशान बनाना चाहता था। मैं तैयार हो गया। सारी तैयारियाँ हो गयीं तभी उसने कहा कि वह बड़ों के सामने यह काम नहीं कर सकता था सो उसने मुझे वहाँ से जाने के लिये कहा।

मैं बाहर चला गया और इस तरह वह मेरे बच्चों के साथ अकेला रह गया। काफी देर के बाद भी जब वह बाहर न निकला तो मैं परेशान हो गया और कमरे के अन्दर गया कि देखूँ तो अन्दर क्या हो रहा है।

पर वहाँ अलाबे तो था नहीं और मेरे सारे बच्चे मरे पड़े थे। मैंने उस अलाबे को ढूँढने की कोशिश भी की पर वह मुझे मिला ही नहीं।

[113] Traditional doctor who makes tribal marks on peoples' faces according to their tribes. See a picture of those marks above.

बाद में मुझे पता चला कि कछुआ और अलाबे दोनों एक ही थे। अब जब तक उससे अपने बच्चों की हत्या का बदला नहीं ले लूँगा मैं चैन से नहीं बैठूँगा।"

ओलूसेग्बे ने चीते को धन्यवाद दिया और इधर उधर घूमता रहा। उधर चीते ने कछुए का पता लगा लिया कि वह एक नाव के पास वाले घर में है। बस फिर क्या था वह उधर ही चल दिया।

उधर कछुए को भी इस बात का पता चल गया कि चीता उस की तरफ आ रहा है। उस नाव के दो नाविक थे एक अन्धा और एक बहरा।

उसने नाविक से कहा कि वह उसको नाव में बिठा कर दूर ले चले और कछुआ अपने छोटे छोटे पैरों से जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी नाव में बैठ गया।

वह अन्धे नाविक को चिल्ला कर बोला कि वह उसको दूर ले चले और बहरे नाविक को उसने हाथ से इशारा किया कि वह उस को वहाँ से दूर ले चले। दोनों नाव वाले चल दिये।

इतने में चीता आ गया। कछुए को नदी में नीचे की तरफ जाता देख कर उसने पहले तो उसको पुकारा पर उसके वापस न आने पर उसने भी एक नाव ली और वह भी उनके पीछे पीछे चल दिया।

अन्धे नाविक ने कछुए को कहा भी कि कोई उसको पीछे से पुकार रहा था परन्तु बहरे नाविक ने कहा "मैंने तो नहीं सुना।" और वे आगे चल दिये।

चीते की नाव जल्दी जल्दी चल रही थी यह देख कर कछुआ अपनी नाव किनारे की तरफ ले चला। वह किसी झाड़ी में छिप जाना चाहता था पर बदकिस्मती से कछुए की नाव एक पेड़ से टकरा गयी।

बस फिर क्या था तुरन्त ही चीता उसके ऊपर कूद पड़ा और उसने उसकी एक टाँग पकड़ ली।

कछुआ हँसा और बोला — "चीते तुमने मेरी टाँग नहीं बल्कि पेड़ की जड़ पकड़ रखी है। मैं तो सुरक्षित हूँ।"

इस पर उसने कछुए की टाँग छोड़ कर पेड़ की जड़ पकड़ ली। तो कछुआ बोला "मैं मरा, मैं मरा।"

इस तरह काफी देर हो गयी। यह खेल और देर तक चलता रहता अगर उसी समय एक मछली चीते की सहायता के लिये न आ जाती।

आखिरकार कछुआ पकड़ा गया, उसको किनारे लाया गया और ओलूसेग्बे के सामने पेश किया गया। कछुआ ओलूसेग्बे से अपनी ज़िन्दगी की भीख माँगने लगा।

ओलूसेग्बे ने पूछा — "मेरा जू जू कहाँ है?"

कछुए ने बता दिया कि उसने उसका जू जू कहाँ छिपाया था। ओलूसेग्बे ने उसे तुरन्त ही ढूँढ लिया। फिर उसने देवताओं की प्रार्थना की और उनसे मेंढकों को अपने राज्य से निकालने के लिये सहायता मॉगी।

देवताओं ने उसकी सहायता की। उन्होंने बहुत सारे सॉप भेजे और मेंढकों को खाने वाली चिड़ियें भेजीं।

कुछ ही दिनों में गॉव में एक भी मेंढक नहीं रहा। इस तरह मेंढकों का अन्त हुआ। उनके साथ ही सॉप और चिड़ियें भी गायब हो गयीं।

इसके बाद योरुबा लोग फिर से उसी जंगल से घर लौट रहे थे। इस बार उनके साथ उनका नया राजा ओलूसेग्बे था। उनके पीछे चीता था और चीते के पीछे बन्दी बना कछुआ था पानी का घड़ा और झाड़ू लिये हुए।

एक बार फिर ओलूसेग्बे अकेला ही आगे निकल गया था तो उसके पीछे से उसके दो सिपाही उसके बारे में बात कर रहे थे।

एक बोला — "क्या ही अच्छा हो कि ओलूसेग्बे को अपनी पुरानी छहों पत्नियॉ वापस मिल जायें। वे बहुत ही सुन्दर थीं।"

दूसरा बोला — "वैसे वह बहुत ही अजीब आदमी है।"

पहला बोला — "हो सकता है कि उसका जू जू ही यह काम कर दे।"

दूसरा बोला "हो सकता है।"

ओलूसेग्बे भी यही सोच रहा था। उसने अपनी पत्नियों को बहुत ढूँढा परन्तु वे उसे अभी तक नहीं मिली थीं।

चलते चलते नदी आयी तो वह पहले की तरह सबसे पहले नदी पार कर गया और दूसरी तरफ पहुँच कर दूसरों को नदी पार करते देखता रहा।

जब वह दूसरों को नदी पार करते देख रहा था तो उसकी नजर पास में उगी हुई एक सब्जी पर पड़ी। उसने उसे पत्ते से पकड़ कर कहा — "कितनी सुन्दर सब्जी है अगर यह किसी की पत्नी बन जाती तो कितना अच्छा रहता।"

उसके इतना कहते ही वह सब्जी उसके हाथ से फिसल कर नीचे गिर गयी और उसकी पहली पत्नी में बदल गयी। उसने ओलूसेग्बे से अपनी बेवकूफी की माफी माँगी।

इस तरह गाँव पहुँचने से पहले पहले उसने अपनी छहों पत्नियों को वापस पा लिया।

गाँव वाले उन सबको देख कर बहुत खुश हुए। ओलूसेग्बे बहुत ही अच्छा राजा साबित हुआ। कछुए को चीते को दे दिया गया। चीते ने उसको एक पहाड़ी पर ले जा कर कुचल कर नीचे फेंक दिया और इस तरह कछुआ मर गया।



29 अजनबी और यात्री[114]

यह उस समय की बात है जब कुत्ते बिल्ली आपस में दोस्ती से रहा करते थे। लेकिन बस फिर उनमें एक बार लड़ाई हो गयी और इतने ज़ोर की लड़ाई हुई कि देवता भी उसे नहीं निपटा सके और वह लड़ाई उनमें अभी तक चली आ रही है।

वह लड़ाई शुरू कैसे हुई इसकी भी एक अजीब सी कहानी है।

यह लड़ाई शुरू ऐसे हुई कि एक कुत्ते और एक बिल्ले ने एक बार एक अनजाने देश में जाने का फैसला किया।

बिल्ला बोला — "कुत्ते भाई, अगर हम इस देश में पहुँच गये तो हम अपना असली नाम किसी को नहीं बतायेंगे। मैं अपना नाम अजनबी बताऊँगा और तुम अपना नाम यात्री बताना। ठीक?"

हालाँकि वह कुत्ता वैसे भी बिल्ले की हर बात मान जाया करता था क्योंकि उसको लगता था कि बिल्ला एक अक्लमन्द जानवर है पर फिर भी कुत्ते को यह ख्याल अच्छा लगा।

आखिर वे घूमते घूमते योरुबा लोगों के देश में आ पहुँचे और एक शहर में पहुँच कर उस शहर के सरदार से मिलने जा पहुँचे। सरदार ने उनको इज़्ज़त के साथ ठहराया। जब उनसे उनका नाम पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया अजनबी और यात्री।

---

[114] The Story of the Stranger and the Traveler (Tale No 29) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

सरदार थोड़ा कम सुनता था उसने सोचा कि उनमें से एक अजनबी था और एक यात्री। उसको यह पता ही नहीं चला कि ये दोनों उनके नाम थे।

उन दिनों योरुबा देश में यह रिवाज था कि वहाँ अजनबियों को तो लोग खाना खिला देते थे पर यात्रियों को खाना नहीं खिलाते थे। इसका नतीजा यह हुआ कि अजनबी यानी बिल्ले को तो खाना खिला दिया गया पर यात्री यानी कुत्ते को कोई खाना नहीं मिला।

इस बात से कुत्ता बहुत नाराज हुआ और बिल्ले से बोला कि उनको यह योरुबा देश छोड़ कर अपने देश चलना चाहिये क्योंकि यहाँ तो उसको खाना ही नहीं मिल रहा तो ऐसे वह वहाँ कैसे रहेगा।

सो अजनबी और यात्री दोनों ने अपना अपना सामान बाँधा और सरदार को विदा कहने के लिये चले। जब सरदार को यह मालूम पड़ा कि वे दोनों अपने घर जा रहे हैं तो उसने उनको एक सुन्दर गाय भेंट की।

अजनबी बिल्ला बोला — "कुत्ते भाई, यह गाय हम अपने देश ले चलते हैं।"

यात्री कुत्ता बोला — "नहीं, तुम तो जब तक यहाँ रहे खूब बढ़िया बढ़िया खाना खाते रहे और मैं भूखा मरता रहा। इसे हम यहीं अभी मारते हैं और आपस में आधी आधी बाँट लेते हैं।"

अजनबी बिल्ला बोला — "ठीक है। मेरे पास एक चाकू है उसी से इसको काट लेते हैं।"

यात्री कुत्ते के पास क्योंकि कोई चाकू नहीं था इसलिये अजनबी बिल्ले के चाकू से ही गाय काटी गयी।

यात्री कुत्ते ने पूछा — "पर अब हम इस गाय को बाँटेंगे कैसे?"

अजनबी बिल्ले ने सलाह दी कि चाकू के मारने से जो हिस्सा आवाज करे वह तुम्हारा, बाकी मेरा।"

सो इस तरह गाय का बँटवारा हुआ। इस बँटवारे से साफ जाहिर है कि गाय की सारी हड्डियाँ कुत्ते के हिस्से में आयीं और माँस बिल्ले के हिस्से में।

जब अजनबी बिल्ले ने सारा बँटवारा कर दिया तो उसे लगा कि यह बँटवारा तो ठीक नहीं है सो आखीर में उसने यात्री कुत्ते को गाय का सिर भी दे दिया।

यात्री कुत्ते ने अपने हिस्से की सारी हड्डियाँ खत्म कर ली थीं सो उसने अपने हिस्से का गाय का सिर उठाया और अजनबी बिल्ले से बोला — "अजनबी भाई, तुमको तो बहुत सारा माँस ले कर जाना है, मैं तुम्हारा इतनी देर तक इन्तजार नहीं कर सकता, मैं चलता हूँ फिर मिलेंगे।"

और यह कह कर वह गाय का सिर ले कर दौड़ गया। काफी देर चलने के बाद यात्री कुत्ता थक गया था सो वह एक पेड़ की छाँह में बैठ गया।

गाय के सिर की ओर देखते देखते उसके दिमाग में एक खयाल आया कि इस सिर को वह अभी यहीं जमीन में कहीं गाड़ दे और बाद में आ कर उसे ले जायेगा।

आराम करने के बाद उसने सिर गाड़ने के लिये गड्ढा बनाने के लिये जमीन खुरचनी शुरू की। जब गड्ढा खुद गया तो उसने सिर को उसमें रखा।

उस गड्ढे में सिर के सारे हिस्से तो आ गये पर वह उसकी आखें किसी तरह भी नहीं ढक सका। पर उसको इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी और वह सिर को गड्ढे में उसी तरह दबा कर चला गया।

उधर अजनबी बिल्ले के पास बहुत बोझा था सो वह भी धीरे धीरे चलते हुए उसी पेड़ के नीचे आ पहुँचा जिस पेड़ के नीचे यात्री कुत्ते ने अपनी गाय का सिर गड्ढे में दबाया था और वहाँ आराम करने बैठ गया।

अचानक उसकी निगाह जमीन में से झाँकती हुई दो आँखों पर पड़ी। वह डर गया और डर के मारे चीख पड़ा। उसके सारे बाल खड़े हो गये। वे आँखें उसे घूरे जा रहीं थीं और डर के मारे उसका बुरा हाल था।

उसको लगा कि उसने जो यात्री कुत्ते के साथ बेईमानी की थी उसी के बदले में धरती उसको डरा रही थी। उसने अपना डर हटाने के लिये एक गीत गाना शुरू किया —

ओ धरती माँ क्या ये तुम्हारी आँखें हैं?
क्या तुम चाहती हो कि मैं सारा माँस यहीं रख दूँ?
और बिना माँस के भाग जाऊँ? ओ धरती माँ मेरी जान बचाओ
इस गाय का सारा माँस में तुमको दे दूँगा

अजनबी बिल्ले को अपने इस गीत का कोई जवाब नहीं मिला सो उसने उस माँस को धरती माँ की भेंट में वहीं छोड़ कर घर जाने का फैसला किया और वह सारा माँस वहीं छोड़ कर घर चला गया।

अगले दिन यात्री कुत्ता अपनी गाय का सिर लेने को लिये उस पेड़ के पास आया तो उसको गाय का बाकी बचा माँस वहाँ पड़ा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। पर उसने अपनी गाय का सिर खोद कर निकाला और वह सारा माँस लिया और घर वापस आ गया।

यात्री कुत्ता बहुत दिनों तक अपने घर से बाहर नहीं निकला। फिर आखिर अजनबी बिल्ला ही उसके घर आया और उसे उस दिन की सारी कहानी सुनायी कि किस तरह धरती माँ की आँखें उसको घूर रहीं थीं।

अजनबी बिल्ला अभी अपनी कहानी खत्म करने ही वाला था कि उसकी निगाह यात्री कुत्ते की पूँछ के पीछे पड़ी। यात्री कुत्ते ने पीछे मुड़ कर देखा और फिर सामने अजनबी बिल्ले को देखा तो

उसने देखा कि अजनबी बिल्ला तो उसके पीछे रखे माँस के ढेर और गाय के सिर की तरफ देख रहा था।

अजनबी बिल्ले ने पूछा — "तुम्हें इतना सारा माँस कहाँ से मिला?"

यात्री कुत्ता ज़ोर से हँसा और बोला — "धरती माँ से।"

और बस यहीं उनकी दोस्ती का अन्त हो गया। दोनों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई। दोनों ही गाय के माँस पर अपना अपना हक जता रहे थे।

मामला देवताओं के पास तक गया पर उनसे भी इस बात का फैसला नहीं हो सका कि वह माँस किसका था।

उस दिन से आज तक कुत्ते बिल्ली एक दूसरे के दुश्मन हैं।



30 शिकारी और उसकी करामाती बाँसुरी[115]

एक बार ओजो[116] नाम का एक बहुत ही अच्छा शिकारी था। वह भी दूसरे योरुबा शिकारियों की तरह कई कई महीनों तक शिकार के लिये बाहर रहता था।

ओजो जंगल में जा कर ताड़ के पत्तों और डंडियों आदि से अपने रहने के लिये एक झोंपड़ी बना लेता और फिर वहाँ से अपना तीर कमान ले कर वह रोज शिकार के लिये निकल जाता।

हर रात सोने से पहले वह अपने लाये शिकार का माँस भूनता और जब उसके पास काफी भुना माँस इकट्ठा हो जाता तब वह उसे अपनी पत्नी के पास ले जाता। उसकी पत्नी उस भुने माँस को बेच कर घर की जरूरत की चीज़ें खरीद लाती।

ओजो के पास तीन कुत्ते थे। उसने उनके बड़े अजीब से नाम रखे हुए थे। एक का नाम था "टुकड़े कर दो", दूसरे का नाम था "खा डालो" और तीसरे का नाम था "साफ कर दो"।

इन तीन कुत्तों के अलावा उसके पास एक पुरानी बाँसुरी भी थी जिसके बारे में ओजो का कहना था कि वह बड़ी करामाती थी।

उसका कहना था कि जंगल में वह कितनी भी दूर चला जाये पर जब भी वह वह बाँसुरी बजाता था उस बाँसुरी की आवाज

[115] The Hunter and His Magic Flute (Tale No 30) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa
[116] Ojo – name of the Nigerian hunter

उसके कुत्तों तक पहुँच जाती थी और उसको सुन कर उसके तीनों कुत्ते उसके पास भागे चले आते थे। इसलिये वह यह बाँसुरी हमेशा अपने पास ही रखता था।

एक बार शिकार पर जाते समय उसने अपने तीनों कुत्तों को घर में बाँध कर छोड़ दिया और अपनी पत्नी को कहा कि वह उनकी ठीक से देखभाल करे और किसी भी समय अगर वे ज़रा से भी बेचैन दिखायी दें तो वह उनको छोड़ दे उन्हें बँधा न रहने दे।

ऐसा कह कर वह वहाँ से चल दिया।

तीन दिन के सफर के बाद वह एक ऐसी जगह पर आया जहाँ उसको अपना कैम्प डालना था। इस तरफ पहले वह कभी नहीं आया था। उसकी अनुभवी आँखें बता रहीं थीं कि उसको शिकार के लिये यहाँ पर काफी जानवर मिलेंगे।

ओजो अपना कैम्प लगाने में लग तो गया पर वहाँ उसको बहुत डर लग रहा था। उसको कुछ ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई उसको छिपे छिपे देख रहा है। और वह भी कोई आदमी या जानवर नहीं बल्कि कोई भूत देख रहा है।

जब वह छोटा था तो अक्सर जंगल में रहने वाले भूतों के बारे में सुनता रहता था। वह उनसे डरता भी था हालाँकि उसका उनसे कभी सामना नहीं हुआ था।

दूसरे शिकारियों ने तो उनको देखा भी था यहाँ तक कि उनकी तो जंगल की माँ इयाबोम्बा[117] से मुलाकात भी हुई थी।

उनका कहना था कि इयाबोम्बा 10 आदमियों के बराबर बड़ी है और उसके शरीर पर बहुत सारे भूखे मुँह लगे हुए हैं।

जब ओजो का कैम्प लग गया तो वह उसमें अन्दर आराम करने के लिये लेट गया। वह आराम करने के लिये लेट तो गया पर कोई उसको देख रहा था यह ख्याल अभी भी उसके दिमाग से निकला नहीं था।

लेटने के बाद उसको लगा कि कोई चीज़ उसके पास आ रही थी। वह उसको देखने के लिये उठ कर खड़ा हो गया कि इतने में उसने देखा कि जंगल की माँ इयाबोम्बा उसके सामने खड़ी है।

वह उसको देख कर इतना डर गया कि उससे भागा भी नहीं जा सका। वह तो बस जहाँ था वहीं का वहीं खड़ा रह गया।

अचानक इयाबोम्बा बोली — "शिकारी, डर नहीं। मुझे मालूम है कि तू यहाँ क्यों आया है। अगर तू मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा तो मैं भी तुझे नहीं खाऊँगी।"

और जैसे वह अचानक आयी थी वैसे ही अचानक वह चली भी गयी।

[117] Iyabomba – the mother of Forest

ओजो का शिकार करने का समय आ गया था पर वह सोच रहा था कि क्या इयाबोम्बा के वायदे पर भरोसा किया जा सकता है?

वह सारा दिन शिकार करता रहा और जब वह शाम को शिकार करके अपने कैम्प लौटा तो जंगल की माँ का डर उसके दिमाग से निकल चुका था।

रात को उसने अपना लाया माँस काटा और उसे भूनने के लिये आग जलायी। माँस भूना, खाना पकाया, खाना खाया और सो गया।

अगले दिन वह फिर शिकार पर निकल गया और जब वह शिकार ले कर फिर कैम्प लौटा तो उसे लगा कि कोई उसके पीछे उसके कैम्प में आया था।

उसे वहाँ इयाबोम्बा के बड़े बड़े पैरों के निशान पहचानने में देर नहीं लगी। जब वह अपनी झोंपड़ी के अन्दर घुसा तो उसने देखा कि उसका तो कल का भुना हुआ माँस भी गायब था।

ओजो ने सोचा कोई बात नहीं शायद अब जंगल की माँ सन्तुष्ट हो गयी होगी इसलिये उसने आग जला कर उस दिन का लाया माँस भूनना शुरू कर दिया।

पर इयाबोम्बा अभी भी सन्तुष्ट नहीं हुई थी क्योंकि ओजो जब भी शिकार करके कैम्प वापस लौटता तो अपना पहले दिन का लाया हुआ माँस गायब पाता।

उसको यह भी डर था कि वह किससे पूछे कि इयाबोम्बा ऐसा क्यों करती थी वह रोज उसका माँस क्यों ले जाती थी। इयाबोम्बा से तो वह यह बात पूछ ही नहीं सकता था क्योंकि तब तो शायद वह उसी को खा जाती।

एक हफ्ता गुजर चुका था। ओजो रोज शिकार करता, रोज माँस भूनता पर उसके पास बचाया हुआ भुना हुआ माँस ज़रा सा भी नहीं था।

ओजो का गुस्सा इसलिये और भी ज़्यादा बढ़ रहा था क्योंकि इतने ज़्यादा शिकार उसको पहले कभी किसी और जगह नहीं मिले थे। पर इस तरीके से तो अगर वह वहाँ पर एक साल भी और रहता तो भी शायद वह कुछ नहीं बचा पाता।

एक दिन ओजो के सब्र का बाँध टूट गया और उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। इस गुस्से ने उसका डर दूर कर दिया और उस दिन वह इयाबोम्बा का अपनी झोंपड़ी में ही बैठ कर इन्तजार करने लगा पर उस दिन वह वहाँ आयी ही नहीं।

अन्त में उसने अपना सामान बाँधा और वापस जाने लगा। जाते जाते वह चिल्लाया – "तुमने मेरे मारे शिकार का माँस क्यों खाया? क्या तुम्हारे जंगल में जो भी शिकारी आता है तुम हर उस शिकारी का माँस चुरा लेती हो?"

उसका इतना बोलना था कि इयाबोम्बा अपने सारे मुँह खोले हुए जंगल में भयानक आवाज करती हुई ओजो के सामने आ खड़ी हुई जैसे कि वह उसको खा ही जायेगी।

ओजो वहाँ से भाग खड़ा हुआ। इयाबोम्बा उसको पीछे से बुला रही थी परन्तु ओजो तो बस भागा ही जा रहा था।

पर भागने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि जंगल की माँ बहुत बड़ी थी और वह पल भर में ही ओजो के पास आ गयी। उसको पास आया देख कर ओजो एक पेड़ पर चढ़ गया।

आश्चर्य की बात कि वह पेड़ पर नहीं चढ़ सकती थी इसलिये वह उस पेड़ के नीचे ही खड़ी हो गयी जिस पेड़ पर ओजो बैठा था और उसने नीचे से पेड़ का तना काटना शुरू कर दिया।

यह देख कर ओजो बहुत डर गया कि जब पेड़ कट जायेगा तब उसका क्या होगा। ओजो को तब अपनी बाँसुरी याद आयी और उसने अपनी बाँसुरी बजानी शुरू कर दी।

बाँसुरी की आवाज उसके कुत्तों के कानों में पड़ी। सुनते ही उसके घर में उसके तीनों कुत्ते भौंकने लगे। ओजो की पत्नी उनकी रस्सी खोलने गयी तो उसके रस्सी खोलने से पहले ही उन कुत्तों ने रस्सी तोड़ ली और वहाँ से भाग लिये।

इधर इयाबोम्बा जल्दी जल्दी पेड़ का तना काट रही थी। ओजो ने कुछ पल तो इन्तजार किया पर उसने देखा कि पेड़ तो बस गिरने ही वाला था।

उसने अपनी जेब से एक चमड़े का बटुआ निकाला और उसमें रखा जादुई पाउडर पेड़ पर डाल दिया इससे पेड़ फिर से साबुत हो गया।

इयाबोम्बा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह पेड़ साबुत कैसे हो गया पर फिर भी उसने फिर से उस तने को काटना शुरू कर दिया।

पर जब भी पेड़ गिरने को होता तो ओजो उस पर थोड़ा सा जादुई पाउडर डाल देता और वह पेड़ फिर से साबुत हो जाता।

इस तरह पेड़ को काटते और साबुत करते करते काफी देर हो गयी। ओजो का पाउडर भी खत्म हो गया था और अब पेड़ फिर से गिरने वाला था। वह बहुत परेशान था कि अब क्या होगा था कि तभी उसने देखा कि उसके तीनों कुत्ते भागे चले आ रहे हैं।

देखते देखते वे तीनों इयाबोम्बा पर टूट पड़े और थोड़ी ही देर में उन्होंने इयाबोम्बा को काम तमाम कर दिया और उसका काफी सारा माँस खा लिया।

ओजो पेड़ से नीचे उतर आया और अपने सामान और कुत्तों के साथ अपने घर वापस आने लगा कि तभी उसने देखा कि उसके सामने एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी है।

वह बोली — "मुझे इयाबोम्बा ने कैदी बना कर रखा हुआ था अब जब तुमने उसे मार दिया है तो मैं आजाद हो गयी हूँ। क्या तुम मुझे अपने घर ले चलोगे ओजो और मुझे अपनी पत्नी बनाओगे?"

ओजो को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह लड़की उसका नाम कैसे जानती थी। फिर भी वह उसको अपनी पत्नी बना कर अपने घर ले आया।

उसकी पहली पत्नी उन सबको देख कर बहुत खुश हुई और यह जान कर भी कि जंगल की माँ इयाबोम्बा मर चुकी है और उसके पति ने इस लड़की को उसके चंगुल से बचा लिया गया है।

उसने उन सबका स्वागत किया और उस लड़की को घर में ठहरने की जगह दी।

पर उस रात को उस घर में एक अजीब घटना हुई। ओजो की दूसरी पत्नी उठी और एक बहुत बड़ी औरत के रूप में बदलने लगी जिसके बहुत सारे मुँह थे।

असल में यह कोई कैदी लड़की नहीं थी बल्कि यह इयाबोम्बा की बहिन थी और उसकी हत्या का बदला लेने के लिये ओजो की पत्नी बन कर आयी थी। पर तीनों कुत्तों ने उसको भी खा लिया।

ओजो अब जब उस जंगल में जाता था तो उसको वहाँ कोई तंग नहीं करता था। वह वहाँ आराम से शिकार करके घर लाता था।

उसने फिर कभी दूसरी शादी भी नहीं की।



31 ओलोबुन की भेंट[118]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक मेंढक के पास एक जू जू[119] था। एक दिन वह बाजार गया और एक पेड़ के पीछे छिप कर गाने लगा

ओ सुन्दर फल तुम्हारी जगह तो खेत में है परन्तु इस बाजार में तुमको लोग खाते हैं
मैं अपने जू जू के साथ यहाँ आया हूँ इससे सारे फल बेचने वाले यहाँ से भाग जायेंगे
और बस मैं फिर सारे फल खा जाऊँगा

गीत खत्म होते ही सारे फल बेचने वाले बाजार से भाग गये और मेंढक ने खूब सारे फल खूब जी भर कर खाये और फिर वहाँ से चला गया। ऐसा उसने कई बार किया। बाजार के लोग इस घटना से बहुत परेशान थे।

उन्होंने मेंढक के खिलाफ कई चालें खेलीं पर कोई भी कामयाब नहीं हुई। कई लड़ने वाले भेजे पर वे भी उसका कुछ न बिगाड़ सके। कई शिकारी भी भेजे पर वे भी उसको न पकड़ सके। जू जू भी आजमाया पर मेंढक का जू जू उनके जू जू से ज़्यादा ताकतवर था। अब वे क्या करें?

सभी बहुत दुखी थे। तभी शहर में एक बूढ़ा आदमी आया जिसने दावा किया कि मैं पकड़ूँगा उस गाने वाले मेंढक को।

---

118 Olobun's Sacrifice (Tale No 31) – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

119 Ju Ju is like magic or Black magic. It is like Jaadoo Tonaa of India wich is done to do some work in Nigeria. It may be for good or for bad.



उसने एक मूर्ति बनायी जिसके दोनों हाथों में उसने एक घड़ा पकड़ा दिया और उस घड़े में बहुत सारी मूँगफलियाँ भर दीं। वह मूर्ति उसने बीच बाजार में रख दी। फिर उसने वह पूरी मूर्ति, घड़ा और मूँगफली सभी कुछ गोंद से लेप दिया।

अगली बार जब मेंढक ने गीत गाया तो पहले की तरह से सभी फल बेचने वाले वहाँ से भाग गये। जब मेंढक अकेला रह गया तो वह पेड़ के पीछे से बाहर निकल आया। आज उसने बाजार में एक नयी चीज़ देखी वह थी एक मूर्ति।

वह मूर्ति उसको बहुत अच्छी लगी। वह उसके पास गया और मजाक में हँसी में बोला — "नमस्कार।"

अब वह तो मूर्ति थी वह क्या जवाब देती सो जब वह कुछ नहीं बोली तो वह फिर बोला — "क्या तुम बोल नहीं सकते?"

तभी उसको उस मूर्ति के हाथ में एक घड़ा दिखायी दे गया। उसने सोचा इसके हाथों में जो यह घड़ा है उसमें क्या है। उसने अपनी आगे वाली टाँगें उठायीं और घड़े पर रख दीं और घड़े में झाँकने लगा।

इतने में उसे लगा कि उसके आगे वाले पैर तो उस घड़े पर चिपक गये हैं। उसने उनको वहाँ से छुड़ाने की बहुत कोशिश की पर सब बेकार। वह किसी तरह भी उनको वहाँ से छुड़ा नहीं सका।

अपने आगे वाले पैरों को छुड़ाने के लिये उसने अपने पीछे वाले पैर इस्तेमाल किये तो उसके पीछे वाले पैर भी चिपक गये।

बाजार वाले लोग वहॉ से ज़्यादा दूर नहीं गये थे सो जैसे ही उन्होंने देखा कि मेंढक के चारों पैर उस मूर्ति से चिपक गये तो वे भी वहॉ आ गये और उन्होंने उस मेंढक को वहीं मार डाला।

अब उस बूढ़े आदमी ने सलाह दी कि इस मरे हुए मेंढक के मॉस को ओलोबुन[120] को भेंट कर दिया जाये।



सो उसका मॉस और हड्डियॉ सब एक बर्तन में रख दी गयीं। बूढ़े आदमी ने फिर एक रस बनाया जो उसके शरीर पर डाला गया। इसके बाद एक गिरगिट[121] को उस बरतन को अपने सिर पर ओलोबुन के पास ले जाने के लिये कहा।

इस तरह बाजार वालों को तो आराम हो गया पर बेचारे गिरगिट का बुरा समय तो अब शुरू हुआ।

जब वह गिरगिट मेंढक के मॉस और हड्डियों का वह घड़ा अपने सिर पर रख कर ओलोबुन के पास ले जा रहा था तो उसमें से थोड़ा सा रस जो उस बूढ़े आदमी ने मेंढक के शरीर पर डाला था नीचे टपक गया और उसके मुँह तक आ गया। उसने उसे चाटा तो वह उसे शहद जैसा मीठा लगा।

---

[120] Olobun – a Nigerian god

[121] Translated for the word “Chameleon”. See its picture above.

उसने तुरन्त ही वह घड़ा नीचे रख दिया और उसमें से मेंढक की हड्डियों को उस रस में डुबो डुबो कर खाने लगा।

लेकिन वह रस मीठा होने के साथ साथ चिकना भी था सो जैसे ही उसने हड्डी उस रस में भिगो कर खायी वह हड्डी उसके हाथ से फिसल कर उसके गले में अटक गयी। गिरगिट ने उसको निकालने की बहुत कोशिश की परन्तु वह हड्डी उसके गले से निकली ही नहीं।

आज भी वह हड्डी उसके गले में वहीं अटकी हुई है। न तो वह उसे निगल ही सका और न ही वह उसे उगल ही सका।

इसी लिये बच्चों तुम गिरगिटों को अपना सिर इधर उधर हिलाते देखते होगे क्योंकि वे उस हड्डी को निगलने या उगलने की कोशिश करते रहते हैं पर वह है कि न तो वह अन्दर जाती है और न ही वह बाहर आती है।

ओलोबुन ने भी उसको अपनी भेंट खाने के लिये कभी माफ नहीं किया।



Classic Books of African Folktales in Hindi
Translated by Sushma Gupta

1901	**Zanzibar Tales.**
No 1	by George W Bateman. 10 tales. The 1st African Folktale book.
1910	**Folktales From Southern Nigeria.**
No 15	By Elphinstone Dayrell. London: Longman Green & Co. 40 tales.
1917	**West African Folk-Tales**
No 20	By William H Barker and Cecilia Sinclair. Lagos: Bookshop. 35 tales.
1947	**The Cow Tail Switch and Other West African Stories.**
No 14	By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt. 143 p.
1962	**Fourteen Hundred Cowries and Other stories.**
No 8	By Abayomi Fuja. Ibadan: OUP. 31 tales
1998	**African Folktales.**
No 12	By Alessandro Ceni. 18 tales.
2001	**Orphan Girl and Other Stories.**
No 13	By Buchi Offodile. 41 tales
2002	**Nelson Mandela's Favorite African Tales**.
No 7	ed Nelson Mandela. 32 tales

List of stories of all these books is available at :
http://sushmajee.com/folktales/books-Old/index-old-books.htm

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Jun, 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियाँ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title “The Enchanted Parrot”.
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियाँ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेज़ी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022